सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 12, नई दिल्ली । रविवार, 23 मार्च 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

03 जस्टिस यशवंत वर्मा मामले में CJI ने किया कमेटी का गठन
06 इंसानियत की जगह
08 कटक में नए हवाई अड्डे पर चर्चा , कटक चौद्वार लोगो की उमीद जगी

दिल्ली एनसीआर में ई-रिक्शा सुविधा या मुसीबत?
दो लाख से अधिक अवैध ई रिक्शा, क्या होंगे बंद?

संजय बाटला

दिल्ली में अवैध ई-रिक्शा की संख्या बढ़ने से ट्रैफिक जाम और दुर्घटनाएं हो रही हैं। दिल्ली में करीब डेढ़ लाख ई-रिक्शा पंजीकृत हैं जबकि अनुमान है कि सड़कों पर दो लाख से ज्यादा अवैध ई-रिक्शा दौड़ रहे हैं। इन पर लगाम लगाने के लिए दिल्ली की 236 सड़कों पर इनके चलने पर रोक लगाई गई थी लेकिन ये प्रतिबंधित सड़कों पर भी बेखौफ दौड़ रहे हैं।

नईदिल्ली। राजधानी के कोने-कोने में कनेक्टिविटी को सुगम बनाने के उद्देश्य से 2014 में ई-रिक्शा की शुरुआत की गई थी। शुरुआत में दूरदराज के इलाकों में लोगों को इससे काफी सुविधा मिली। लेकिन पिछले 11 सालों में ई-रिक्शा मुसीबत बन गए हैं।

दिल्ली की सड़कों को किया संकरा

इन्होंने दिल्ली की कई सड़कों को संकरा कर दिया है। कुछ चौराहे तो इनकी वजह से ही जाम रहते हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि राजधानी में पंजीकृत से ज्यादा अवैध ई-रिक्शा चल रहे हैं। दिल्ली में करीब डेढ़ लाख ई-रिक्शा पंजीकृत हैं। जबकि अनुमान है कि सड़कों पर दो लाख से ज्यादा अवैध ई-रिक्शा दौड़ रहे हैं।

हाल ही में संसद में सरकार के जवाब में भी यह बात सामने आई है कि देश में वैध से ज्यादा अवैध ई-रिक्शा चल रहे हैं।

दिल्ली में ई-रिक्शा न केवल ट्रैफिक जाम का कारण बन रहे हैं, बल्कि दुर्घटनाएं भी कर रहे हैं। सड़कों के बीचों-बीच बेतरतीब ढंग से दौड़ रहे ई-रिक्शा दूसरे चालकों की जान जोखिम में डाल रहे हैं। ई-रिक्शा पर लगाम लगाने के लिए दिल्ली की 236 सड़कों पर इनके चलने पर रोक लगाई गई थी। लेकिन ये प्रतिबंधित सड़कों पर भी बेखौफ दौड़ रहे हैं।

सुबह से लेकर रात तक मेट्रो स्टेशनों के पास इनकी भीड़ जमा रहती है। जानकारों का कहना है कि इन पर निगरानी रखने के लिए कोई नियामक संस्था नहीं है। इस वजह से इन पर कोई नियंत्रण नहीं है।

अवैध ई-रिक्शा के तीन तरीके

ई-रिक्शा के रजिस्ट्रेशन के साथ ही चालक का कमर्शियल लाइसेंस भी बनता है। लेकिन बहुत कम लोग इसे बनवा रहे हैं। ई-रिक्शा निर्माण से जुड़े दिनेश गोयल का कहना है कि राजधानी में तीन तरह के अवैध ई-रिक्शा चल रहे हैं। पहला, पैडल रिक्शा में बैटरी लगाकर लोग ई-रिक्शा बना रहे हैं।

दूसरे वे हैं जो अनाधिकृत एजेंसियों द्वारा बनाए जा रहे हैं। इनका रजिस्ट्रेशन नहीं होता। इसके अलावा तीसरे वे हैं जो बिना नंबर प्लेट और लाइसेंसधारी चालक के चल रहे हैं। उनका मानना है कि वैध ई-रिक्शा चले तो लोगों को सुविधा मिलेगी।

अवैध ई-रिक्शा के कारण सड़कों पर दिक्कतें देखने को मिलती हैं। वैध से ज्यादा संख्या में अवैध ई-रिक्शा के सड़कों पर दौड़ने से राजस्व का भी नुकसान हो रहा है। रजिस्ट्रेशन कराने पर सरकार को राजस्व मिलता है।

एक साल में 2,78,000 से ज्यादा चालान काटे

दिल्ली ट्रैफिक पुलिस के मुताबिक, पिछले एक साल में नियमों का उल्लंघन करने पर ई-रिक्शा के कुल 2,78,090 चालान काटे गए। इनमें से सबसे ज़्यादा चालान 1,56,864 गलत पार्किंग के लिए काटे गए। इस साल भी 20 मार्च तक 64,852 चालान काटे जा चुके हैं।

दो साल में पांच हजार ई-रिक्शा जब्त

परिवहन विभाग के सूत्रों ने बताया कि पिछले दो साल में करीब पांच हजार ई-रिक्शा जब्त किए गए हैं। ये ई-रिक्शा अवैध रूप से चलते पाए गए थे। पिछले साल उपराज्यपाल वीके सक्सेना के आदेश पर कार्रवाई तेज कर दी गई थी। बाद में चुनाव के कारण कार्रवाई थोड़ी ढीली पड़ गई। परिवहन विभाग इन्हें नियमित करने की योजना पर काम कर रहा है।

ई-रिक्शा दुर्घटनाएं

रेवाड़ी में एक साल में 47 दुर्घटनाएं हुईं। तीन लोगों की मौत हुई और 67 घायल हुए।

फरीदाबाद में 24 दुर्घटनाएं दर्ज की गईं। दो लोगों की मौत हुई और 23 घायल हुए।

दिल्ली में कहां-कहां लगता है जाम

दिल्ली के विभिन्न इलाकों जैसे उत्तम नगर क्रॉसिंग, तिलक नगर, पुराना पंख रोड, द्वारका मोड़, सागरपुर, पालम, मथुरा रोड, पटपड़गंज रोड, जाफराबाद रोड, सीलमपुर चौक, स्वामी दयानंद रोड, शाहदरा, वजीराबाद रोड, दरियागंज, चांदनी चौक, राजेंद्र नगर, आरके आश्रम आदि में ई-रिक्शा के कारण ट्रैफिक जाम रहता है।

शहर में यहां ई-रिक्शा के कारण लगता है जाम

गाजियाबाद-

लालकुआं, चौधरी मोड, राकेश मार्ग, मेरठ तिराहा, एनएच-9 क्रॉसिंग रिपब्लिक कट, विजयनगर बाईपास, तिगरी कट, बहरामपुर कट, शांतिनगर अंडरपास, प्रताप विहार, शास्त्रीनगर, मोहन नगर, वसुंधरा, इंदिरापुरम काला पत्थर रोड, इंदिरापुरम मंगल बाजार चौक।

गौतम बुद्ध नगर-

मॉडल टाउन, मामूरा, सेक्टर-59 मेट्रो स्टेशन, सेक्टर-51,52 मेट्रो स्टेशन, बॉटनिकल गार्डन, सेक्टर-18 मार्केट, सेक्टर-15, परीचौक, गौर चौक, सूरजपुर, कासना।

हापुड़-

मंडी गेट, पक्का बाग, अतरपुरा चौक, तहसील चौराहा, अंबेडकर तिराहा, एसएसवी के सामने, बुलंदशहर रोड, गढ़ रोड, रेलवे रोड, स्वर्ग आश्रम रोड, चंडी रोड, गोल मार्केट आदि क्षेत्र।

एनसीआर के अन्य शहरों में ई-रिक्शा की स्थिति

पंजीकृत	ई-रिक्शा	अवैध
गौतमबुद्धनगर	23,516	35,000
गाजियाबाद	16,567	10,245
हापुड	7,870	12,960
टेवाडी	2800	1,367
फ़रीदाबाद	3,000	2,200
गुरुग्राम	7047	2000
सोनीपत	2,900	1500

इन सड़कों पर ई-रिक्शा चलाना प्रतिबंधित

जिला	प्रतिबंधित सड़कें	जिला	प्रतिबंधित सड़कें
नई दिल्ली	77	उत्तर-पश्चिम	15
मध्य दिल्ली	19	उत्तर-पूर्व	11
दक्षिण दिल्ली	38	पूर्वी दिल्ली	11
दक्षिण-पूर्व	23	दक्षिण-पश्चिम	21
उत्तर दिल्ली	12	पश्चिम दिल्ली	9

अति विशेष सूचना

"परिवहन विशेष" हिन्दी दैनिक समाचार पत्र आर .एन .आई . द्वारा मान्यता प्राप्त करने के बाद से आपके द्वारा प्राप्त भरपूर सहयोग से मार्च में अपने 2 साल पूरे कर रहा है। इन दो सालों में समाचार पत्र को निष्पक्ष रूप से चलाने में आप सभी का भरपूर सहयोग रहा हैं जिसके लिए प्रशासनिक विभाग परिवहन विशेष आप सभी का दिल से आभार व्यक्त करता है और आशा करता है की भविष्य में भी आपका सहयोग हमारे साथ ऐसे ही बना रहेगा। इन दो सालों में समाचार पत्र को राष्ट्रीय स्तर पर सभी शहरों और जिलों तक पहुंचाने और वहां की सही और सच्ची खबरें हम तक पहुंचाने वाले रिपोर्टर्स का दिल से धन्यवाद।

आप सभी को यह जान कर खुशी होगी की "परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र" का द्वितीय वार्षिकी समारोह अप्रैल माह के अंतिम सप्ताह में सम्पन्न किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से सड़को को जाम और दुर्घटनाओं से मुक्त करवाने के साथ दिल्ली को प्रदूषण मुक्त राज्य का उद्देश्य रखा गया है। इस समारोह में निम्नलिखित मुद्दों पर वाद- विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा

1. लेन ड्राइविंग कितनी अनिवार्य?"
2. "सड़क दुर्घटना से कैसे हो सकता हैं बचाव ?"
3. "दिल्ली को कैसे प्रदूषण मुक्त राज्य बनाया जा सकता है?"

वाद- विवाद प्रतियोगिता में हिस्सेदारी लेने वाले वक्ताओं के वक्तव्य के साथ परामर्शदाताओं से चर्चा भी इस समारोह में रखी जा रही है। इसके साथ इस आयोजन में भारत देश में निर्मित ई वाहनो, वींएलटीडी संयंत्र, एवम् अन्य उपयोगी स्टाल भी सब को आकृषित करने के लिए उपलब्ध होंगे। इस समारोह में

1. सबसे अच्छा विचार / तर्क और समाधान प्रदान करने वाले वक्ता को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
2. परिवहन क्षेत्र में अच्छा कार्य करने वाले संगठनों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
3. सड़क सुरक्षा के प्रति कार्य करने वाले संगठनों के पदाधिकारियों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
4. परिवहन विशेषज्ञों को पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा,
5. समाचार पत्र से अलग अलग राज्यों से जुड़े एंकर, वीडियो ग्राफर, रिपोर्टर्स, लेखक, ज्योताचार्य, कवि एवम् सहायकों को सम्मानित किया जाएगा।

संजय कुमार बाटला, संपादक

बसों के प्रबंधन के लिए आधुनिक सुविधाओं और तकनीक से लैस होंगे दिल्ली के बस अड्डे, कश्मीरी गेट से शुरुआत

सॉफ्टवेयर आधारित तकनीक से बसों का प्रबंधन होगा। इसकी शुरुआत कश्मीरी गेट बस अड्डे से होगी। यहां पर स्वचालित बस-बे प्रबंधन प्रणाली लागू करने का काम शुरू कर दिया है। इसमें डिजिटल डिस्प्ले बोर्ड, एसएमएस सिस्टम और तेज बस संचलन शामिल है।

नईदिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी के बस अड्डों को अत्याधुनिक सुविधाओं से लैस किया जाएगा। सॉफ्टवेयर आधारित तकनीक से बसों का प्रबंधन होगा। इसकी शुरुआत कश्मीरी गेट बस अड्डे से होगी। यहां पर स्वचालित बस-बे प्रबंधन प्रणाली लागू करने का काम शुरू कर दिया है। इसमें डिजिटल डिस्प्ले बोर्ड, एसएमएस सिस्टम और तेज बस संचलन शामिल है।

नई प्रणाली का उद्देश्य ट्रैफिक की भीड़ को कम करना और परिचालन दक्षता में सुधार करना है। एक नया फास्टैग सिस्टम वाहन के प्रवेश और निकास को नियंत्रित करेगा। इस परियोजना को सार्वजनिक-निजी भागीदारी के रूप में विकसित किया जाएगा।

परिवहन विभाग के अधिकारियों ने बताया कि सॉफ्टवेयर आधारित प्रणाली प्रतीक्षारत बसों को स्वचालित रूप से बस-बे आवंटित करेगी। यदि बस अपने आवंटित हिस्से में अधिक समय तक रुकती हैं तो उस पर कार्रवाई के तौर पर जुर्माना वसूला जाएगा। साथ ही, एकीकृत यात्री सूचना प्रणाली भी होगी जो बसों की समयसारिणी, आगमन, देरी और बस ऑपरेटरों के विवरण के बारे में जानकारी देगी।

बस अड्डे पर जगह-जगह स्क्रीन लगाई जाएगी। इसमें बसों से जुड़ी जानकारी होगी। जिस तरह से एयरपोर्ट पर यात्रियों को उड़ानों के बारे में जानकारी दी जाती है, उसी तरह से बस अड्डे पर जानकारी दी जाएगी और उसे समय-समय पर अपडेट भी किया जाएगा।

फास्टैग प्रणाली का उपयोग किया जाएगा

परिवहन विभाग के अधिकारी ने बताया कि उन्नत तकनीकी प्रणाली को कई परिचालन चुनौतियों से निपटने के लिए डिजाइन किया गया है, जिसमें ट्रैफिक दबाव को कम करना और उपलब्ध स्थान का बेहतर उपयोग करना शामिल है। यह तकनीक यात्रियों को वास्तविक समय में अपडेट और जानकारी देगी।

इसके अलावा वाहन के प्रवेश और निकास को नियंत्रित करने के लिए फास्टैग प्रणाली का उपयोग किया जाएगा, जिससे टर्मिनल के माध्यम से सुचारू आवागमन सुनिश्चित होगा। व्यवस्था को लागू करने के लिए दिल्ली परिवहन अवसंरचना विकास निगम लिमिटेड ने तकनीक के डिजाइन, आपूर्ति, स्थापना और रखरखाव के लिए निविदा जारी की है। यह योजना काफी समय से लंबित थी। विधानसभा चुनाव के कारण इस पर काम नहीं हो सका। ऐसे में अब इसे जल्द लागू किया जाएगा।

2600 से अधिक बसों की होती है आवाजाही

कश्मीरी गेट बस अड्डे पर रोज 2,600 से अधिक बसों की आवाजाही होती है। इसमें 1,300 अंतरराज्यीय बसें, 1200 दिल्ली परिवहन निगम व क्लस्टर बसें और लगभग 100 निजी परमिट वाली बसें शामिल हैं। बस अड्डे के आसपास और अंदर अव्यवस्था के कारण अंतरराज्यीय बसों को वापस आने में 45-60 मिनट लगते हैं, जिससे भीड़भाड़ हो जाती है। बता दें कि उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने पिछले साल बस अड्डे का निरीक्षण किया था। उन्होंने पाया था कि अंतरराज्यीय बसों के टर्मिनल के अंदर स्टैंड से आने-जाने में लगने वाला समय 45 मिनट से लेकर एक घंटे तक का है।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)

TOLWA

website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com

रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण

रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

उम्र पूरी कर चुके वाहनों पर 1 अप्रैल से ईंधन भरवाने पर लगेगी रोक
80% से अधिक पेट्रोल पंपों पर डीरजिस्टर्ड वाहनों की पहचान करेंगे ये डिवाइस

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली सरकार 1 अप्रैल से ओवरएज पेट्रोल और डीजल वाहनों को ईंधन भरवाने पर रोक लगाने जा रही है। शहर के 80% से अधिक पेट्रोल पंपों पर ऐसे डिवाइस लगाए गए हैं जो डीरजिस्टर्ड वाहनों की पहचान करेंगे। इससे उन्हें ईंधन देने से रोका जा सकेगा। इस कदम का उद्देश्य प्रदूषण को कम करना और पर्यावरण को स्वच्छ रखना है।

नईदिल्ली। दिल्ली सरकार 1 अप्रैल से ओवरएज पेट्रोल और डीजल वाहनों को ईंधन भरवाने पर प्रतिबंध लगाने जा रही है। शहर के 80% से अधिक पेट्रोल पंपों पर ऐसे डिवाइस लगाए गए हैं, जो डीरजिस्टर्ड वाहनों की पहचान करेंगे। पेट्रोल पंपों पर ऑटोमैटिक नंबर प्लेट रिकग्निशन (ANPR) कैमरे लगाए गए हैं, जो ओवरएज और वैध प्रदूषण नियंत्रण प्रमाणपत्र (PUC) के बिना चल रहे वाहनों की पहचान करेंगे।

सख्त कार्रवाई का प्रावधान

अगर कोई नियम विरुद्ध वाहन ईंधन भरवाने आता है, तो सिस्टम उसे फ्लैग कर देगा और पंप कर्मी उसे ईंधन देने से मना कर देंगे। दिल्ली के पर्यावरण मंत्री मनजिंदर सिंह सिरसा ने बताया कि पंपों पर प्रदूषण निगरानी उपकरण भी लगाए जा रहे हैं।

डीरजिस्टर्ड वाहन जब्त होंगे

नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल के निर्देशों के अनुसार, पंजीकरण के बाद 10 साल से सड़क पर चल रहे डीजल वाहन और 15 साल से सड़क पर चल रहे पेट्रोल वाहन परिवहन विभाग के डेटाबेस से अपने आप ही डीरजिस्टर्ड हो जाते हैं।

अगर पुराने वाहन सार्वजनिक स्थानों या सड़क पर खड़े पाए जाते हैं, तो परिवहन विभाग उन्हें जब्त कर लेता है। अधिकारियों ने बताया कि दिल्ली सरकार ने ऐसे वाहनों को कबाड़ में बदलने के लिए उनके मालिकों को प्रोत्साहन देने वाली नीति भी शुरू की है।

स्क्रैपिंग के लिए प्रोत्साहन

सरकार ने ओवरएज वाहनों को स्क्रैप करने पर प्रोत्साहन नीति भी लागू की है। नए दिशानिर्देशों के अनुसार, जब्त वाहन तभी छोड़े जाएंगे जब मालिक उन्हें किसी निजी परिसर में पार्क करने या अन्य राज्य में पंजीकृत कराने के लिए सहमत होंगे।

"क्यों और कैसे होता है कन्यापूजन ?"

नवरात्र में कन्या पूजन का बड़ा महत्व है। इस दौरान कन्याओं को घर बुलाकर उनकी आवभगत की जाती है। दुर्गाष्टमी और नवमी के दिन इन कन्याओं को नौ देवी का रूप मानकर इनका स्वागत किया जाता है। माना जाता है कि कन्याओं का देवियों की तरह आदर सत्कार और भोज कराने दुर्गा प्रसन्न होती हैं और अपने भक्तों को सुख समृधि का वरदान देती हैं।

क्यों और कैसे किया जाता है कन्या पूजन? नौ कन्याओं को नौ देवियों के प्रतिबिंब के रूप में पूजने के बाद ही भक्त का नवरात्र व्रत पूरा होता है। अपने सामर्थ्य के अनुसार उन्हें भोग लगाकर दक्षिणा देने मात्र से ही मां दुर्गा प्रसन्न हो जाती हैं।

किस दिन करें कन्या पूजन

वैसे तो कई लोग सप्तमी से कन्या पूजन शुरू कर देते हैं लेकिन जो लोग पूरे नौ दिन का व्रत करते हैं वह तिथि के अनुसार नवमी और दशमी को कन्या पूजन करने के बाद ही प्रसाद ग्रहण करके व्रत खोलते हैं। शास्त्रों के अनुसार कन्या पूजन के लिए दुर्गाष्टमी के दिन को सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण और शुभ माना गया है।

कन्या पूजन की विधि

- कन्या भोज और पूजन के लिए कन्याओं को एक दिन पहले ही आमंत्रित कर दिया जाता है।
- मुख्य कन्या पूजन के दिन इधर-उधर से कन्याओं को पकड़ के लाना सही नहीं होता है।
- गृह प्रवेश पर कन्याओं का पूरे परिवार के साथ पुष्प वर्षा से स्वागत करें और नव दुर्गा के सभी नौ नामों के जयकारे लगाएं।
- अब इन कन्याओं को आरामदायक और स्वच्छ जगह बिठाकर सभी के पैरों को दूध से भरे थाल या थाली में रखकर अपने हाथों से उनके पैर धोने चाहिए और पैर छूकर आशीष लेना चाहिए।
- उसके बाद माथे पर अक्षत, फूल और कुंकुम लगाना चाहिए।
- फिर मां भगवती का ध्यान करके इन देवी रूपी कन्याओं को इच्छा अनुसार भोजन कराएं।
- भोजन के बाद कन्याओं को अपने सामर्थ्य के अनुसार दक्षिणा, उपहार दें और उनके पुनः पैर छूकर आशीष लें।

कन्या पूजन में कितनी हो कन्याओं की उम्र?

कन्याओं की आयु दो वर्ष से ऊपर तथा 10 वर्ष तक होनी चाहिए और इनकी संख्या कम से कम 9 तो होनी ही चाहिए और एक बालक भी होना चाहिए जिसे हनुमानजी का रूप माना जाता है। जिस प्रकार मां की पूजा भैरव के बिना पूर्ण नहीं होती , उसी तरह कन्या-पूजन के समय एक बालक को भी भोजन कराना बहुत जरूरी होता है। यदि 9 से ज्यादा कन्या भोज पर आ रही है तो कोई आपत्ति नहीं है।

आयु अनुसार कन्या रूप का पूजन

- नवरात्र में सभी तिथियों को एक-एक और अष्टमी या नवमी को नौ कन्याओं की पूजा होती है।
- दो वर्ष की कन्या (कुमारी) के पूजन से दुख और दरिद्रता मां दूर करती हैं।
- तीन वर्ष की कन्या त्रिमूर्ति रूप में मानी जाती है। त्रिमूर्ति कन्या के पूजन से धन-धान्य आता है और परिवार में सुख-समृद्धि आती है।
- चार वर्ष की कन्या को कल्याणी माना जाता है। इसकी पूजा से परिवार का कल्याण होता है।
- जबकि पांच वर्ष की कन्या रोहिणी कहलाती है। रोहिणी को पूजने से व्यक्ति रोगमुक्त हो जाता है।
- छह वर्ष की कन्या को कालिका रूप कहा गया है। कालिका रूप से विद्या, विजय, राजयोग की प्राप्ति होती है। सात वर्ष की कन्या का रूप चंडिका का है। चंडिका रूप का पूजन करने से ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है।
- आठ वर्ष की कन्या शाम्भवी कहलाती है। इसका पूजन करने से वाद-विवाद में विजय प्राप्त होती है।
- नौ वर्ष की कन्या दुर्गा कहलाती है। इसका पूजन करने से शत्रुओं का नाश होता है तथा असाध्य कार्यपूर्ण होते हैं।
- - दस वर्ष की कन्या सुभद्रा कहलाती है. सुभद्रा अपने भक्तों के सारे मनोरथ पूर्ण करती है।

नवरात्रों में भारत में कन्याओं को देवी तुल्य मानकर पूजा जाता है. पर कुछ लोग नवरात्रि के बाद यह सब भूल जाते हैं। बहूत जगह कन्याओं का शोषण होता है और उनका अपनाम किया जाता है। आज भी भारत में बहूत सारे गांवों में कन्या के जन्म पर दुःख मनाया जाता है। ऐसा क्यों? क्या आप ऐसा करके देवी मां के इन रूपों का अपमान नहीं कर रहे हैं। कन्याओं और महिलाओं के प्रति हमें अपनी सोच बदलनी पड़ेगी। देवी तुल्य कन्याओं का सम्मान करें। इनका आदर करना ईश्वर की पूजा करने जितना पुण्य देता है। शास्त्रों में भी लिखा है कि जिस घर में औरत का सम्मान किया जाता है वहां भगवान खुद वास करते हैं।

रहस्यों से भरे होते हैं मकर राशि के जातक

ज्योतिषाचार्य पं योगेश पौराणिक (इंजी)

उत्तराषाढ़ नक्षत्र से लेकर धनिष्ठा नक्षत्र के दूसरे चरण तक चंद्रमा का गोचर मकर राशि में माना गया है। मकर चर संज्ञक, स्त्री जाति वाली, पृथ्वी तत्व ,वात प्रकृति की, पिंगल वर्णवाली, रात्रि बली, वैश्य वर्ण वाली, दक्षिण दिशा की स्वामी मानी गई है।मकर से घुटनों का विचार किया जाता है।इस राशि के स्वामी ग्रह शनि है।

गुण और स्वभाव : मकर राशि के जातक लंबे, दुबले, अकड़े हुए शरीर वाले, बड़ा किंतु पतला सा चेहरा होता है। इनकी दृढ़ इच्छा शक्ति काफी मजबूत तथा यह काफी परिश्रमी होते हैं। ये अपना जीवन एक रहस्यम रूप में जीना पसंद करते हैं काम को होजाने से पूर्व इनकी बात किसी अन्य को पता चल पाना कठिन होता हैं। हालांकि ये काफी बातूनी, सचेत, दूरदर्शी, परस्थिति अनुसार समायोजन करने वाले होते हैं। कभी कभी ये आलोचक, कंजूस, रूढ़िवादी जान पड़ते हैं।

कैरियर : मकर राशि के जातक कुशल वास्तुकार, इंजीनियर, दांतो के डॉक्टर, कुटीर उद्योग, बिल्डर, बैंक, सिविल सेवक, जल से संबंधित कार्य वैज्ञानिक, जासूस, डिटेक्टिव, पुलिस, ध्यान योगी आदि में कैरियर बना कर सफलता प्राप्त कर सकते है।

रोग : मकर राशि के जातक को वात रोग, दाह, दाद, गठिया, हड्डी के रोग, दांत दर्द तथा साइटिका जैसे रोगों से जूझना पड़ सकता है।

भाग्यशाली दिन : मंगल, बुध और शुक्रवार

भाग्यशाली रंग : पीला, लाल और संतरी

भाग्यशाली अंक :6,8,9

शुभ रत्न : नीलम

उपाय : मकर राशि के लोगो को शनिवार का व्रत तथा भगवान शिव की उपासना करना अत्यंत लाभकारी होता है। प्रत्येक शनिवार को भगवान शिव पर काले तिल चढ़ाएं और कपूर से आरती करें।

स्त्री को क्यों नहीं समझ पाता है पुरुष ?

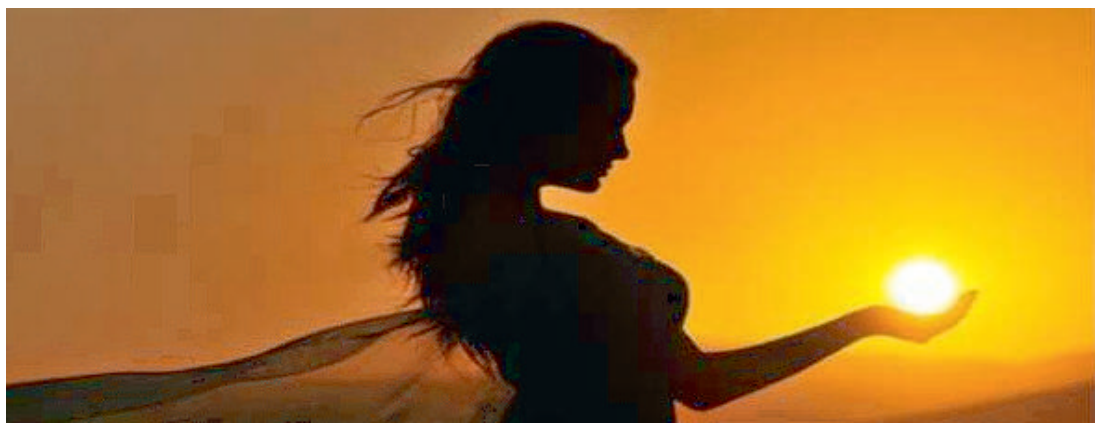

हजारों वर्ष पहले, जब वेदों का बोलबाला था, भारतीय समाज में स्त्री-पुरुष के बीच भेदभाव नहीं बरता जाता था। इसके फलवरूप समाज के सभी कार्यकलापों में दोनों की समान भागीदारी होती थी। पुराणों के अनुसार जनक की राजसभा में महापंडित याज्ञवल्क्य और मैत्रेयी नामक विदुषी के बीच अध्यात्म-विषय पर कई दिनों तक चले शास्त्रार्थ का उल्लेख है। याज्ञवल्क्य द्वारा उठाए गए दार्शनिक प्रश्नों का उत्तर देने में विदुषी मैत्रेयी समर्थ हुईं।

लेकिन जीवन के कुछ बारीक मसलों को लेकर मैत्रेयी द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देने में असमर्थ होकर याज्ञवल्क्य डगमगाए। अंत में उन्हें हार माननी पड़ी। स्पष्ट है कि नारियों की महिमा उस युग में उन्नत दशा में थी।

एक पुरुष की पहुंच के बाहर की बारीक संवेदनाओं का अनुभव एक स्त्री कर सकती है। पुरुष अपनी बुद्धि से संचालित है जबकि नारी अपनी आंतरिक संवेदनाओं से संचालित होती है।

बुद्धि बाहर से संचित की जाती है। बुद्धि जिस स्तर पर प्राप्त होती है, वह उसी स्तर पर काम करती है। लेकिन आंतरिक संवेदना बाहरी मैल से अछूती रहने के कारण पवित्र है, यही नहीं, बुद्धि की तुलना में श्रेष्ठ भी है। इसलिए नारी संवेदना के स्तर पर पुरुष की अपेक्षा उन्नत होती है।

फिर नारी जिस सम्मान की अधिकारिणी है, उसे वह आदर-सम्मान देने से समाज क्यों मुकरता है?

प्रत्येक जमाने में पुरुष शरीर के गठन की दृष्टि से नारी की तुलना में अधिक बलवान रहा है। किसी देश में बाहरी शक्तियों का आक्रमण होने पर विदेशी सेना वहां की नारियों को ही अपना पहला लक्ष्य बनाती है। ऐसे मौकों पर शारीरिक दृष्टि से अबला नारियों की रक्षा करने का दायित्व पुरुषों पर होता था। इससे फायदा उठाकर नारी को घर की चारदीवारी के अंदर बंद रखने की प्रथा तभी से शुरू हुई।

पुरुष को प्रमुखता देते हुए समाज के नियम बनाए गए। अधिकार का स्वाद चखने के बाद पुरुष-वर्ग नारी को बंद रखने की इस प्रथा को बदलने के लिए राजी नहीं हुआ। पुरुष-प्रधान समाज ने ऐसे विधि-विधान बनाए जिनके तहत नारी को उसके जन्म से पहले ही उसके न्यायोचित अधिकारों से वंचित रखा गया। भारत में ही नहीं, विश्व के प्रायः सभी देशों में पुरुषों को प्राथमिकता देने के जो कुचक्र रचे गए नारी इनकी शिकार बनी। कुछ एशियाई देशों में ऐसे कानून बनाए गए थे जिनके मुताबिक पुरुष का वध किये जाने पर अपराधी को मृत्युदंड देने का विधान था, लेकिन नारी की हत्या करने पर वह गुनाह नहीं माना जाता था।

स्त्री के खिलाफ पुरुषों ने नियम क्यों बनाए? इसलिए नहीं कि उसने स्त्री को अपनी तुलना में निम्न स्तर का समझ रखा था, बल्कि स्त्री उसकी तुलना में श्रेष्ठ है इस सत्य को समझने से उत्पन्न डर के कारण ही उसने ऐसे नियमों का निर्माण किया।

किसी बुद्धिमान पुरुष को और कोई नौकरी नहीं मिली, एक स्कूल में बच्चों को पढ़ाने का काम ही मिला। एक दिन उसने कक्षा में बालक-बालिकाओं से पूछा, 'पता है, पृथ्वी का वजन कितना है?' गृह-कार्य के रूप में यह प्रश्न पूछा गया था।

बच्चों ने माता-पिता से पूछ कर उन्हें तंग किया। कुछ अभिभावकों को उत्तर मालूम नहीं था। शेष माता-पिता ने अपने-अपने अंदाज से मोटामोटी कोई संख्या बताई।

अगले दिन कक्षा में छात्रों ने प्रश्न के अलग-अलग उत्तर दिए' सारे ही उत्तर गलत हैं' कहते हुए उस बुद्धिमान शिक्षक ने ब्लैक बोर्ड पर कई अंकों वाली एक संख्या लिखकर बताया, 'यही सही जवाब है।'

'सर, मेरा एक डाउट है'' एक बच्ची उठ खड़ी हुई। 'आपने जो संख्या बताई है, वह गणना पृथ्वी पर रहने वाले लोगों को मिलाकर है या उन्हें छोडक़र?'

बुद्धिमान शिक्षक निरुत्तर था, उसने सिर झुका लिया।

स्त्री को समझने में नाकाम रहा है पुरुष चाहे कितना बड़ा अक्लमंद हो, ऐसी कुछ बातें पृथ्वी पर मौजूद हैं जिन्हें समझना संभव नहीं है, ऐसी बातों में प्रमुख है, नारी।

विश्व के कई विषयों का वैज्ञानिक विश्लेषण करके समझने में पुरुष समर्थ था। लेकिन उसके लिए पास में ही रहने वाली नारी की बारीक संवेदनाओं को समझना संभव नहीं हुआ। जो चीज अबूझ होती है, उसके प्रति डर पैदा होना स्वाभाविक है। इसी भय के कारण पुरुष ने नारी को अपनी नजर ऊंची करने का भी अधिकार नहीं दिया, उसे दूसरे दर्जे का बनाए रखा। इसमें पुरुष का शारीरिक बल काम आया। फिर अपने बुद्धि-बल से उसने ऐसा कुचक्र रचा जिसके प्रभाव में पडक़र नारी को सदा पुरुष की छत्रछाया में रहना पड़ा।

नारियों ने साहस के साथ उठकर इस स्थिति को रोकने का कोई प्रयत्न किया? नहीं!

सक्रिय जीवन जीना बंद करके, पुरुष के साये में सुविधाजनक जीवन जीने के लिए वे भी तैयार हो गईं। किंतु यही सत्य है कि स्त्री के सामने पुरुष या पुरुष के सामने स्त्री निम्न नहीं है। स्त्री और पुरुष को अलग करके देखने की कोई जरूरत नहीं है। दोनों के बिना परिवार, समाज, दुनिया कुछ भी पूर्ण नहीं होगा।

भगत सिंह , राजगुरु , सुखदेव का शहीदी दिवस

स्वतंत्र भारत की नींव रखने में कई आंदोलनकारियों और क्रांतिकारियों की भूमिका अहम है। इन क्रांतिकारियों ने आजादी के लिए अपना पूरा जीवन न्योछावर कर दिया। कई बार जेल गए, अंग्रेजों की प्रताड़ना झेली लेकिन हार नहीं मानी और ब्रिटिश हुकुमत को देश से बाहर निकालने का प्रयास जारी रखा। इन्हीं क्रांतिकारियों में शहीद भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु का नाम इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज है। शहीद भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु युवाओं के लिए आदर्श और प्रेरणा है। उन्हें लाहौर षड़यंत्र के आरोप में फांसी की सजा सुनाई गई थी। 24 मार्च 1931 को भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु की फांसी दी जानी थी लेकिन अंग्रेजी हुकूमत उन्हें फांसी के फंदे पर लटकाने को लेकर भी खौफ में थी कि देशवासी उनके शहीद होने पर आक्रोशित हो जाएंगे। ऐसे में तीनों वीर सपूतों को एक रात पहले ही चुपके से फांसी दे दी गई। 23 मार्च 1931 को भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव हंसते हंसते फांसी के फंदे पर झूल गए। आज उनकी पुण्यतिथि है। इस दिन को भारत के वीर सपूतों के बलिदान की याद में मनाते हुए शहीद दिवस के तौर पर मनाते हैं। शहीद दिवस के मौके पर जानिए क्रांतिकारी शहीद भगत सिंह के क्रांतिकारी विचार, जो युवाओं में भर देंगे जोश।

माँ कामाख्या मंदिर का रहस्य

तिलिस्म की धरती. जादू- टोने की जननी मायावी चेहरे जहां समय चक्र के साथ पानी का रंग लाल हो जाता है पहाड़ का रंग नीला। विनाशकारी वेग से डराने वाली लोहित नदी का प्रचंड स्वरूप भी ब्रह्मपुत्र में समाहित होकर शांत पड़ जाता है नदियों के बीच इकलौते नद, ब्रह्मपुत्र का विस्तार यहां पहुंचकर अबूझ अनंत जैसा दिखता है।

जनश्रुतियां तो कहती हैं कि यहां की सिद्धियों में इंसान को जानवर में बदल देने की शक्ति है कुछ के लिए ये भय है और बहुतों के लिए यहां की तांत्रिक सिद्धियों के प्रभावी होने की आश्वस्ति। इसलिए तो देवी की देदीप्यमान अनुभूति के साथ श्रद्धालुओं की सैकड़ों पीढ़ियां गुजर गई। आस्था के कई कालखंड अतीत का हिस्सा बन गए। मगर विराट आस्था की नगरी कामरूप कामाख्या, तांत्रिक विद्या की सर्वोच्च सत्ता के रूप में आज भी प्रतिष्ठित है।

राजा दक्ष की बेटी सती ने पिता की मर्जी के खिलाफ़ शिव जी से शादी की थी। राजा दक्ष ने जब अपने यहां यज्ञ किया तो उसने शिव और सती को न्यौता नहीं दिया। इसके बावजूद सती अपने मायके गई जहां पिता दक्ष ने शिवजी के बारे में अपमानजनक शब्द कहे। उनका उपहास उड़ाया। जिससे आहत सती ने यज्ञ कुंड में कूदकर जान दे दी।

अग्निकुंड में कूदने से पहले सती के नेत्र लाल हो गए उनकी भौंहें तन गईमुखमंडल प्रलय के सूर्य की तरह तेजोद्दीप्त हो उठा.. असीम पीड़ा से तिलमिलाते हुए सती ने कहा-

`ओह ! मैं इन शब्दों को कैसे सुन पा रही हूं मुझे धिक्कार है। मेरे पिता दक्ष ने मेरे महादेव का अपमान किया देवताओं तुम्हें धिक्कार है तुम भी कैलाशपति के लिए ऐसे अपमानजनक शब्दों को कैसे सुन रहे हो जो मंगल के प्रतीक हैं जो क्षण मात्र में संपूर्ण सृष्टि को भस्म कर सकते हैं। वे मेरे स्वामी हैं। पृथ्वी सुनो आकाश सुनो देवताओं तुम भी सुनो ! मैं अब एक क्षण जीवित नहीं रहना चाहती मैं अग्नि प्रवेश लेती हूं।'

सती की अग्नि समाधि से शिव ने प्रचंड रूप धारण कर लिया देवी सती के जले हुए शरीर को लेकर कैलाशपति उन्मत की भांति सभी दिशाओं को थर्राने लगे प्राणी से लेकर देवता तक त्राहिमाम मांगने लगे भयानक संकट देखकर भगवान विष्णु, अपने चक्र से सती के अंगों को काटकर गिराने लगे जब सती के सारे अंग कटकर गिर गए तब भगवान शंकर संयत हुए।

सती की अग्नि कुंड में समा जाने के बाद, भगवान शंकर समाधि में चले गए इसी बीच तारकासुर के उत्पात से सृष्टि कांप उठी उसका वध करने के लिए देवताओं ने भगवान शंकर की समाधि तोड़ने का यत्न किया..। देवताओं ने कामदेव को समाधि भंग करने के लिए भेजा लेकिन समाधि टूटने से क्रोधित महादेव ने कामदेव को भस्म कर दिया।

जहां तक नज़रें जाती है, हर तरफ ब्रह्मपुत्र ही ब्रह्मपुत्र है ब्रह्मपुत्र की धाराओं से घिरा ये स्थान अत्यंत मनोरम है कामाख्या आने वालों का ये वैसे भी पसंदीदा जगह है. लेकिन कौमारी तीर्थ पर आए श्रद्धालुओं के लिए भी ये जगह ख़ास है. यहां बने शिव मंदिर का इतना महत्व है कि उमानंद के दर्शन के बिना कामाख्या के दर्शन का फल नहीं मिलता है।

ऐसा माना जाता है कि ब्रह्मपुत्र नदी के बीच बने इसी द्वीप पर समाधि में लीन भोले शंकर ने अपना तीसरा नेत्र खोला था समाधि भंग होने से क्रोधित भगवान शंकर ने कामदेव को यहीं भस्म कर दिया था इसलिए इस स्थान को भस्मांचल भी कहा जाता है कामदेव की पत्नी रति की प्रार्थना पर कैलाशपति ने कामदेव को पुनर्जीवन तो दे दिया लेकिन रूप और कांति नहीं आई।

हे महादेव ! हे कैलाशपति ! आपने मेरे स्वामी कामदेव को जीवन तो दे दिया लेकिन उनकी कांति कामदेव का उनका रूप नहीं रहा हे महादेव कृपा करो. तुम दयालु हो मेरे स्वामी का तेज प्रदान करो।

रति की प्रार्थना को महादेव ने स्वीकार कर लिया लेकिन उन्होंने देवी सती का मंदिर बनवाने की शर्त रखी कामदेव ने मंदिर का निर्माण करवाया और कामदेव को रूप सौंदर्य मिला इसलिए इस स्थान का नाम, कामरूप कामाख्या के रूप में प्रतिष्ठित हुआ।

जिन इक्यावन स्थानों पर सती के अंग गिरे थे, वे स्थान ही आज शक्ति के पीठ माने जाते हैं कामरूप कामाख्या में देवी का योनि भाग गिरा था जो देवी का जगत जननी स्वरूप है। नीलांचल पर्वत पर बने इस मंदिर को ऊपर से देखने पर ये शिवलिंग के आकार का दिखता है. 51 शक्तिपीठों में इसे सर्वोच्च माना जाता है। इसे कौमारी तीर्थ भी कहते हैं इस शक्तिपीठ को असीम ऊर्जा और अथाह शक्ति का स्रोत माना गया है इसलिए तंत्र साधना के लिए इसे ही सर्वाधिक उपयुक्त माना जाता है

मान्यता है कि जून के महीने में देवी रजस्वला होती हैं इस दौरान यहां हर साल अम्बूवाची योग पर्व मनाया जाता है, जो कुंभ की तरह विशाल होता है इस दौरान माता कामाख्या मंदिर के कपाट बंद रहते हैं। साधक और तांत्रिक इस आयोजन के दौरान विभिन्न कर्मकांडों के जरिए दिव्य अलौकिक शक्तियों का अर्जन करते हैं।

सूर्य, चंद्रमा, तारे। प्रकृति का ये प्रत्यक्ष दर्शन, क्या मानव के जीवन पर निर्णायक प्रभाव डालता है? ग्रह –नक्षत्रों का मानव जीवन पर सीधा असर पड़ता है? इसका अध्ययन ही ज्योतिष कहलाता है। भारत के प्राग ज्योतिषपुर यानी पूर्व के ज्योतिष केंद्र से बेहतर जगह भला कौन हो सकती है?

चित्राचल पहाड़ी के नवग्रह मंदिर का इतिहास काफी पुराना है। इसे ज्योतिषी विज्ञान का केंद्र माना जाता है। पूर्व मुखी मंदिर में पहुचने के लिए पूर्व से पश्चिम के लिए सीढ़ियां बनाई गई हैं प्रवेश द्वार के दाहिनी तरफ राहु और बाईं तरफ केतु की प्रतिमा है मंदिर की पहली दहलीज पर गणेश, शिव- पार्वती और श्रीकृष्ण की प्रतिमा है तीन दीपक जलाकर सबसे पहले इन तीन प्रतिमाओं की पूजा होती है।

दूसरी दहलीज के बाद एक अंधेरी गुफा दिखती है यहां दिखने वाले गोलाकार मंदिर के धरातल पर नौ शिवलिंग बने हुए हैं हर शिवलिंग की जललहरी का मुख विभिन्न दिशाओं की तरफ है एक मुख्य शिवलिंग बीच में बना हुआ है यहां पूजा या दर्शन के बाद बाहर जाते समय पीछे घूमकर देखना वर्जित है।

कहते हैं कि ऐसा करने से पूजा का फल नहीं मिलता यहां आने वाले भक्तों को प्रसाद के रूप में सभी ग्रहों से संबंधित अनाज को पानी में भिगोकर दिया जाता है।

शुक्रेश्वर मंदिर :- सती की शक्ति और शिव की साधना की इस धरती की अपनी ही माया है कहते हैं कि देवताओं से लेकर दैत्यों तक ने इस आदिशक्ति को स्वीकारा। दैत्यों के गुरू कहे जाने वाले शुक्राचार्य भी हस्तीगिरि पर शिव की आराधना करते थे। हाथी असम की पहचान हैं काजीरंगा इसी पहचान को पुख्ता करता है गुवाहाटी में हस्तीगिरि पर्वत का आकार भी हाथी की पीठ जैसा है दैत्यों के गुरु शुक्राचार्य मंदिर के शिवलिंग की दूर- दूर तक मान्यता है

भारत के विशाल शिवलिंगों में इसे गिना जाता है शुक्रेश्वर घाट दाह संस्कार के लिए भी जाना जाता है और यहां से सूर्यास्त के अद्भुत नज़ारे के लिए भी। जो शायद श्मशान के देवता शिव के साथ जीवन की संध्या का प्रतीक है।

जस्टिस यशवंत वर्मा मामले में CJI ने किया कमेटी का गठन, जांच पूरी होने तक नहीं कर सकेंगे काम

सुप्रीम कोर्ट के प्रधान न्यायाधीश संजीव खन्ना ने न्यायमूर्ति यशवंत वर्मा के मामले की जांच के लिए तीन हाई कोर्ट जजों की समिति गठित की है। जांच के दौरान दिल्ली हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश को न्यायमूर्ति वर्मा को न्यायिक कार्य न देने का आदेश दिया गया है। इससे पहले दिल्ली हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश ने एक जांच रिपोर्ट सुप्रीम कोर्ट को सौंपी थी।

नई दिल्ली। दिल्ली हाई कोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस यशवंत वर्मा के सरकारी आवास से बेहिसाब नकदी मिलने के आरोपों की जांच के लिए भारत के प्रधान न्यायाधीश संजीव खन्ना ने शनिवार को तीन सदस्यीय समिति का गठन कर दिया। सीजेआई ने दिल्ली हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश डीके उपाध्याय से रिपोर्ट मिलने के बाद आंतरिक जांच का आदेश दिया और उनसे जस्टिस वर्मा को कोई न्यायिक कार्य नहीं सौंपने के लिए कहा।

पंजाब एवं हरियाणा हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस शील नागू, हिमाचल प्रदेश हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस जीएस संधावालिया और कर्नाटक हाई कोर्ट की न्यायाधीश अनु शिवरामन को जांच समिति का सदस्य बनाया गया है। शीर्ष अदालत की ओर से जारी एक बयान में कहा गया है कि दिल्ली हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट, जस्टिस वर्मा का जवाब और अन्य दस्तावेज सुप्रीम कोर्ट की वेबसाइट पर अपलोड किए जा रहे हैं।

दिल्ली हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश ने पूरी की थी जांच

इससे पहले, दिल्ली हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश देवेंद्र कुमार उपाध्याय ने न्यायमूर्ति यशवंत वर्मा के सरकारी आवास से भारी मात्रा में बेहिसाब नकदी मिलने के मामले में अपनी प्रारंभिक जांच रिपोर्ट सुप्रीम कोर्ट के प्रधान न्यायाधीश संजीव खन्ना को सौंप दी थी।

जस्टिस उपाध्याय कोलेजियम की बैठक से पहले शुरू की थी जांच

शीर्ष अदालत ने कहा कि दिल्ली हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश ने आंतरिक जांच की है और जस्टिस वर्मा को इलाहाबाद हाई कोर्ट में स्थानांतरित करने का प्रस्ताव अलग है। बताया जाता है कि जस्टिस उपाध्याय ने 20 मार्च को कॉलेजियम की बैठक से पहले ही जांच शुरू कर दी थी। इसके बाद जस्टिस वर्मा के अलावा सुप्रीम कोर्ट के परामर्श देने वाले न्यायाधीशों और संबंधित उच्च न्यायालयों के मुख्य न्यायाधीशों को पत्र भेजे गए थे।

14 मार्च को लुटियंस दिल्ली स्थित आवास में लगी थी आग

बता दें, 14 मार्च की रात वर्मा के लुटियंस दिल्ली स्थित आवास पर आग लगने के बाद दमकल कर्मियों को नकदी मिली थी। घटना के समय वर्मा घर पर नहीं थे। मुख्य न्यायाधीश ने आंतरिक जांच कर साक्ष्य और जानकारी जुटाई। अब सुप्रीम कोर्ट कोलेजियम रिपोर्ट की जांच करेगा, जिसके बाद वर्मा के खिलाफ आगे की कार्रवाई पर निर्णय लिया जाएगा।

पीडब्ल्यूडी का नया हेल्पलाइन नंबर होगा जारी

सुषमा रानी

नई दिल्ली। दिल्ली सरकार के लोक निर्माण विभाग और जल मंत्री प्रवेश वर्मा ने शनिवार को अपने अधीन आने वाले इन दोनों विभागों के लिए नए हेल्पलाइन नंबर जारी किए। वर्मा ने इस बारे में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर जानकारी देते हुए एक पोस्ट शेयर की, जिसमें उन्होंने दस अंकों के पुराने हेल्पलाइन नंबर्स की जगह जारी हुए चार डिजिट के नए हेल्पलाइन नंबरों को बताया, साथ ही यह भी कहा कि पुरानी सरकार ने लंबा नंबर इसलिए ही लिया होगा, ताकि लोगों को याद ना रहे और शिकायतें भी ना आएं।

उन्होंने इस समस्या को समझते हुए केंद्र सरकार से चार अंकों का आसान नंबर आवंटित करने का अनुरोध किया था, जिसे अब मंजूरी मिल गई है.

मंत्री ने बताया कि नई हेल्पलाइन '1908' अब सक्रिय है, और कोई भी इस नंबर पर लोक निर्माण विभाग (पीडब्ल्यूडी) से जुड़ी समस्याएं दर्ज करा सकता है. इसी तरह, जल बोर्ड से जुड़ी शिकायतों के लिए '1916' नंबर जारी किया गया है.

उन्होंने साहिबी नदी (जिसे अब नजफगढ़ नाला कहा जाता है) में चल रहे सफाई अभियान का भी जायजा लिया. उन्होंने नाव से पूरे क्षेत्र का निरीक्षण किया और सफाई कार्य की प्रगति देखी. उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि सफाई कार्य में तेजी लाई जाए और यह सुनिश्चित किया जाए कि भविष्य में भी नदी में गंदगी न फैले.

प्रवेश वर्मा ने बताया कि सरकार का लक्ष्य है कि नजफगढ़ नाले को साफ और बहने वाली नदी के रूप में विकसित किया जाए. उन्होंने जनता से भी अपील की कि वे नाले में कचरा न डालें और शहर को स्वच्छ रखने में सहयोग करें.

उल्लेखनीय है कि मंत्री प्रवेश वर्मा इन दिनों विकास कार्य को लेकर काफी सजग हैं. वह काम को लेकर लापरवाही बिल्कुल बर्दाश्त नहीं कर रहे हैं.

इससे पहले शुक्रवार को प्रवेश वर्मा ने पटपड़गंज दौरे के दौरान लापरवाही पाए जाने पर पीडब्ल्यूडी के कार्यकारी इंजीनियर रामाशीष सिंह को निलंबित कर दिया. उन्होंने इलाके में विकास कार्यों में मिली खामियों को गंभीरता से लेते हुए यह फैसला लिया.

मंत्री ने कहा कि पिछले 10 साल में अधिकारियों की रुचबी मोटी हो गई हैर और अब उन्हें सड़कों पर दौड़ाया जा रहा है ताकि काम हो सके. उन्होंने साफ किया कि जो अधिकारी काम नहीं करेंगे, उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई होगी.

उन्होंने कहा कि दिल्ली में नालों की क्षमता बढ़ाने का काम किया जा रहा है, क्योंकि बीते 10 साल में इस ओर ध्यान नहीं दिया गया. पूरे सिस्टम की हालत खराब हो गई थी, लेकिन अब इसे पटरी पर लाने के लिए तेजी से काम किया जा रहा है.

दिल्ली में अवैध रूप से रह रहे बांग्लादेशियों पर बड़ी कार्रवाई, 18 घुसपैठियों को पकड़ा; 8 भारतीयों ने की थी मदद

दिल्ली पुलिस ने अवैध रूप से रह रहे बांग्लादेशियों के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की है। पुलिस ने 18 बांग्लादेशियों को पकड़ा है जिसमें से 8 को गिरफ्तार किया गया है। इनके पास से फर्जी दस्तावेज आधार कार्ड पैन कार्ड वोटर आईडी और भारतीय पासपोर्ट बरामद हुए हैं। पुलिस ने इनकी मदद करने वाले 8 भारतीय आरोपितों को भी गिरफ्तार किया है।

दक्षिणी दिल्ली। दक्षिणी जिला पुलिस ने अवैध रूप से दिल्ली में रह रहे बांग्लादेशियों पर बड़ी कार्रवाई की है। पुलिस ने जिले में अलग अलग जगह से 18 बांग्लादेशियों को पकड़ा है। इनमें से पुलिस ने आठ को गिरफ्तार किया है, जबकि छह को डीपोर्ट कर दिया। इसके अलावा चार से पूछताछ की जा रही है। साथ ही इनकी मदद करने वाले आठ भारतीय आरोपितों को भी दबोचा है।

पुलिस उपायुक्त अंकित चौहान ने बताया कि अवैध प्रवासियों से आधार कार्ड, पैन कार्ड, वोटर आइडी और भारतीय पासपोर्ट जब्त किए हैं। पुलिस ने आरोपितों के ठिकानों की तलाशी ली तो वहां से 23 वोटर कार्ड, 19 पैन कार्ड, 17 आधार कार्ड, सीपीयू, 11 जन्म प्रमाण पत्र और छह बलैंक वोटर आइडी कार्ड बरामद किए।

पुलिस ने आरोपितों के खिलाफ विदेशी अधिनियम सहित भारतीय दंड संहिता की विभिन्न धाराओं में केस दर्ज किया है। पुलिस ने इन्हें शरण देने और इनके फर्जी दस्तावेज बनवाने वाले आठ भारतीय नागरिकों पर भी केस दर्ज किया है। इन भारतीय आरोपितों ने इन्हें फर्जी दस्तावेजों पर नौकरी और किराए पर मकान भी दिलवाए।

पुलिस द्वारा गिरफ्तार किए गए आठ बांग्लादेशी

फर्जी दस्तावेज बनवाकर दिल्ली में रहने वाले बांग्लादेशियों में मोहम्मद ज्वेल इस्लाम, मोहम्मद आलमगीर, मोहम्मद लतीफ खान, मोहम्मद नदीम शेख, मोहम्मद मिजानुर रहमान, रबीउल, मोहम्मद रेजाउल और कमरुज्जमां शामिल हैं। इनमें मोहम्मद लतीफ कूड़ा बीनने का काम करता है। वह रिश्तेदारों के माध्यम से बांग्लादेश में पैसे भेजता है।

मोहम्मद मिजानुर रहमान स्क्रैप डीलर के रूप में काम करता है। रबीउल डिफेंस कॉलोनी के एक अस्पताल में अटेंडेंट के तौर पर काम करता है। कमरुज्जमां जोमैटो डिलीवरी ब्वाय के रूप में काम करता है। इस गिरोह का मास्टरमाइंड मोहम्मद मोइनुद्दीन दिल्ली में एक कंप्यूटर की दुकान चलाता था। ये आरोपित ही फर्जी आधार कार्ड, जन्म प्रमाण पत्र सहित प्रवासियों के अन्य दस्तावेज तैयार करता था। जबकि शाहीन नाम का आरोपित प्रवासियों को नौकरी दिलाता थ। अन्य आरोपित मनवर हुसैन और

निमाई करमाकर ने बांग्लादेश में अवैध रूप से मनी पैसे भेजे।

मोहम्मद रेजाउल 2007 में आया था भारत

पुलिस जांच में सामने आया कि बांग्लादेशी ज्वेल इस्लाम और मोहम्मद आलमगीर फर्जी आधार और पैन कार्ड के साथ पिछले कई साल से दिल्ली में रह रहे थे। मोहम्मद आलमगीर ने 2007 में दिल्ली आकर फर्जी दस्तावेज बनवाकर अपने बच्चों का दाखिला भारतीय स्कूलों में भी करा लिया।

इसी तरह आरोपित मोहम्मद रेजाउल वर्ष 2000 से दिल्ली में अवैध रूप से रह रहा है। उसने भारतीय पासपोर्ट भी बनवा लिया और पिछले दो साल में 22 बार भारत और बांग्लादेश की यात्रा कर चुका है। आरोपित वर्तमान में कैब ड्राइवर के रूप में काम कर रहा था। इसके अलावा कमरुज्जमां 2014 में फर्जी आईडी के साथ भारतीय डिलीवरी एजेंट के रूप में आया था।

मनी लॉन्ड्रिंग कर हवाला के जरिए भेजते हैं पैसा

ये लोग बांग्लादेशी में पैसा भेजने के लिए मनी लॉन्ड्रिंग कर रहे थे। पहले पैसे को भारतीय बैंक खातों में जमा करते थे। फिर यूपीआइ के माध्यम से सीमा एजेंटों को ट्रांसफर कर देते थे। फिर हवाला के जरिए पैसा प्रवासियों के बांग्लादेश में रहने वाले परिवारों को दिया जाता था। आरोपित दिल्ली में शरण लेने के लिए अधिकतर अपने पुराने रिश्तेदारों के पास पहुंचते थे। फिर यहां उन्हें कम वेतन की वजह से काम भी मिल जाता था।

नौकरी सहित अन्य सुविधा देने वाले भारतीय आरोपित

अवैध प्रवासियों को नौकरी सहित अन्य सुविधा मुहैया कराने वाले आठ भारतीयों को भी दबोचा है। इनमें बांग्लादेशियों के फर्जी दस्तावेज बनाने वाला निजामुद्दीन निवासी मोहम्मद मोइनुद्दीन, नौकरी दिलाने वाला मोहम्मद शाहीन, आधार कार्ड बनवाने वाला जुल्फिकार अंसारी, जावेद, फरमान खान, प्रवासियों के रिश्तेदारों को पैसा भेजने वाला मनवर हुसैन, निमाई कर्माकर और गौरंगा दत्ता शामिल है।

बच्चों का झगड़ा, दो पक्षों में पत्थरबाजी के बाद चाकूबाजी ने ले ली एक जान...

दिल्ली के बाहरी इलाके भारत नगर में एक मामूली विवाद ने खूनी संघर्ष का रूप ले लिया जिसमें एक व्यक्ति की मौत हो गई और कई घायल हो गए। पड़ोसी ने बाप-बेटे पर चाकू से हमला कर दिया जिससे पिता की मौत हो गई। पुलिस ने दोनों परिवारों के बीच समझौता कराया था लेकिन विवाद फिर से भड़क उठा। इस घटना में हिंदू-मुस्लिम एंगल से इनकार किया गया है।

दिल्ली। बाहरी दिल्ली के थाना क्षेत्र भारत नगर में मामूली विवाद में पड़ोसी ने बाप-बेटे पर चाकू से ताबड़तोड़ हमला कर दिया। पेट और शरीर के अन्य हिस्सों में चाकू लगने से पिता की मौत हो गई, जबकि बेटे की हालत गंभीर बनी हुई है। वहीं दूसरे पक्ष के दो लोगों की भी हालत गंभीर है। घटनास्थल पर भारी तनाव का माहौल है। मौके पर काफी संख्या में पुलिस बल तैनात है। मृतक की पहचान राधेश्याम के तौर पर हुई है। वहीं पड़ोसी की पहचान जमाल के तौर पर हुई है। राधेश्याम की पत्नी कमला ने बताया कि कई लड़के आज तड़के आए। पहले घर में पथराव किया। फिर उन्होंने मेरे पति को चाकू मार दिया। इसमें पति राधेश्याम की मौत हो गई।

पुलिस ने दोनों परिवार का कराया था समझौता

उन्होंने बताया कि शुक्रवार दोपहर में दो बच्चों के बीच झगड़ा हुआ था। इसको लेकर राधेश्याम और जमाल के बेटों के बीच लड़ाई हो गई। शिकायत पर पहुंची पुलिस ने दोनों परिवार का समझौता करा दिया था। फिर शाम 6 बजे राधेश्याम का छोटा बेटा इयूटी से आते ही जमाल की पत्नी मुन्नी के सिर पर हेलमेट से हमला कर दिया। इसके बाद दोनों पक्षों में पथराव शुरू हो गया।

राधेश्याम के सीने में चाकू मारकर हत्या: मुन्नी

इस दौरान राधेश्याम के दोनों बेटे ने चाकू से जमाल और उसके बेटे पर चाकू हमला कर दिया। राधेश्याम की पत्नी ने कहा कि इरशाद ने उनके पति राधेश्याम के सीने में चाकू मारकर हत्या कर दी। वहीं, इरशाद की मां मुन्नी ने बताया कि जब राधेश्याम के बेटे चाकूबाजी कर रहे थे तो राधेश्याम बचाने के लिए आया। तभी उनके बेटे से ही उनके सीने में गलती से चाकू लग गई।

23 मार्च शहीद दिवस पर विशेष लेख शीर्षक - देशभक्ति के विचारों के पुरोधा थे - भगतसिंह राजगुरु सुखदेव

हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

'युवा तरुणाई हमेशा से राष्ट्र को समर्पित रहतीं हैं बस उनकी स्मरण शक्ति को जागृत करने की आवश्यकता है। वीरों की भूमि जहां हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के सदस्यों ने भारत माता को बेड़ियों से मुक्त करने हेतु देश को अपना सब कुछ समर्पित कर दिया था। तन मन व धन आजादी की लड़ाई में लगाने वाले अंग्रेजों से लोहा लेने वाले क्रांतिकारी भगत सिंह, राजगुरु सुखदेव को पूरी दुनिया कभी भी भूल नहीं सकतीं हैं। युवा पीढ़ी आज उन्हें जरूर भूल रहीं हैं। पर भारत का इतिहास में आजादी की लड़ाई की बात जब जब उठेगी, तो इन साहसी बहादुर निडर देश भक्तों का नाम भी बड़े सम्मान से लिया जायेगा। पंच प्यारों व पांच नदियों के संगम की धरती गुरुओं के बलिदानी भूमि का मुख्य उद्देश्य अपने वतन की रक्षा करना है। ऐसे तो सभी राज्यों में क्रांतिकारीयो ने अपने अपने स्तर पर जागरूकता वैचारिक मंथन आज़ाद भारत के लिए किया। पंजाब की भूमि का बुलंद इरादों के कारण यहां के लोगों में वर्तमान में भी अपने परिवार के एक सदस्य सेना पुलिस व राष्ट्र सेवा को समर्पित है। अमर शहीद भगतसिंह राजगुरु सुखदेव ने आजादी की लड़ाई के दौरान जब जनरल डायर का जूल्म देखा। जब वैसाखी का मेला लगा था जब जलियांवाला बाग में उस नरसंहार को किया। उस जलियांवाला बाग हत्याकांड से बेकसूर लोगों पर उन्हें गोलियों से छलनी कर दिया। उस घटना को देख कर हिन्दुस्तान का नौजवान उठ खड़े हुए। उसी घटना ने देश को भगतसिंह राजगुरु सुखदेव दिये। लाला लाजपत राय पर हमले की चिंगारी उन बहादुर वीरों को देश भक्ति की और खींच लाई। भारत माता मानो उन युवकों को अपनी रक्षा के लिए बुला रही हो। तभी तो उन सभी वीर शहीदों ने अपनी जान की परवाह किए बिना अपना सब कुछ भारत माता के चरणों में समर्पित कर दिया। भगतसिंह हमेशा कहा करते थे वो मुझे मार सकतें हैं लेकिन मेरे विचारों को नहीं। इन आदर्शवादी विचारों के चलते ही वह हंसते हंसते फांसी पर चढ़ गये। 23 मार्च 1931 के दिन ही इन तीनों क्रांतिकारी स्वतंत्रता सेनानी को लाहोर में प्रडयत्र के आरोप में फांसी दी गई थी। इंकलाब जिंदाबाद के नारों के साथ यह तीनो वीर शहीद हुए। उन्होंने भारत के जनमानस को देशप्रेम से जोड़ा। देश भक्ति को समर्पित इनका जनजागरण जागृति बन गई। उन्होंने कहा की अंग्रेजी शासन से डरने की कोई जरूरत नहीं है। हम सभी मिलजुलकर एकजुटता से इन गौरों से लड़ें। तभी तो भगतसिंह ने कहा था मुझे गर्व है कि में एक क्रांतिकारी हूं बेड़ियों में जकड़कर नहीं मारूंगा क्रांति की ज्वाला बनकर मारूंगा। क्रांति की तलवार विचारों की समानता के साथ न्याय के लिए इन स्वतंत्रता सेनानीयों ने निडर होकर संघर्ष किया। तभी तो आज भी राष्ट्रवादी विचारधाराओं के इन देश भक्तों को हम बड़ी विनम्रता व सम्मान के साथ याद करते हैं। ऐसे देशभक्ति के पुरोधा थे यह तीनो अमर क्रांतिकारी भगत सिंह राजगुरु सुखदेव जिनकी दूरदर्शी सोच व सटीक दृष्टिकोण ने अंग्रेजी हुकूमत के छक्के छुड़ा दिए थे। आज इन की शहादत दिवस पर शत-शत नमन व भावभीनी श्रद्धांजलि। इंकलाब जिंदाबाद....।

कब रुकेगा यह शर्मसार करने वाला दौर?

[यौन हिंसा के विरुद्ध : शिक्षा, संस्कार और सशक्त कानून की पुकार]

यौन हिंसा एक ऐसा कोढ़ है जो मानवता के मस्तक पर स्याह कलंक बनकर मँडराता है। यह महज एक अपराध नहीं, बल्कि एक ऐसा गहरा घाव है जो समाज की संवेदनाओं को लहूलुहान करता है, संस्कृति की जड़ों को कुरेदता है और नैतिकता के पैरों तले जमीन खींच लेता है। इसकी पैठ इतनी गहरी है कि इसे उखाड़ फेंकना किसी एक कानून या सजा के बूते की बात नहीं। यह एक ऐसा तूफान है जिसके सामने खड़े होने के लिए समाज के हर कोने से जागृति की लहर उठनी होगी। हमें अपनी संस्कृति को नए सिरे से गढ़ना होगा, नजरिए को तपा हुआ सोना बनाना होगा और मानवता के प्रति एक ऐसी संवेदना जगानी होगी जो दिलों को झकझोर दे। हाँ, यह मुमकिन है, मगर इसके लिए एक ऐसी क्रांति चाहिए जो सिर्फ शब्दों तक सीमित न रहे—एक ऐसी आग जो मन के अंधेरों को जलाए, विचारों को पिघलाए और व्यवहार को नए सांचे में ढाले।

शिक्षा: सम्मान और समता का पहला पाठ

यौन हिंसा का अंत वहीं से शुरू होता है, जहाँ मन एक कोमल मिट्टी की तरह गढ़ा जा सकता है—बचपन की उस नन्हीं उम्र से। शिक्षा को किताबों की धूल भरी अलमारियों तक कैद नहीं रखा जा सकता; इसे एक तलवार बनाना होगा, जो अज्ञानता के बंधनों को काटे और संवेदना की रोशनी बिखेरे। स्कूलों की चारदीवारी में बच्चों को सिर्फ अक्षरों का पहाड़ न रटाया जाए, बल्कि सम्मान की गहराई, सहमति की ताकत और समानता का सबक सिखाया जाए। उन्हें यह एहसास दिलाया जाए कि हर इंसान की इज्जत एक अनमोल रत्न है, जिसे ठेस पहुँचाना किसी सभ्य समाज की कल्पना के परे है। लड़कियों को उनकी भीतर की आग का अहसास कराया जाए, जो दुनिया को रोशन कर सके, और लड़कों को वह कोमलता दी जाए, जो दूसरों के दर्द को समझे। यह शिक्षा कक्षा की स्लेट से आगे बढ़े, घर की दहलीज पर जन्म ले—जहाँ माँ-बाप अपने बच्चों के हाथ में नैतिकता का वह दीया थमाएँ, जो अंधेरे को चीरता हुआ उजाले की राह बनाए। जब नन्हे मन यह सीख लेंगे कि हर भावना की कद्र और हर सीमा का सम्मान ही इंसानियत की नींव है, तो यौन हिंसा जैसी कालिमा की जड़ें अपने आप काँपने लगेंगी।

कानून: न्याय की तेज धार

कानून वह आग बन जाए जो अपराधियों के मन में खौफ की लपटें भड़काए—एक ऐसा डर कि अपराध का खयाल भी उनके दिल को सौ बार कँपकँपा दे। इसके लिए कानून को सिर्फ सख्ती का लबादा नहीं ओढ़ाना होगा, बल्कि उसकी धार को इस कदर पैना करना होगा कि वह पल भर में न्याय का झंडा गाड़ दे। आज हाल यह है कि पीड़ित की पुकार अदालतों के गलियारों में सालों भटकती रहती है, और यह देरी अपराधियों के सीने में हिम्मत की हवा भर देती है। लिहाजा, न्याय का पहिया ऐसा चले कि वह तेज, पारदर्शी और अडिग हो। दुष्कर्मियों के लिए सजा ऐसी हो जो हड्डियाँ तक चटकाए, मगर उससे भी जरूरी है कि वह सजा फौरन अमल में आए—न कि कागजों में दफन हो जाए। जब समाज देखेगा कि अपराध की कीमत तुरंत और करारी चुकानी पड़ती है, तो यह हर सिर पर एक सबक लिख देगा। साथ ही, पुलिस और प्रशासन को संवेदना का कवच पहनाना होगा, ताकि पीड़ित की आवाज शिकायत के दहले पर काँपे नहीं, शर्माए नहीं।

संस्कृति का परिवर्तन: नैतिकता का नया आलोक

हमारी संस्कृति की गहरी परतों में कभी-कभी पुरुषवादी सोच और लैंगिक भेद की कड़वी जड़ें यौन हिंसा को चुपके से हवा देती रही हैं। इस कालिख को मिटाने के लिए हमें घर की चौखट से लेकर समाज के चौपाल तक नैतिकता का एक नया सूरज उगाना होगा। पुरुषों के मन में यह बात गूँजनी चाहिए कि असली मर्दानगी ताकत के जोर में नहीं, बल्कि दूसरों की हिफाजत और इज्जत में छिपी है। महिलाओं को महज एक वस्तु की नजर से नहीं, बल्कि बराबरी का हक रखने वाली हमसफर के रूप में देखने का नजरिया रचाना होगा। यह बदलाव कोई फूलों की सेज नहीं—यहाँ पीढ़ियों से जमी मान्यताओं के पत्थर तोड़ने पड़ेंगे, सोच के जंगल उजाड़ने होंगे। मगर अगर हम नन्हे कंधों पर यह संस्कार लाद दें कि हर आत्मा और देह एक अनमोल मंदिर है, तो यह बीज धीरे-धीरे समाज की नसों में रच-बस जाएगा।

तकनीक: क्रांति का नया मंच

आज का दौर डिजिटल क्रांति का सुनहरा काल है—एक ऐसा समय जहाँ सोशल मीडिया और इंटरनेट हमारे हाथों में ताकत का वह जादुई डंडा थमा रहे हैं, जो समाज को नींद से झकझोर सकता है। इन डिजिटल मंचों पर यौन हिंसा के खिलाफ आवाज़ें बुलंद हों—प्रेरणा की बयार बहें, जागरूकता की लहरें उठें और सकारात्मक किस्सों की गूँज हर कोने को छू ले। कल्पना करें—ऐसी ऐप्स जो खतरे के पल में महिलाओं की पुकार को तुरंत मदद तक पहुँचाएँ; डेटा की गहराई और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की चपलता से उन काले कोनों को उजागर करें जहाँ खतरा मँडराता है, और वहाँ सुरक्षा का पहरा बिठाएँ। ऑनलाइन उत्पीड़न और साइबर हिंसा की साँसें थामने के लिए नीतियाँ लोहे की तरह सख्त हों।

पुरुषों की भूमिका: ढाल से दीपक तक

यौन हिंसा के खिलाफ जंग में पुरुष सिर्फ कवच नहीं, बल्कि बदलाव की मशाल बनें—यह उनकी असली पुकार है। उन्हें न केवल सहयोद्धा की तरह कदम बढ़ाना होगा, बल्कि परिवर्तन का वह प्रखर संवाहक बनना होगा जो समाज के हर कोने को रोशन कर दे। पुरुषों के कंधों पर यह जिम्मा है कि वे हर गली, हर चौपाल तक यह पैगाम पहुँचाएँ—हिंसा मन की कायरता है, सम्मान ही असली शौर्य का प्रतीक।

एकता और संकल्प: अभिशाप को चूर करने की आग

यौन हिंसा का खात्मा किसी एक कंधे या एक झंडे के दम पर नहीं हो सकता—यह एक ऐसा युद्ध है जिसमें पूरे समाज को एक अटूट फौज बनकर उतरना होगा। सरकार की नीतियाँ, नागरिकों की हुंकार, शिक्षकों की सीख, कलाकारों की रचनाएँ, तकनीक के जादूगर—सबको कंधे से कंधा मिलाकर इस काले अभिशाप को रौंदने की कसम खानी होगी।

आज की हुंकार, कल का सुनहरा सवेरा

यौन हिंसा को रोकना एक लंबा सफर है, मगर यह कोई दूर का ख्वाब नहीं। शिक्षा की रोशनी, कानून की तलवार, संस्कृति का आलम, तकनीक की ताकत और एकता का जोश—ये पाँच पहाड़ हैं जो इस परिवर्तन की चट्टान खड़ी करेंगे। हर कदम हमें उस सुनहरे कल की दहलीज तक ले जाएगा, जहाँ डर की परछाइयाँ गायब होंगी और शोषण का नामोनिशान मिट जाएगा। यह कोई हवाई सपना नहीं, बल्कि एक ऐसा मंजिल है जिसे हम सबके हाथों की लकीरें मिलकर लिख सकती हैं।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

अपर पुलिस महानिदेशक बरेली जोन, बरेली द्वारा थाना बिनावर पर किया गया समाधान दिवस का आयोजन। जनसमस्याओं को सुनकर उनके गुणवत्तापूर्ण व त्वरित निस्तारण हेतु सम्बन्धित को निर्देशित किया गया।

परिवहन विशेष न्यूज

बिनावर। उत्तर प्रदेश शासन के निर्देशों के क्रम में दिन शनिवार को अपर पुलिस महानिदेशक महोदय बरेली जोन, बरेली रमित कुमार शर्मा महोदय एवं वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक बदायूं डॉ. बृजेश कुमार सिंह महोदय द्वारा थाना बिनावर पर समाधान दिवस का आयोजन किया गया। समाधान दिवस के दौरान एडीजी रमित कुमार शर्मा महोदय द्वारा जनता की जनसमस्याओं को ध्यानपूर्वक सुना गया तथा समस्याओं के त्वरित एवं गुणवत्तापूर्ण निस्तारण हेतु सम्बन्धित अधिकारी/कर्मचारीगण को मौके पर जाकर शिकायतों का शत प्रतिशत निस्तारण करने हेतु निर्देशित किया गया। महोदय द्वारा समस्त अधिकारी/कर्मचारीगण को निर्देशित किया गया कि समाधान दिवस में आईं सभी शिकायतों की मौके पर जाकर निष्पक्ष जाँच करें एवं समयावधि में गुणवत्तापूर्ण निस्तारण करें तथा महिला अपराध सम्बन्धी शिकायतों की जाँच प्राथमिकता के आधार पर की जाए। इस दौरान वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक बदायूं डॉ. बृजेश कुमार सिंह, सीओ सिटी बदायूं शक्ति सिंह, बिनावर एस. एच. ओ. अशोक कुमार कंबोज, नायब तहसीलदार बिनावर पूजा शर्मा सहित पुलिस, प्रशासनिक एवं राजस्व विभाग के अन्य अधिकारी/कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

आयकर निरीक्षक बने प्रशांत धनगर

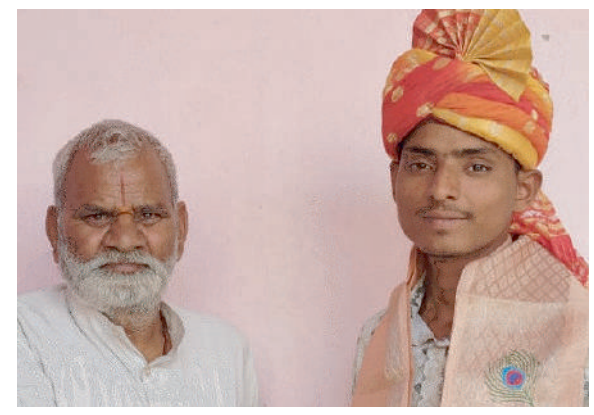

मथुरा। केंद्रीय कर्मचारी चयन आयोग की परीक्षा उत्तीर्ण कर छाता के प्रशांत धनगर बने इनकम टैक्स इंस्पेक्टर। केंद्रीय कर्मचारी चयन आयोग की सीजीएल परीक्षा उत्तीर्ण कर छाता के प्रशांत धनगर ने आयकर विभाग में इंस्पेक्टर के पद पर नियुक्त होकर अपने कस्बा एवं जिले का नाम रोशन किया है। इस उपलब्धि पर लोगों ने उनका जोरदार स्वागत किया और हर्ष व्यक्त किया।

छाता के हरनाथिया थोक निवासी चंद्रभान सिंह एडवोकेट के पुत्र प्रशांत पाल सिंह धनगर ने सीजीएल की परीक्षा में यह उपलब्धि हासिल की है। प्रशांत ने अपनी इस सफलता का श्रेय अपने माता-पिता को दिया है और कहा है कि यदि दृढ़ संकल्प लेकर लग्न के साथ मेहनत की जाए तो अभावों में भी लक्ष्य को हासिल किया जा सकता है। सच्चे मन और लगन से की गई मेहनत कभी बेकार नहीं जाती।

प्रशांत की इस सफलता पर धनगर समाज विकास समिति के वरिष्ठ उपाध्यक्ष इंजीनियर मेदाराम धनगर, छाता नगर पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि ठाकुर फाल्गुन जादौन, सामाजिक कार्यकर्ता चंद्र प्रकाश बृजवासी, पूर्व प्रधान टीकम सिंह विडावली, बाबा रामप्रसाद धनगर, नानक चंद धनगर, गिर्राज धनगर, शंकर बघेल, सुघड़ सिंह फौजी, मौहर पाल एडवोकेट, प्रहलाद चौधरी पूर्व अध्यक्ष छाता बार, शहीद मोहम्मद एडवोकेट, धर्मवीर एडवोकेट, प्रेमचंद धनगर एडवोकेट आदि ने हर्ष व्यक्त करते हुए बधाई दी है।

अंतरिक्ष में 8 दिन, पर लौटे 286 दिन बाद

सोचा था सफ़र होगा छोटा,
पर क़िस्मत ने लिखा कुछ और ही किस्सा।
सुनिता और बैरी चले थे आसमान,
पर लौटे 286 दिनों के बाद, जब बदला था पूरा जहान।

कोई ताज़ी हवा नहीं, कोई धरती का स्पर्श,
ना कोई स्वाद, ना घर की आहट भर।
बस एक अनजान सूनापन, असीम अंधकार,
हर पल सवाल – क्या लौटेंगे हम फिर से संसार?

वो चाहकर भी कुछ नहीं कर सकते थे,
ना वक़्त को रोक सकते थे, ना सफ़र बदल सकते थे।
सिर्फ़ धैर्य, सिर्फ़ सहने की शक्ति,
सिर्फ़ विश्वास – कि एक दिन लौटेंगे घर की बगिया में फिर से।

और वे लौटे
इतिहास रचकर, समय को हराकर,
संघर्ष को अपनाकर, जीवन को सँवारकर।

और हम?
बस थोड़ा ट्रैफिक, थोड़ी देरी, थोड़ा इंतज़ार,
तो क्यों इतना अधीर मन, क्यों इतनी तकरार?

ज़िन्दगी का खेल यही है प्यारे,
हर मोड़ पर मिलेंगे इम्तिहान हमारे।
पर जब अंतरिक्ष में फँसे वो हिम्मत दिखा सकते हैं,
तो हम ज़रा-सी रुकावट क्यों नहीं सह सकते हैं?

तो धैर्य रखो, विश्वास रखो,
हर मुश्किल को गले लगाओ,
वक़्त लगेगा, पर राह बनेगी,
हर अंधेरा भी एक दिन सवेरा लाएगा।

कम से कम हम. अंतरिक्ष में तो नहीं फँसे!

लुप्त होती हरियाणा की अनमोल विरासत रागनी कला

हरियाणवी लोकसंस्कृति का एक महत्त्वपूर्ण अंग रागनी आज विलुप्ति के कगार पर है। मनोरंजन के आधुनिक साधनों के आगमन और बदलते सामाजिक परिवेश के कारण यह कला पिछड़ती जा रही है। यदि समय रहते इसके संरक्षण के प्रयास नहीं किए गए, तो आने वाली पीढ़ियों को यह विरासत केवल किताबों में ही देखने को मिलेगी। रागनी के लुप्त होने का मुख्य कारण आधुनिक जीवनशैली, व्यवसायिक कमी और नई पीढ़ी की बदलती रुचि है। इसे बचाने के लिए डिजिटल प्लेटफार्मों पर प्रचार, शिक्षा में लोककला को शामिल करना और लोक कलाकारों को आर्थिक सहयोग देना ज़रूरी है। यदि सही क़दम नहीं उठाए गए, तो यह अनमोल धरोहर धीरे-धीरे गुम हो जाएगी।

डॉ. सत्यवान सौरभ

हरियाणा की लोकसंस्कृति में रागनी एक महत्त्वपूर्ण कला है, जो समय के साथ धीरे-धीरे लुप्त होती जा रही है। यह न केवल मनोरंजन का माध्यम रही है, बल्कि सामाजिक संदेश देने, वीर रस जगाने और लोक इतिहास को संजोने का एक प्रभावशाली ज़रिया भी रही है। हरियाणा की रागनी न केवल मनोरंजन का एक सशक्त माध्यम रही है, बल्कि समाज सुधार की दिशा में भी इसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। यह लोककला सिर्फ़ संगीत नहीं, बल्कि एक आंदोलन रही है, जिसने लोगों को जागरूक किया, बुराइयों के खिलाफ खड़ा किया और समाज को एक नई दिशा देने का प्रयास किया। हरियाणवी रागनी लोकसंस्कृति का अभिन्न अंग रही है और इसके प्रचार-प्रसार में जाहरवीर कल्लू खां, अजीत सिंह गोरखपुरिया, दयाचंद लांबा, राजेंद्र खड़खड़ी, जसमेर खरकिया, सुरेंद्र भादू, सूरजभान बलाली, मामन खान, सतीश ठेठ, कविता कसाना के साथ-साथ और भी कई महान कलाकारों का योगदान रहा है। आज भी कई युवा कलाकार रागनी को आगे बढ़ा रहे हैं और इसे डिजिटल मंचों के माध्यम से नई ऊँचाइयों तक ले जाने का प्रयास कर रहे हैं। हरियाणवी रागनी को जीवित रखने में संदीप सरगथलिया, वीर सिंह फौजी, धर्मवीर नागर, राजबाला, मास्टर छोटूराम बड़वा जैसे कई कलाकारों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। इनकी मेहनत और समर्पण से यह लोककला आज भी जीवित है, हालाँकि इसे और संरक्षण और प्रोत्साहन की ज़रूरत है।

रागनी हरियाणवी लोकगीतों और कविताओं का एक विशिष्ट रूप है, जिसे मुख्य रूप से हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश और राजस्थान के कुछ हिस्सों में गाया जाता है। इसमें वीरता, प्रेम, भक्ति, सामाजिक मुद्दों और ऐतिहासिक घटनाओं का चित्रण किया जाता है। पहले यह कला अखाड़ों और मेलों में बहुत लोकप्रिय थी, जहाँ गायक अपनी आवाज़ और जोश के साथ लोगों को मंत्रमुग्ध कर देते थे। रागनी के माध्यम से महिलाओं के अधिकारों, शिक्षा और समानता पर ज़ोर दिया गया। कई लोकप्रिय रागनियों में बाल विवाह, दहेज प्रथा और महिलाओं पर अत्याचारों का विरोध किया गया है। ₹बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ₹ जैसे संदेशों को रागनी ने जन-जन तक पहुँचाया। हरियाणवी समाज में जातिगत भेदभाव को ख़त्म करने और समानता का संदेश देने में रागनी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। कई प्रसिद्ध रागनियों ने बताया कि सभी मनुष्य समान हैं और कर्म को जाति से ऊपर रखना चाहिए। रागनी के माध्यम से शराब, जुए और अन्य नशों की लत से बचने के संदेश दिए गए। कलाकारों ने इन बुराइयों को जड़ से उखाड़ने के लिए प्रेरक गीत गाए। उदाहरणः ₹सुणले रे छोरे, बीड़ी-सिगरेट मत पीजा, तन्ने मां-बाप सूँ किट्टे तै प्यारा₹ (एक रागनी जिसमें धूम्रपान के नुक़सान बताए गए हैं)। हरियाणा की ग्रामीण जनता के लिए रागनी एक ताकत बनी। इसमें किसानों की समस्याओं, मजदूरों के अधिकारों और सरकार से उनकी माँगों को जोरदार तरीके से उठाया गया। उदाहरणः कई रागनियों में किसान आंदोलनों, फ़सल के सही दाम और सरकार की नीतियों पर सवाल उठाए गए हैं।

ब्रिटिश राज के दौरान रागनी स्वतंत्रता सेनानियों के लिए एक प्रभावशाली हथियार बनी। लोकगायक अपनी रचनाओं के माध्यम से जनता में देशभक्ति की भावना भरते थे और अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह का आह्वान करते थे। आज के दौर में भी रागनी समाज सुधार का माध्यम बनी हुई है। डिजिटल मीडिया और मंचों पर युवा कलाकार सामाजिक मुद्दों पर रागनी प्रस्तुत कर रहे हैं। हरियाणवी लोकसंस्कृति की पहचान रागनी समय के साथ लुप्त होती जा रही है। कभी गाँवों के चौपालों, मेलों और अखाड़ों में गूँजने वाली यह कला अब केवल कुछ पुराने कलाकारों और रसिकों तक सीमित रह गई है। इसके लुप्त होने के पीछे कई सामाजिक, सांस्कृतिक और तकनीकी कारण ज़िम्मेदार हैं। पहले के समय में गाँवों में बैठकर बुज़ुर्ग अपनी अगली पीढ़ी को लोकगीत और रागनी सिखाते थे, लेकिन अब यह परंपरा समाप्त हो रही है। लोकगीतों और रागनी को नयी शैली में ढालने का प्रयास कम हुआ है, जिससे यह लोगों के लिए कम प्रासंगिक हो गई है। नवीन मनोरंजन साधनों टीवी, इंटरनेट और पॉप संस्कृति के बढ़ते प्रभाव के कारण युवा पीढ़ी लोककला से दूर होती जा रही है। आधुनिक संगीत उद्योग में रागनी को वह स्थान नहीं मिला जो अन्य संगीत शैलियों को मिला है। युवा पीढ़ी इसे करियर के रूप में अपनाने के लिए प्रेरित नहीं हो रही है। इस कला को संरक्षित करने के लिए कोई औपचारिक संस्थान या पाठ्यक्रम उपलब्ध नहीं हैं।

रागनी को नए संगीत वाद्ययंत्रों और आधुनिक ध्वनि तकनीक के साथ प्रस्तुत किया जाए, ताकि यह युवाओं को भी आकर्षित कर सके। हरियाणवी फ़ल्मि और म्यूज़िक इंडस्ट्री में रागनी को स्थान दिया जाए। रागनी को रैप और हिप-हॉप जैसी आधुनिक शैलियों के साथ मिलाकर फ्यूज़न रागनी तैयार की जाए, जिससे यह युवाओं तक प्रभावी रूप से पहुँचे। हरियाणवी लोकसंस्कृति का एक महत्त्वपूर्ण अंग रागनी आज विलुप्ति के कगार पर है। मनोरंजन के आधुनिक साधनों के आगमन और बदलते सामाजिक परिवेश के कारण यह कला पिछड़ती जा रही है। यदि समय रहते इसके संरक्षण के प्रयास नहीं किए गए, तो आने वाली पीढ़ियों को यह विरासत केवल किताबों में ही देखने को मिलेगी। स्कूलों और कॉलेजों में रागनी को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाए, ताकि युवा पीढ़ी इसकी जड़ों से जुड़ सके। विश्वविद्यालयों में लोककला और संगीत की पढ़ाई के अंतर्गत रागनी पर शोध को बढ़ावा दिया जाए। बच्चों को पारंपरिक संगीत में रुचि दिलाने के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ। सरकार और सांस्कृतिक संस्थानों को लोक महोत्सवों में रागनी को विशेष स्थान देना चाहिए। यूट्यूब, पॉडकास्ट और सोशल मीडिया के माध्यम से इसे युवाओं तक पहुँचाया जा सकता है। स्कूलों और कॉलेजों में रागनी की शिक्षा दी जानी चाहिए। लोक कलाकारों को आर्थिक और सामाजिक समर्थन दिया जाना चाहिए।

रागनी केवल एक गीत शैली नहीं, बल्कि हरियाणा की संस्कृति की पहचान है। यदि इसे संरक्षित करने के लिए उचित क़दम नहीं उठाए गए, तो यह अमूल्य धरोहर धीरे-धीरे विलुप्त हो जाएगी। अब समय आ गया है कि हम इसे फिर से लोकप्रिय बनाएँ और इसकी समृद्ध परंपरा को आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाएँ। रागनी केवल लोकगायन नहीं, बल्कि समाज को जागरूक करने का सशक्त माध्यम है। यह सामाजिक बुराइयों के खिलाफ आवाज़ उठाने, सुधार की ओर प्रेरित करने और बदलाव लाने की ताकत रखती है। अगर इसे सही दिशा में प्रोत्साहित किया जाए, तो यह समाज सुधार की एक मज़बूत नींव बन सकती है। "रागनी सिर्फ़ गीत नहीं, ये समाज की आवाज़ है!", "लोककला हमारी पहचान है, इसे बचाना हमारी शान है!"

सभी राज्य सरकारों को अपने सिविल सेवा आचरण नियमों में तत्काल संशोधन करना समय की मांग

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं
गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर करीब क़रीब हर देश के नागरिकों में यह भाव होता है कि वह अपने देश की सेवा के रूप में सरकारी नौकरी करें, स्वाभाविक रूप से हम जानते हैं कि व प्रैक्टिकल देखते भी हैं कि एक चपरासी से लेकर बड़े-बड़े अधिकारियों को अपने पद का कितना रुतबा मिलता है वे अपने पद व रुतबे के आगे अपना आचरण, व्यवहार देशसेवा जनता के सेवक इत्यादि अनेक कर्तव्य व जिम्मेदारियां भूल जाते हैं, हालांकि मेरा इशारा सभी पर नहीं बल्कि ऐसे कर्मचारियों पर है जो अपने पद व रुतबे से अपने आप को सरकार का दामाद समझने लगते हैं। वैसे भी सरकारी कर्मचारियों को सरकारी दामाद ही कहा जाता है। मैंने अपने वकालत के करियर में जीवन में अनेकों ऑफिसों में देखा है कि सरकारी अधिकारी पद का रुतबा दिखाते हैं। बात केवल यही तक सीमित नहीं आजकल सोशल मीडिया युग में अपने पद का रुतबा मीडिया पोस्ट में भीरील्स या कोई मैसेज या कमेंट कर अपने पद का रुतबा व पहचान दिख़ाने में आगे रहते हैं ताकि लोग उनको ध्यान से सुनें या अपने दबाव तंत्र को महत्व दिलाते हैं, शायद इन्हीं खामियों के कारण जम्मू कश्मीर व गुजरात सरकारों ने पहले ही अपने सिविल सेवा आचरण नियम संशोधित कर सख्त कर दिए हैं। अब महाराष्ट्र सरकार ने भी दिनांक 19 मार्च 2025 को विधानसभा सत्र में घोषणा कर दी है कि तीन माह के अंदर महाराष्ट्र सिविल सेवा आचरण नियम 1979 को संशोधित कर ऐसे सख्त बनाए जाएगें, क्योंकि 1979 में सोशल मीडिया नहीं थी इसलिए उस समय के आचरण से यह नियम ठीक लगते थे, परंतु अभी डिजिटल दुनियाँ में इस ऐसे संशोधिन कर सख्त नियम बनाए जाएं, मेरा ऐसा मानना है कि अब समय आ गया है कि हर राज्य ने अपने राज्यों के सिविल सेवा आचरण नियमों को अति सख्त करने की जरूरत है, ताकि हर समय कर्मचारी अधिकारी अपने को सरकारी दामाद समझाने के बजाय जनता का सेवक समझे, हर जगह अपने पद का रुतबा नहीं बल्कि नम्र व नींवाँ होकर जनता का सेवक चा कर समझकर जनता की सेवा करें तो यह पृथ्वी किसी स्वर्ग से काम नहीं होगी। चूँकि महाराष्ट्र सरकार ने तीन माह में संशोधन का प्रण लिया है इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, सभी राज्यों को अपने सिविल सेवा आचरण नियमों में तात्कालिक संशोधन करना समय की मांग है।

साथियों बात अगर हम महाराष्ट्र में सिविल सेवा आचरण नियम 2025 लागू करने की करें तो, सरकारी पद मिलते ही कुछ लोग देश सेवा कम और कैमरा प्रेम ज़्यादा करने लगते हैं. कभी कुर्सी पर बैठकर स्लो मोशन एंट्री, तो कभी हथियार के साथ डायलॉगबाज़ी, अब ये सब आम बात हो गई है. सैलरी सरकारी है, लेकिन शौक पूरे फुल-टाइम रील स्टार वाले. ऐसे सरकारी अधिकारियों और कर्मचारियों पर महाराष्ट्र सरकार अब सख्त प्रतिबंध लगाने वाली है,इसके लिए सरकार सिविल सेवा आचरण नियम 1979 में संशोधन कर नए नियम लागू करेगी, ताकि सरकारी कर्मचारियों के सोशल मीडिया उपयोग को नियंत्रित किया जा सके।महाराष्ट्र के सीएम ने बुधवार, 19 मार्च को विधानसभा में इस बारे में एलान किया। उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र सिविल सेवा आचरण नियम 1979 में संशोधन कर नए नियम लागू किए जाएंगे, इससे सरकारी कर्मचारियों के सोशल मीडिया उपयोग को नियंत्रित किया जा सकेगा।इस दौरान उन्होंने कहा कि इस संबंध में जल्द ही एक सरकारी निर्णय (जीआर) जारी किया जाएगा। उन्होंने उन अधिकारियों को भी फटकार लगाई जो सरकार विरोधी समूहों में सक्रिय रहते हैं।सरकारी नीतियों के खिलाफ सोशल मीडिया पर पोस्ट करते हैं। दो सदस्यों ने विधान परिषद में अधिकारियों के सोशल मीडिया पर एक्टिव रहने का मुद्दा उठाया था, उन्होंने कहा कि अधिकारी रील बनाकर यह दिखाने की कोशिश कर रहे हैं कि पूरा सिस्टम वही चला रहे हैं।पुलिस अधिकारी 'सिंघम' जैसी फिल्मों से प्रेरित होकर रील बना रहे हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे मामलों पर सख्त प्रतिबंध लगाने की ज़रूरत है,इसके बाद उन्होंने सवाल किया कि क्या सरकार इस पर कानून में संशोधन करेगी? इस सवाल पर सीएम ने जवाब देते हुए कहा कि महाराष्ट्र सिविल सेवा आचरण नियम 1979 में बनाए गए थे, चूंकि 1989 में सोशल मीडिया नहीं था,इसलिए उस समय के नियम केवल तब उपलब्ध मीडिया पर लागू होते थे।उन्होंने कहा, अभी सोशल मीडिया को लेकर कोई सख्त प्रावधान नहीं है, लेकिन आज कुछ अधिकारी सोशल मीडिया का दुरुपयोग कर रहे हैं, कुछ सरकारी नीतियों के खिलाफ पोस्ट कर रहे हैं,कुछ अपने आधिकारिक पद का इस्तेमाल खुद की महिमा बढ़ाने के लिए कर रहे हैं, ऐसे मामलों को रोकने के लिए नियमों में संशोधन अनिवार्य है। आगे कहा कि सरकारी अधिकारियों और कर्मचारियों को सोशल मीडिया पर एक्टिव रहना चाहिए, लेकिन उनके आचरण को लेकर कुछ अपेक्षाएं भी हैं, उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि सोशल मीडिया का उपयोग नागरिकों से संवाद के लिए किया जाना चाहिए, न कि रील्स बनाकर फेम कमाने के लिए. इस दौरान उन्होंने साफ कहा कि सरकारी सेवाओं में अनुशासनहीनता किसी भी रूप में बर्दाश्त नहीं की जाएगी।बता दें जम्मू-कश्मीर और गुजरात सरकार पहले ही ऐसे कानून लागू कर चुकी हैं, अब महाराष्ट्र सरकार भी सिविल सेवा आचरण नियमों में संशोधन कर सोशल मीडिया उपयोग, व्यवहार और सहभागिता पर कानून बनाने जा रही है।

साथियों बात अगर हम जनता के कर्मचारियों अधिकारियों की सोच कर्मचारीयों की सरकारी दामाद वाली छवि से परेशान होने की करें तो, हर देश को चलाने के लिये एक सरकार की जरूरत होती है और उस सरकार को चलाने के लिये सरकारी नौकरों की, जो जनता की सेवा करें। लेकिन हमारे देश में सरकार जिन लोगों को सरकारी कर्मचारी बोलकर भर्ती करती है वो नौकर कम मालिक जैसा व्यवहार ज्यादा करते हैं। नौकर का काम मालिक की सेवा करना होता है और अगर वो ऐसा न करे तो उसे अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ता है। लेकिन हमारे लोकतान्त्रिक देश में सरकारी नौकर कहीं से भी नौकर नहीं लगता है। वो काम करे न करे उसे पूरा वेतन चाहिये, क्योंकि ये उसका हक है। सरकारी नौकर एक ऐसा नौकर होता है जिसे एक बार मालिक नौकरी पर रख लें तो मालिक ही उसका नौकर बन जाता है। बात-बात पर यह नौकर हड़ताल की धमकी देता है और धरना-प्रदर्शन करता है।वेतन के अलावा इसे विभिन्न प्रकार की सुविधायें भी चाहिये। उसकी और उसके परिवार की सारी जिम्मेदारी सरकार की होती है। उसके मरने के बाद तक सरकार उसके परिवार का पालन पोषण करती रहती है। कहने को हमारा देश बहुत गरीब देश है, लेकिन हमारे राजनीतिक नौकरो को देखो तो उनकी सात पीढ़ीयों की बात छोड़ो उन्होंने इतना धन इकठ्ठा कर लिया है कि जब तक उसकी संताने इस धरती पर रहेगी उनको ऐश्वर्यपूर्ण जीवन जीने के लिये हाथ-पैर हिलाने कि जरूरत नहीं होगी। राजनीतिक सेवक ही जनता के असली मालिक है और धर्म और जाति के नाम पर राजनीति करके धन कमाना ही उनका एकमात्र धर्महै। मेरा मानना है कि राजनीतिज्ञों का कोई धर्म नहीं होता और न ही जाति होती है, जिस तरफ उन्हें फायदा दिखता हो वो उसी तरफ चल देते है।

साथियों बात अगर हम सरकारी दामाद का सबसे बड़ा सटीक उदाहरण रेलवे विभाग की करें तो...रेल विभाग में सबसे ज्यादा सरकारी नौकर है, जो रेलों पर अपना पहला अधिकार समझते है।ये और इनका परिवार सारी जिन्दगी रेलों में मुफ्त सफर का आनन्द लेने को अपना अधिकार मानता है,ऐसे ही सभी विभागो के कर्मचारी अपने विभागों द्वारा जनता को दी जाने वाली सुविधाओं पर जनता से पहले अपना अधिकार मानते हैं, मेरा अनुमान है कि अगर सर्वेक्षण किया जाये तो पता लगेगा कि सरकारी विभागो ने जनता की सेवा कम अपने कर्मचारियों की सेवा ज्यादा की होगी, शायद सरकारी कर्मचारी काम नहीं करते ऐसा सरकार भी मानती है, तभी वो धीरे-धीरे नियमित पदों को समाप्त करके अस्थायी कर्मचारियो से काम चला रही है, जनता को अपने अधिकारों के लिये जागरूक होने की जरूरत है, क्योंकि जनता ही असली मालिक है, लेकिन उसे पता ही नहीं है कि नौकरों से काम कैसे लिया जाता है,जो नौकर काम न करे उसे नौकरी पर रहने का अधिकार कैसे हो सकता है और बिना काम के उसे वेतन किस बात का दिया जा रहा है।अगर हम किसी को किसी काम के लिये रखते है और वो काम नहीं होता है तो क्या उसको हम उसके पैसे देते है, लेकिन हमारे देश में ऐसा ही होता है? अब वो वक्त आ चुका है जब हमें सरकारी नेताओं,अफसरों और कर्मचारियों को दिये जाने वाले वेतन और भत्तों के एवज में पूरा काम करने की बाध्यता पैदा करनी होगी। अगर कोई नेता अपना काम नहीं करता तो उसे वापिस बुलाने का अधिकार जनता के पास होना चाहिये। इस बात का कोई तुक नहीं है कि अगर जनता से झूठे वादे करके कोई नेता चुन लिया जाता है तो जनता नेता के झाँसे में आकर की गई गलती के लिये पूरे पाँच साल तक सजा भुगते, ऐसे ही अगर कोई भष्ट्र और कामचोर व्यक्ति सरकार में अफसर या कर्मचारी नियुक्त हो जाता है तो सारी उम्र उसे झेला जाये, किसी भी वक्त ऐसा लगता है कि ये व्यक्ति सरकारी नौकरी के योग्य नहीं है या वो काम नहीं करना चाहता या वो भष्ट्र है तो उसे तुरन्त नौकरी से निकाल देना चाहिये। कुछ लोगों का कहना है कि ऐसा करना से उसका परिवार मुश्किल में आ जाता है, लेकिन ये सोचना हमारा काम नहीं है ये सोचने का काम उस व्यक्ति का है जो ऐसा करता है। जब उसे अपने परिवार की चिन्ता नहीं तो हम उसके परिवार की चिन्ता क्यों करें। अब ये जरूरी हो गया है कि सरकारी सेवाओं के नियमों में बदलाव किया जाये, ताकि जो सही काम न करे उसे बाहर का रास्ता दिखाया जा सके।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि सभी राज्य सरकारों को अपने सिविल सेवा आचरण नियमों में तत्काल संशोधन करना समय की मांग।शासकीय अधिकारियों कर्मचारियों द्वारा अपने पद का रुतबा रील्स बनाकर या पोस्ट कमेंट्स में लिखना अनुशासनहीनता के दायरे में लाना ज़रूरी।शासकीय कर्मचारीयों अधिकारीयों को सरकार का दामाद वाली छवि से निकालनें सख़्त आचरण नियम 2025 लागू करना तात्कालिक ज़रूरी हैं।

टीवीएस जुपिटर वर्सेज होंडा एक्टिवा : इंजन, परफॉर्मेंस और फीचर्स के मामले में कौन बेहतर

टीवीएस जुपिटर और होंडा एक्टिवा दोनों ही अपने-अपने तरीके से शानदार है। अगर आपको मॉडर्न डिजाइन ज्यादा स्टोरेज डिस्क ब्रेक और बेहतर फीचर्स चाहते हैं तो जुपिटर ले सकते हैं। अगर आप रिफाइंड इंजन स्मूथ राइड चाहते हैं तो होंडा एक्टिवा को घर ला सकते हैं। आइए जानते हैं कि दोनों (टीवीएस जुपिटर वर्सेज होंडा एक्टिवा) में से कौन इंजन परफॉर्मेंस और फीचर्स के मामले में बेहतर है।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। टीवीएस जुपिटर और होंडा एक्टिवा भारतीय बाजार में बिकने वाल सबसे पॉपुलर स्कूटर हैं। दोनों ही स्कूटर किफायती डिजाइन और पावरफुल इंजन के साथ आते हैं। ये दोनों ही स्कूटर अपने-अपने फायदे और सुविधाओं के साथ आते हैं। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको इन दोनों (TVS Jupiter Vs Honda Activa) की तुलना करते हुए बता रहे हैं कि इंजन, परफॉर्मेंस और फीचर्स के मामले में कौन बेहतर है।

डिजाइन

TVS Jupiter: इसे हाल ही में बड़े अपडेट के साथ लॉन्च किया है, जिसकी वजह से इसका डिजाइन पहले के मुकाबले ज्यादा मॉडर्न और अट्रैक्टिव लगने लगा है। इसके बॉडी पैनल्स को अच्छे से डिजाइन किया गया है।

Honda Activa: इसके डिजाइन में पिछले कुछ वर्षों में वैसा ही है। हालांकि, इसके डिजाइन में समय-समय पर हल्के अपडेट्स जरूर हुए हैं, इसके बावजूद इसने भारतीय बाजार में अपनी पकड़ को पहले की तरह ही बनाए रखा है।

इंजन

TVS Jupiter: इसमें 113.3cc का सिंगल-सिलेंडर, एयर-कूल्ड इंजन दिया गया है, जो OBD-2B मानकों को पूरा करता है। इसका इंजन 8.02PS की पावर और 9.2Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसमें TVS iGo Assist फीचर दिया गया है, जो एक्स्ट्रा 0.6Nm टॉर्क जनरेट करता है।

Honda Activa: इसमें 109.51cc का सिंगल-सिलेंडर, एयर-कूल्ड इंजन दिया गया है, जो OBD-2B मानकों को पूरा करता है। इसका इंजन 7.8PS की पावर और 9.5Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसका इंजन काफी स्मूथ और रिफाइंड है।

सस्पेंशन और ब्रेकिंग सिस्टम

TVS Jupiter: इसमें काफी अच्छी तरह से ट्यून किया गया टेलीस्कोपिक फोर्क और रियर मोनोशॉक सस्पेंशन सिस्टम दिया गया है। इसके फ्रंट टायर में डिस्क और रियर ड्रम ब्रेक दिया गया है। जुपिटर का कर्ब वेट 106 किलोग्राम और सीट की ऊंचाई 765mm है।

Honda Activa: इसमें टेलीस्कोपिक फोर्क और रियर मोनोशॉक सस्पेंशन दिया गया है। इसके दोनों टायर में केवल ड्रम ब्रेक्स ही दिए गए हैं। एक्टिवा का कर्ब वजन 105 किलोग्राम और सीट की ऊंचाई 765mm है।

स्टोरेज

TVS Jupiter: इसमें 33-लीटर का अंडरसीट स्टोरेज दिया गया है, जिसमें आप अपने सामान को रख कर सफर कर सकते हैं। इसके अलावा फ्रंट माउंटेड फ्यूल फिलर कैप, ट्विन हुक्स और पर्याप्त फुटबोर्ड स्पेस भी दिया गया है।

Honda Activa: इसमें केवल 18-लीटर का अंडरसीट स्टोरेज मिलता है, जो जुपिटर से काफी कम है। इसमें फ्रंट पॉकेट, अच्छा फुटबोर्ड स्पेस और ट्विन हुक्स जैसे फीचर्स भी मिलते हैं।

फीचर्स

TVS Jupiter: इसमें एलईडी लाइटिंग और एक एलसीडी इंस्ट्रूमेंट कंसोल दिया गया है। इसमें आपको स्मार्टफोन कनेक्टिविटी का फीचर भी मिलता है, जो ब्लूटूथ के जरिए टर्न-बाय-टर्न नेविगेशन और कॉल/एसएमएस अलर्ट जैसी सुविधाएं देता है।

Honda Activa: इसमें एलईडी हेडलाइट के साथ हालेजन इंडिकेटर्स और टेल लाइट दिया गया है। इसमें OBD-2B अनुपालन वाला 4.2-इंच TFT डिस्प्ले मिलता है, जो टर्न-बाय-टर्न नेविगेशन और कॉल/एसएमएस अलर्ट सपोर्ट करता है।

गर्मियों में कार की बैटरी दे न दे धोखा, अपनाए ये 5 आसान टिप्स

गर्मियों में कार की बैटरी का ख्याल रखना बहुत जरूरी होता है क्योंकि तेज धूप और गर्मी की वजह से बैटरी की उम्र और परफॉर्मेंस पर असर पड़ सकता है। इतना ही नहीं यह खराब भी हो सकती है। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको गर्मियों में बैटरी की देखभाल करने के तरीके के बारे में बता रहे हैं।

नई दिल्ली। गर्मी का मौसम न केवल इंसान पर बुरा असर डालता है, बल्कि हमारी कार की बैटरी भी खराब कर सकता है। ज्यादा तापमान की वजह से बैटरी के परफॉर्मेंस को प्रभावित कर सकता है, बल्कि उसकी लाइफ की कम कर सकता है। इसलिए, गर्मियों में कार की बैटरी का खास ख्याल रखना बहुत जरूरी हो जाता है। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको बता रहे हैं कि आप किस तरह से गर्मियों में बैटरी का ख्याल रख सकते हैं।

1. बैटरी की नियमित जांच करें

गर्मियों में बैटरी सही से काम करें, इसके लिए आप इसकी नियमित रूप से जांच करें। बैटरी के टर्मिनल पर किसी तरह की गंदगी या जंग को न रहने दें। बैटरी पर लगी जंग से उसकी परफॉर्मेंस खराब हो सकती है और इसे समय-समय पर साफ करने से बैटरी की लाइफ बढ़ा सकते हैं।

2. बैटरी को ठीक से टाइट करें

बैटरी के टर्मिनल को कभी ढीला नहीं छोड़ें। गर्मी की वजह से इसका टर्मिनल फैल सकता है और कनेक्शन कमजोर हो सकता है। इसलिए हमेशा सुनिश्चित करें कि बैटरी के टर्मिनल्स सही से जुड़े हुए हों।

3. कवर का इस्तेमाल करें

गर्मी में मौसम में बैटरी को लोग बचाने के लिए उसे सही से ढकते नहीं है, जिसकी वजह से उसका परफॉर्मेंस जल्दी कम हो जाता है। वहीं, बैटरी पर एक कवर लगाने से गर्मी का प्रभाव कम होने के साथ ही यह उसे ज्यादा गर्म होने से भी बचाता है और उसकी लाइफ बढ़ती है।

4. सही बैटरी का चयन करें

अगर आपके कार की बैटरी खराब हो गई है और उसे बदलने की जरूरत पड़ रही है, तो यह सुनिश्चित करें कि वह अपनी कार के मॉडल और स्पेसिफिकेशन के अनुरूप हो। गर्मियों में हाई क्वालिटी वाली बैटरी बेहतर से काम करने के साथ ही लंबे समय तक चलती भी है।

5. AC का सही इस्तेमाल करें

गर्मी में गाड़ियों में एयर कंडीशनर का इस्तेमाल बाकी मौसम के मुकाबले बढ़ जाता है। AC का ज्यादा इस्तेमाल करने से बैटरी पर ज्यादा प्रेशर पड़ सकता है। इसलिए एसी का इस्तेमाल लिमिट में करें। वहीं, ज्यादा एसी का इस्तेमाल करने पर इंजन पर भी ज्यादा लोड पड़ता है और उसे ज्यादा काम करना पड़ता है। इसकी वजह से माइलेज पर भी असर पड़ता है।

नए कलर में लॉन्च हुई स्पोर्ट्स बाइक होंडा CBR150R, पावरफुल इंजन के साथ देती है शानदार परफॉर्मेंस

2025 Honda CBR150R एक बेहतरीन स्पोर्ट्स बाइक है जिसे मलेशिया में नए कलर बेहतरीन डिजाइन और शानदार पावरट्रेन के साथ लॉन्च किया गया है। इसे स्पोर्टी लुक्स देने के साथ ही शानदार परफॉर्मेंस भी मिलता है। मोटरसाइकिल को नए नए कलर के रूप में Honda Tricolor और Silver दिया गया है। नए कलर ऑप्शन जोड़ने के साथ ही कीमत में RM100 (लगभग 2000 रुपये) की बढ़ाया गया है।

नई दिल्ली। 2025 Honda CBR150R को नए कलर में लॉन्च किया गया है। इसे पहले से ज्यादा बेहतरीन डिजाइन दिया गया है। इसमें नए कलर के रूप में Honda Tricolor और Silver को शामिल किया गया है। बाइक में नए अपडेट देने के साथ ही कीमत में मामूली बढ़ोतरी भी की गई है, जो RM100 (लगभग 2000 रुपये) है। आइए जानते हैं कि 2025 Honda CBR150R में क्या नया दिया गया है।

क्या मिला नया

2025 Honda CBR150R को दो नए कलर ऑप्शन के साथ पेश किया गया है। इसके सबसे ज्यादा आकर्षक Honda Tricolor है। इसमें भी लाल रंग को प्रमुखता दी गई है। बाइक में सफेद और नीले रंग के कंट्रास्टिंग शेड्स भी दिए गए हैं, जो साइड फेयरिंग और फ्यूल टैंक पर दिए गए हैं। इसके लुक को बेहतर बनाने के लिए USD forks को गोल्ड फिनिश दिया गया है।

इसे दिया गया दूसरा कलर Silver है, जो Honda Tricolor से ज्यादा सादा है। इसमें चमकीले पीले रंग के एक्सेंट्स दिए गए हैं, जो फ्रंट फेसिया, साइड फेयरिंग, फ्यूल टैंक और सीट सेक्शन पर दिया गया है।

डिजाइन

2025 Honda CBR150R इसके डिजाइन को पहले की तरह ही रखा गया है, लेकिन इसके बार कलर में कुछ बदलाव किए गए हैं। इसका डिजाइन CBR1000RR-R, CBR650R, और CBR250RR से इंस्पायर है। इसमें आक्रामक फ्रंट फेसिया, ड्यूल LED हेडलाइट्स और शार्प DRLs, फ्रंट काउल-माउंटेड स्टाइलिश रियर-व्यू मिरर, कंम्पैक्ट विंडस्क्रीन, स्कल्प्टेड फ्यूल टैंक, स्पोर्टी फेयरिंग और स्प्लिट सीट्स और अपस्वेप्ट एग्जॉस्ट सिस्टम दिया गया है।

फीचर्स

2025 Honda CBR150R इसमें कई बेहतरीन फीचर्स दिए जाते हैं, जो इमरजेंसी स्टॉप सिग्नल (ESS), MyMAP Program के तहत इसे 5-स्टार रेटिंग, फुल डिजिटल कलर इंस्ट्रूमेंट पैनल दिया गया है। इसके इंस्ट्रूमेंट पैनल में कई तरह की जानकारी मिलती है।

पावर और परफॉर्मेंस

2025 Honda CBR150R के इंजन में भी किसी तरह का बदलाव नहीं किया गया है। इसमें वहीं, पुराने 149.2 cc, सिंगल सिलेंडर, लिक्विड कूल्ड, DOHC इंजन का इस्तेमाल किया गया है, जो 16.09 hp की पावर और 13.7 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके इंजन को 6-स्पीड गियरबॉक्स और असिस्ट और स्लिपर क्लच के साथ जोड़ा गया है। इसमें मिलने वाले लिक्विड कूलिंग सिस्टम की वजह से इसका इंजन ओवरहीट होने से बचा रहता है।

अंडरनिपिंग

2025 Honda CBR150R को डायमंड फ्रेम पर बनाया गया है, जो SD forks पर सस्पेंड किया गया है। इसके पीछे की तरफ स्विंग आर्म और मोनोशॉक (Pro-Link) सिस्टम दिया गया है। बाइक में 17-इंच के व्हील्स दिए गए हैं, जिन पर 100/80 फ्रंट और 130/70 रियर ट्यूबलैस टायर दिए गए हैं। दोनों ही तरफ डिस्क ब्रेक्स दिया गया है और ड्यूल-चैनल ABS सिस्टम भी मिलता है। बाइक की सीट की ऊंचाई 788 मिमी और कर्ब वेट 137 किलोग्राम है।

एस्टॉन मार्टिन वैनक्विश लॉन्च; शानदार लुक, पावरफुल इंजन और प्रीमियम फीचर्स से है लैस

एस्टॉन मार्टिन वैनक्विश भारतीय बाजार में 8.85 करोड़ रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में लॉन्च हुई। इसमें बेहतरीन डिजाइन शानदार इंटीरियर्स और जबरदस्त पावरट्रेन दिया गया है। इसमें दिया गया लुक पावर और प्रीमियम फीचर्स इसे एक अलग ही लेवल पर ले जाते हैं। यह महज 3.3 सेकंड में 0 से 100 किमी/घंटा की स्पीड पकड़ सकती है और इसकी इसे आप 345 किमी/घंटा की रफ्तार पर चला सकते हैं।

नई दिल्ली। प्रीमियम और लग्जरी गाड़ियां बनाने वाली कंपनी Aston Martin ने भारतीय बाजार में अपनी एक कार को लॉन्च किया है। कंपनी ने भारत में Aston Martin Vanquish को 8.85 करोड़ रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में लॉन्च किया है। इसे कई बेहतरीन फीचर्स, दमदार पावर और शानदार डिजाइन के साथ-साथ बेहद शानदार इंटीरियर्स भी दिए गए हैं। आइए इसके बारे में विस्तार में जानते हैं।

डिजाइन

Aston Martin Vanquish को शार्प और स्लीक बॉडी दी गई है, जो सड़क पर चलने पर सभी का ध्यान अपनी तरफ खींचेगी। इसमें बड़े सिग्नेचर ग्रिल और आकर्षक एलईडी हेडलाइट्स भी दिए गए हैं। इसके बम्पर में एक कार्बन-फाइबर स्प्लिटर दिया गया है, इसे काफी अट्रैक्टिव लुक देते हैं।

इसके साइड प्रोफाइल की बात करें तो इसमें स्वान डोर, 21-इंच गोल्ड व्हील्स, और कार्बन-फाइबर ट्रिम दिया गया है।

इसके पीछे की तरफ वर्टिकली-स्टैक्ड एलईडी टेल लाइट्स और उनके बीच एक ग्लॉस ब्लैक एलिमेंट दिया गया है। इसके टेलगेट पर ज्यादा कार्बन फाइबन का इस्तेमाल किया गया है और बम्पर में क्वाड एग्जॉस्ट सिस्टम और एक आक्रामक डिफ्यूजर दिया गया है, जो इसे एक स्पोर्टी लुक देते हैं।

इंटीरियर

Aston Martin Vanquish एक 2-सीटर कार है। इसमें ड्यूल-टोन डैशबोर्ड दिया गया है। इसके डैशबोर्ड में दो डिजिटल स्क्रीन और एक 3-स्पोक स्टीयरिंग व्हील दी गई है, जिसे भी ड्यूल-टोन थीम दी गई है।

इसमें स्पोर्ट सीट्स दी गई है, जो लेदरटेट अपहोल्स्ट्री से ढकी हुई हैं। इसके सेंट्रल कंसोल में कई बटन और रोटरी डायल्स दिए गए हैं, जो पुश-बटन स्टार्ट से लेकर सीट वेंटिलेशन और एसी तक को कंट्रोल किया जा सकता है। इस कंसोल को फ्रंट आर्मरेस्ट तक दिया गया है, जिसमें कपहोल्डर्स और अतिरिक्त स्टोरेज स्पेस दिया गया है।

फीचर्स

Aston Martin Vanquish में 10.25 इंच की डिजिटल ड्राइवर डिस्प्ले, 10.25 इंच की टचस्क्रीन और 15-स्पीकर Bowers & Wilkins साउंड सिस्टम दिया गया है। इसमें ड्यूल-ज़ोन ऑटो एसी, वायरलेस फोन चार्जर, पैनोरमिक ग्लास रूफ, 16-वे इलेक्ट्रिकली एडजस्टेबल सीट्स, पावर-एडजस्टेबल स्टीयरिंग व्हील, ऑटोमेटिक हेडलाइट्स और वाइपर्स दिया गया है। इसमें हीटेड स्टीयरिंग व्हील और वेंटिलेटेड सीट्स भी दी जाती है।

सेफ्टी फीचर्स

इसमें पैसेंजर की सुरक्षा के लिए कई एयरबैग्स, 360-डिग्री कैमरा और इलेक्ट्रॉनिक पार्किंग ब्रेक दिया गया है। इसमें एडवांस ड्राइवर असिस्टेंस सिस्टम्स का पूरा सेट दिया गया है, दिसमें फॉरवर्ड कोलिजन वार्निंग और एडेप्टिव क्रूज कंट्रोल जैसे फीचर्स शामिल है।

इंजन

Aston Martin Vanquish का लुक जितना दमदार है, उतना ही पावरफुल में इंजन दिया गया है। इसमें 5.2-लीटर ट्विन-टर्बो V12 इंजन का इस्तेमाल किया गया है, जो 835 PS की पावर और 1000 Nm का टॉर्क जेनरेट करता है। इसके इंजन को 8-स्पीड ZF ऑटोमैटिक गियरबॉक्स के साथ जोड़ा गया है। कंपनी दावा करती है कि उनकी यह कार 3.3 सेकंड में 0 से 100 किमी/घंटा की रफ्तार पकड़ सकती है और इसकी टॉप स्पीड 345 किमी/घंटा है।

नए रंगरूप में यामाहा XSR125 और XSR900 लॉन्च, एडवांस फीचर्स समेत डिजाइन में मिला बड़ा अपडेट

परिवहन विशेष न्यूज

2025 Yamaha XSR125 और XSR900 दोनों मोटरसाइकिल को नई टेक्नोलॉजी और डिजाइन के साथ जापानी बाजार में उतारी है। इन दोनों को ही नए कलर ऑप्शन और लो सीट किट जैसे अपडेट्स दिए गए हैं। इन दोनों बाइक को ही दमदार और एडवांस फीचर्स से लैस किया गया है जिसमें स्मार्टफोन कनेक्टिविटी और बेहतर सस्पेंशन तक शामिल है। यह दोनों ही दमदार इंजन और रेट्रो स्टाइल में आती है।

नई दिल्ली। यामाहा ने हाल ही में कई मोटरसाइकिल को लॉन्च किया है। जिसमें से दो नियो-रेट्रो कैटेगरी की बाइक भी शामिल है। इन दोनों में से एक कम्यूटर और लाइटवेट स्ट्रीट बाइक है, तो दूसरी मिडिलवेट नेकेड स्ट्रीट फाइटर मोटरसाइकिल है। इनका नाम 2025 Yamaha XSR125 और XSR900 है। इन दोनों मोटरसाइकिल को ही नए कलर ऑप्शन, तकनीक और डिजाइन अपडेट्स के साथ लॉन्च किया गया है। आइए इन दोनों के बारे में विस्तार में जानते हैं कि इनमें क्या नए अपडेट मिले हैं।

2025 Yamaha XSR125

यह एक नियो-रेट्रो स्टाइल की मोटरसाइकिल है, जिसमें गोल आकार के LED हेडलाइट, TFT डिस्प्ले और LED टेललाइट दिए गए हैं। इसमें क्विल्टेड डिजाइन की सीट दी गई है, जो बाइक को और भी रेट्रो लुक देती है। इसको दो नए कलर ऑप्शन सिल्वर और ब्राउन को दिया गया है, जबकि ब्लैक में यह पहले से ही आती है।

2025 Yamaha XSR125

इस बाइक में एक नया लो सीट एक्सेसरी किट को भी लॉन्च किया गया है, जो बाइक की सीट की ऊंचाई को 30 मिमी तक कम कर देता है। इसकी सीट की ऊंचाई अब 810 मिमी से घटकर 780 मिमी हो गई है।

2025 Yamaha XSR125 में 124cc, सिंगल-सिलेंडर, लिक्विड-कूल्ड इंजन का इस्तेमाल किया गया है, जो 15 PS की पावर और 12 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके इंजन को -स्पीड गियरबॉक्स और स्लिप-एंड-असिस्ट क्लच के साथ जोड़ा गया है। बाइक में

टेलिस्कोपिक फॉर्क और मोनोशॉक सस्पेंशन, दोनों एंड्स पर डिस्क ब्रेक्स के साथ ABS और 17-इंच अलॉय व्हील्स दिए गए हैं। कंपनी दावा करती है कि यह मोटरसाइकिल एक लीटर पेट्रोल में 60.3 किमी/लीटर का माइलेज देती है।

2025 Yamaha XSR125

इसमें मिलने वाले फीचर्स की बात करें, तो मोटरसाइकिल में LCD इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर, एलईडी हेडलाइट और टेललाइट, और बल्ब-टाइप इंडिकेटर्स मिलते हैं।

2025 Yamaha XSR900

यह एक नियो-रेट्रो नगेट बाइक है, जिसमें गोल्डन कलर की फॉर्क, बार-एंड मिरर्स, सिंगल-पीस सीट और यूनिक कलर स्कीम्स दी गई है। इस बाइक को Cyberpunk 2077 गेम से इंस्पायर है और इसका डिजाइन भी काफी अट्रैक्टिव है।

2025 Yamaha XSR900

2025 XSR900 में नया नया TFT डिस्प्ले दिया गया है, जो स्मार्टफोन कनेक्टिविटी को सपोर्ट करता है। मोटरसाइकिल में 6-एक्सिस IMU (Inertial Measurement Unit) दिया गया है, जो बाइक को बेहतर कंट्रोल और सेफ्टी फीचर्स देता है। मोटरसाइकिल में KYB फुली-एडजस्टेबल रियर सस्पेंशन, रिवाइज्ड हैंडलबार शेप, नया सीट कशनिंग, नया 4-वे जॉयस्टिक और एडजस्टेबल लीवर्स जैसे अपडेट्स दिए गए हैं।

2025 Yamaha XSR900 में वहीं पुराने 888cc, तीन-सिलेंडर, लिक्विड-कूल्ड इंजन का इस्तेमाल किया गया है, जो 120 PS की पावर और 93 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके इंजन को 6-स्पीड गियरबॉक्स और बायडायरेक्शनल क्विकशिफ्टर के साथ जोड़ा गया है। बाइक में फुली-एडजस्टेबल सस्पेंशन, फ्रंट में ड्यूल डिस्क ब्रेक्स और रियर में सिंगल डिस्क ब्रेक और 17-इंच के अलॉय व्हील्स दिए गए हैं।

2025 Yamaha XSR900

इसमें चार राइडिंग मोड्स (रेन, स्ट्रीट, स्पोर्ट और कस्टम) दिए गए हैं, जिसकी मदद से पावर आउटपुट, ABS और ट्रैक्शन कंट्रोल लेवल को एडजस्ट कर सकते हैं। वहीं, मोटरसाइकिल में स्लाइड कंट्रोल, व्हीली कंट्रोल, क्रूज कंट्रोल, स्पीड लिमिटर, सभी-एलईडी लाइटिंग और USB-C चार्जिंग पोर्ट जैसे फीचर्स भी दिए गए हैं।

इंसानियत की जगह

विजय गर्ग

भूमध्य सागर के तट पर बसे यूनान की राजधानी एथेंस सुकरात जैसे दार्शनिक और उनके शिष्य प्लेटो की जन्म भूमि रही। वहां का एक प्रसंग बेहद महत्त्वपूर्ण है। एक दिन एक दार्शनिक संत डायोनिसिस दिन के उजाले या तेज धूप में लालटेन लेकर कुछ ढूंढ़ते हुए जा रहे थे, तो उन्हें देख कर धीरे-धीरे कुछ लोगों की भारी भीड़ इकट्ठा होती गई।

आज दुनिया के हर देश में लोप होती जा रही मानवीयता के चलते वास्तव में किसी मनुष्य को खोज पाना काफी मुश्किल होता जा रहा है। मगर इसके लिए जरूरी है कि हम मनुष्य होने के बुनियादी तत्त्वों की पहचान कर सकने में सक्षम हो सकें। अगर इंसानियत के तकाजे के मुताबिक देखें तो वास्तव में मनुष्य कहे जाने वाले लोगों की संख्या बेहद कम होती जा रही है । कोई भी क्षेत्र हो, वहां इंसानियत से लैस इंसान नहीं मिलते हैं। अगर कहीं कोई भला आदमी दिख जाता है, तो उसे 'मूर्ख' या 'दुनियादारी का 'पागल' करार दे दिया जाता । आज हर क्षेत्र की आपाधापी और बेलगाम दौड़ में, प्रतिस्पर्धा के इस दौर में मनुष्य दिखाई नहीं देते। किसे हम मनुष्य कहें, यह प्रश्न पैदा होता है । जिसमें अन्य के प्रति दया और परोपकार का भाव हो, मुसीबत या कठिनाइयों से घिर जाने पर परस्पर निस्वार्थ सहयोग की भावना हो, जिसमें सत्य, अहिंसा, त्याग, दया, प्रेम, शुद्धता, नैतिकता, ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा के भावों से युक्त मनुष्यत्व हो, उसे मनुष्य कहा जा सकता है।

भूमध्य सागर के तट पर बसे यूनान की राजधानी एथेंस सुकरात जैसे दार्शनिक और उनके शिष्य प्लेटो की जन्म भूमि रही। वहां का एक प्रसंग बेहद महत्त्वपूर्ण है । एक दिन एक दार्शनिक संत डायोनिसिस दिन के उजाले या तेज धूप में लालटेन लेकर कुछ ढूंढ़ते हुए जा रहे थे, तो उन्हें देख कर धीरे-धीरे कुछ लोगों की भारी भीड़ इकट्ठा होती गई। चौराहे पर जब वे पहुंचे तो भीड़ ने उन्हें घेर लिया। भीड़ में से एक मनचले ने उनसे पूछा कि दिन की इस तेज धूप में जलती लालटेन लेकर तुम क्या ढूंढ़ रहे हो । संत ने उत्तर दिया कि मैं मनुष्य को ढूंढ़ रहा हूं, इंसान को ढूंढ़ रहा हूं। एक उद्दंड व्यक्ति ने कहा कि क्या हम तुम्हें इंसान दिखाई नहीं देते। इस पर डायोनिसस ने कहा कि नहीं, तुम मानव नहीं हो... तुममें से तो कोई किसी का स्वामी है, दास है, पिता है, बेटा है, नेता है, पदाधिकारी, रसूखदार है, अंध धार्मिक है, लेकिन मनुष्य नहीं है; मैं मनुष्य और उसकी मानवीयता को ढूंढ़ रहा हूं ।

इंसानियत और मानवीयता की चाह में हर सामान्य आदमी को अपने और पराए स्वत्व की रक्षा के लिए संभल कर ही चलना होगा, क्योंकि धुरीहीनता संगठन के हर क्षेत्र व्याप्त है और मतलबपरस्तों की काई हर ताल तलैया पर जम चुकी है। हर जगह विवेकहीन भीड़ दिखती है, जो न तो कुछ वास्तविक संदर्भ समझ पाती है, न उसके मुताबिक अपनी प्रतिक्रिया दे पाती है। अब नारे-उ - जलूस और सभाओं से आम आदमी की आस्था उठ गई है ।

वह इनमें राजनीतिक स्वार्थ और आचरण की मक्कारी देख रहा ।

जबकि आज एक व्यवस्था में रहते हुए मनुष्य का जीवन राजनीतिक ढांचे से ही तय होता है। दूसरी ओर, ऐसी भीड़ खड़ी हो रही है, या कहें कि भीड़ खड़ी की जा रही है, जिसे वैसे मुद्दों से कोई वास्ता नहीं, जो मानवीयता को बचाने की मांग करते हों । उसे सिर्फ वह उन्माद प्यारा लगने लगा है, जिसमें डूब कर वह वैसी सारी समस्याओं को भूल जाए, जो उसकी और समूचे समाज और देश को प्रभावित करती हों । उसकी जिंदगी की गुणवत्ता निम्नतर हो जाए, लेकिन वह अफवाह और आक्रामकता के प्रभाव में जीना पसंद करने लगता ।

दरअसल, मनुष्य और मानवीय मूल्यों के प्रति निष्ठा का जहां अभाव हो जाता है, वहां किसी की वाणी भी अर्थहीन हो जाती है ।

यह विडंबना है कि आज मानव मूल्यों का इतना पतन होता जा रहा है कि समस्याओं के प्रति हमारी संवेदनाएं कुंद हो गई लगती हैं । इसी का परिणाम है कि हम स्थितियों को सही संदर्भ, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखने की क्षमता खोते जा रहे हैं और परस्पर किसी भी व्यक्ति, राष्ट्र या समाज की अस्मिता पर चोट करने से बाज नहीं आते। सामाजिक और मानवीय व्यवहार भूलकर व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षाएं या अनुशासन की आड़ में एकाधिकारशाही थोपने लग जाते हैं। अपनी ठिठुरन दूर करने के लिए दूसरों को मिटाकर उनकी आग में हम अपनी ठंडक को मिटाने लग जाते हैं। हम मनुष्य जन्म लेने भर से यह समझने लगते हैं कि हम मनुष्य हैं। जबकि सही बात तो यह है कि हमारे कर्म, व्यवहार, सद्भावना, कामना और सदाचार की भावना से प्रेरित क्रियाकलाप ही हमें मनुष्य बनाने का आभास कराते हैं। मनुष्य किसी भी पद पर हो या कितना ही रईस हो, है वह एक सामाजिक प्राणी । उसे सबका खयाल रखकर अपना व्यवसाय, कार्य, व्यवहार, नेतृत्व करना चाहिए । नैतिक मूल्यों से रहित होकर चलना खोखलापन है ।

अपने अति कलुषित लोभ में दूसरों के हक को छीनने की प्रवृत्ति और दूसरों के शवों पर अपनी भव्य इमारत खड़ी करना, अपनी विचारधारा के महल खड़े करने की कुप्रवृत्ति छोड़नी होगी। सबके हितों की चिंता करें तो मानवता का पोषण हो सकता है। हम क्यों अपने लिए पक्की सड़क और दूसरों के लिए गहरी खाई और गड्ढों से युक्त बनाएं। मानवता के पोषण के लिए सोचना होगा । मानवता के होते जा रहे ह्रास में कवि दुष्यंत की ये पंक्तियां कितनी सटीक बैठती हैं- 'इस सड़क पर इस कदर कीचड़ बिछी है/ हर किसी का पांव घुटनों तक सना है ।' व्यवहार, व्यवसाय, राजनीति, धर्म के अनुपालन, पद प्राप्ति, जातिगत अहं, सत्ता प्राप्ति की लिप्सा में हर कोई मानवता को ताक पर रखता जा रहा है। बात तो तब बने, जब हम नैतिक मूल्य धारण कर आगे बढ़ें मानवता का राष्ट्रगान हो ।

चमत्कार की तरह 'आवाज'

विजय गर्ग

नित नए आविष्कार संचार, मनोरंजन और संवाद को लेकर हमारे अनुभव को बदलते जा रहे हैं। ऐसा ही एक नवाचार है 'ऑडिबल एन्क्लेव', जो बिना किसी डिवाइस के आपके कान तक आवाज पहुंचा देता है और दूसरों को सुनाई भी नहीं देता है, यानी सार्वजनिक जगहों पर भी आप बिना हेडफोन के गोपनीय मोबाइल या लैपटॉप की आवाज सुन सकते हैं।

ऑडियो इंजीनियरिंग को अलग स्तर पर ले जाने वाली इस नई तकनीक को पेंसिल्वेनिया स्टेट यूनीवर्सिटी के इंजीनियरिंग कॉलेज 'पेन स्टेट कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग' के वैज्ञानिकों ने ईजाद किया है। यह व्यक्तिगत रूप से सुनने के अनुभव को नया आयाम देती है। हालांकि अभी इसके व्यावहारिक उपयोग में कुछ चुनौतियां बाकी हैं, लेकिन आने वाले वर्षों में यह ध्वनि संचार में क्रांतिकारी बदलाव ला सकती है। यह शोध 'प्रोसीडिंग्स ऑफ द नेशनल एकेडमी ऑफ साइंसेज' में प्रकाशित हुआ है।

क्या है 'ऑडिबल एन्क्लेव'

यह एक तरह से ध्वनि का बुलबुला है, जो इसे सीधे लक्षित स्थान तक पहुंचाता है। शोध टीम के प्रमुख विश्वविद्यालय में ध्वनि विज्ञान के और प्रोफेसर यून जिंग के अनुसार, उन्होंने ध्वनि के स्थानीयकृत पॉकेट्स बनाकर सुनने की सीमा को एक सटीक बिंदु पर निर्धारित कर दिया, यानी ध्वनि उत्पन्न होने वाले स्रोत से लेकर सुनने वाले व्यक्ति के बीच एक बुलबुला बना दिया। इसे ही 'ऑडिबल एन्क्लेव' कहा जाता है। एक एन्क्लेव में एक श्रोता ही ध्वनि सुन सकता है। आस-पास खड़े अन्य लोग नहीं सुन सकते हैं। भले ही वे किसी बंद स्थान, वाहन या सीधे ऑडियो स्रोत के सामने खड़े हों।

कैसे काम करती है तकनीक

'ऑडिबल एन्क्लेव' दो नॉन-लीनियर अल्ट्रासोनिक बीम उत्सर्जित करने पर बनते हैं, जिसमें ध्वनि को केवल दोनों अल्ट्रासोनिक बीम के क्रॉस प्वाइंट पर ही सुना जा सकता है, यानी केवल एक किरण से ध्वनि नहीं सुनाई देती है। ऐसे में यदि किरण किसी मानव कान से गुजरती भी है। तो सुनाई नहीं देती है। केवल वहीं पर सुनाई देती है, जहां पर दोनों किरणें मिलती हों। इसके लिए वे एक ध्वनिक मेटासर्फेस लेंस के साथ युग्मित दो अल्ट्रासाउंड ट्रांसड्यूसर का उपयोग करते हैं। इससे निकलने वाली किरणें स्वतः ही एक निश्चित बिंदु पर प्रतिच्छेद करती है। उस बिंदु पर खड़ा व्यक्ति ध्वनि सुन सकता है। ध्वनि को एक प्रकार से निर्देशित कर दिया जाता है। यह ठीक वैसे ही है, जैसे टॉर्च की रोशनी पड़ती है।

यह बीच में आने वाली बाधाओं से भी प्रभावित नहीं होती है। शोध टीम में शामिल वैज्ञानिक जिया-जिन झोंग के अनुसार, यह मानव सिर जैसी बाधाओं को भी पार कर सकती है। परीक्षण के दौरान उन्होंने डमी सिर का उपयोग किया। उसके कानों में आवाज रिकॉर्ड करने के लिए माइक्रोफोन लगाया गया था, लेकिन कोई ध्वनि नहीं पहुंची और आसानी से किरण तय बिंदु पर पहुंच गई। यह एक प्रकार का आभासी हेडसेट है। अभी यह 60 डेसिबल ध्वनि को एक मीटर की दूरी तक स्थानांतरित कर सकता है, लेकिन वैज्ञानिकों का मानना है कि अल्ट्रासाउंड की तीव्रता बढ़ाकर इसकी दूरी और ध्वनि को बढ़ाया जा सकता है।

तकनीकी और नीति : विजय गर्ग

आधुनिक जगत में तकनीकी और वैज्ञानिक प्रगति की गति इतनी तीव्र है कि समाज लगातार बदल रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, स्वचालित मशीनें, जैव प्रौद्योगिकी और डेटा विज्ञान जैसे क्षेत्र हर दिन नई संभावनाएं प्रस्तुत कर रहे हैं । दूसरी ओर, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र और राजनीति विज्ञान हमें यह समझने में मदद करते हैं कि इन तकनीकों का प्रभाव मानव जीवन पर क्या होगा। फिर भी, अक्सर पाया जाता है कि विज्ञान और सामाजिक विज्ञान के विशेषज्ञ एक- दूसरे को हल्के में लेते हैं। तकनीकी विशेषज्ञों को लगता है सामाजिक विज्ञान में ठोस गणना और प्रमाणों की कमी होती है, जबकि समाजशास्त्रियों को लगता है कि तकनीक केवल लाभ कमाने के लिए बनाई जाती है और मानवीय पहलुओं की उपेक्षा करती है। विज्ञान और तकनीकी क्षेत्र की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता इसके तर्कसंगत, गणनात्मक होने और परीक्षण पर आधारित दृष्टिकोण है । यह क्षेत्र ठोस प्रमाणों और विश्लेषण पर आधारित होता है, जहां किसी भी निष्कर्ष को तभी स्वीकार किया जाता है जब वह प्रयोगों और आंकड़ों से प्रमाणित हो । नवाचार, अनुसंधान और तकनीकी उन्नति के माध्यम से यह क्षेत्र समाज को नई क्षमताएं प्रदान करता है। चाहे वह चिकित्सा में नए उपचार विकसित करना हो, ऊर्जा के सतत स्रोत खोजना हो, या संचार, परिवहन और स्वचालन को अधिक कुशल बनाना हो । विज्ञान और तकनीक का प्रभाव स्पष्ट मापने योग्य और तत्काल परिणाम देने वाला होता है, जिससे इसका व्यावहारिक महत्त्व और विश्वसनीयता सिद्ध होती है।

यह क्षेत्र वस्तुनिष्ठता पर आधारित है, जहां व्यक्तिगत धारणाओं की अपेक्षा तर्कसंगत और दोहराए जा सकने वाले निष्कर्षों को प्राथमिकता दी जाती है। वहीं सामाजिक विज्ञान और मानविकी की विशिष्टता इसकी संदर्भ पर आधारित समझ, प्रणालीगत दृष्टिकोण और मानवीय व्यवहार के गहन विश्लेषण में निहित होती है ।

यह क्षेत्र समाज की संरचना, मानव प्रेरणाओं, सांस्कृतिक विविधता और नीति निर्माण के जटिल पहलुओं को समझने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है । सामाजिक विज्ञान यह सुनिश्चित करता है कि तकनीकी नवाचार केवल वैज्ञानिक उपलब्धियों तक सीमित न रहें, बल्कि सामाजिक आवश्यकताओं और नैतिकता के अनुरूप हों। यह मात्रात्मक से अधिक गुणात्मक विश्लेषण पर बल देता है । कहना न होगा कि इनमें से किसी एक की भी उपेक्षा समाज के स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हानिकारक सिद्ध हो सकता है ।

उन्नीसवीं शताब्दी में ब्रिटिश चिकित्सक जान स्नो ने लंदन में हैजा के प्रकोप का अध्ययन किया और पाया कि यह दूषित जल की आपूर्ति से फैल रहा था। यह खोज शुद्ध रूप से वैज्ञानिक थी, लेकिन इस जानकारी को लागू करने के लिए सामाजिक विज्ञान और नीति-निर्माण की आवश्यकता थी। सरकार ने सार्वजनिक स्वास्थ्य नीतियां बनाईं, स्वच्छता के नियम लागू किए और शहरी जल आपूर्ति प्रणालियों को बेहतर बनाया, जिससे भविष्य में हैजा जैसी महामारियों को रोकने में मदद मिली। यह विज्ञान और सामाजिक विज्ञान के सहयोग का एक उत्कृष्ट उदाहरण था, जिसने न केवल एक स्वास्थ्य संकट को रोका, बल्कि शहरी नियोजन को भी नई दिशा दी ।

विज्ञान और तकनीक ने चिकित्सा के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति की है। नए टीके, 'रोबोटिक सर्जरी' या रोबोट के जरिए शल्य क्रिया और जीन थेरेपी जैसे नवाचार सामने आए हैं, लेकिन केवल वैज्ञानिक खोज ही पर्याप्त नहीं है। टीकों को सफलतापूर्वक लोगों तक पहुंचाने के लिए सामाजिक विज्ञान की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है । उदाहरण के लिए, कोविड- 19 महामारी के दौरान वैज्ञानिकों ने रिकार्ड समय में टीका विकसित किया, लेकिन कई देशों में लोगों में टीका लगवाने को लेकर झिझक देखी गई। इसे दूर करने के लिए समाजशास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों और नीति निर्माताओं ने मिलकर रणनीतियां बनाई, ताकि जनता को शिक्षित किया जा सके । इसी तरह, कृत्रिम बुद्धिमत्ता यानी एआइ और 'मशीन लर्निंग' यानी मशीनों के सीखने की क्षमता में विकास जैसी स्थिति ने उद्योगों में क्रांति ला दी है, लेकिन इनके नैतिक पहलुओं की जांच पड़ताल भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है। अगर कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित निर्णय केवल डेटा और एल्गोरिद्म पर निर्भर करें और मानवीय मूल्यों को न समझें, तो समाज में भेदभाव और असमानता बढ़ सकती है। मसलन, किसी भर्ती प्रक्रिया में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग किया जाए और यह पूर्वाग्रहपूर्ण आंकड़ों और ब्योरों पर आधारित हो, तो यह अनजाने में जाति, लिंग या सामाजिक पृष्ठभूमि के आधार पर भेदभाव कर सकता है। ऐसे मामलों में सामाजिक विज्ञान के विशेषज्ञों की भूमिका यह सुनिश्चित करने में होती है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता नैतिक रूप से डिजाइन किया जाए और समावेशी हो ।

विज्ञान और समाजशास्त्र विरोधी नहीं, बल्कि एक दूसरे के पूरक हैं। समय के साथ सिर्फ जीव नहीं, बल्कि उसकी समस्याओं के स्वरूप में भी बदलाव होता है । जटिल समस्याओं का सामना एकजुट होकर करने से पार पाने की संभावना बढ़ती है। ऐसे अन्य तमाम क्षेत्र जहां वैज्ञानिक और सामाजिक इंजीनियरों को व्यक्तिगत मतभिन्नताओं को दरकिनार करते हुए हाथ मिलाना ही होगा। इन दोनों क्षेत्रों को किसी अलग दुनिया की चीज मानने की प्रवृत्ति से हमें बाज आना होगा। जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए वैज्ञानिक हस्तक्षेप आवश्यक हैं, लेकिन अगर सरकारें, समाजशास्त्री और अर्थशास्त्री इसे व्यवहारिक नीतियों में परिवर्तित न करें, तो सबसे प्रभावशाली तकनीकी समाधान भी निष्प्रभावी रह जाएंगे। आर्थिक असमानता, स्वास्थ्य नीतियां, साइबर सुरक्षा, शिक्षा सुधार जैसे आयामों में दोनों की सहकारिता से दूरगामी और दुरुस्त परिणाम हासिल होंगे।

कहानी: मूल्यांकन

विजय गर्ग

"मम्मीजी, नेहा दीदी का फोन है." स्वरा की आवाज़ पर नलिनी ने फोन हाथ में लिया. 'हैलो' कहते ही नेहा की घबराई-सी आवाज़ आई, "मम्मी, एक प्रॉब्लम हो गई है. मां बाथरूम में गिर गई हैं. उनके बाएं हाथ में फ्रैक्चर आया है." "अरे! कैसे... कहां... कब... अभी कैसी हैं? कोई है उनके पास..." नेहा की 'मां' यानी सास के गिरने की ख़बर सुनकर नलिनी ने एक साथ कई सवाल पूछ डाले, तो प्रत्युत्तर में नेहा रोनी आवाज़ में बोली, "वो इंदौर में ही हैं. आज रात उन्हें अहमदाबाद के लिए चलना था. उन्हें हाथ में फ्रैक्चर हुआ है. अब कैसे आएंगी. मम्मी, अब मेरा क्या होगा... दो हफ़्ते बाद सलिल को कनाडा जाना है और अगले हफ़्ते मेरी डिलीवरी है. मम्मी, आप आ पाओगी क्या?" नेहा के पूछने पर नलिनी एकदम से कोई जवाब नहीं दे पाई. एक महीने पहले ही बेटे का ब्याह किया है.

नई-नवेली बहू को देखते हुए ही प्रोग्राम तय हुआ था कि डिलीवरी के समय नेहा की सास अहमदाबाद आ जाएंगी और एक-डेढ़ महीना रुककर वापस आएंगी, तब वह जाएगी. ऐसे कम से कम ढाई-तीन महीने तक नेहा और उसके बच्चे की सार-संभाल हो जाएगी. "तू घबरा मत, देखते हैं क्या हो सकता है." नेहा को तसल्ली देकर नलिनी ने फोन रखा और प्रेग्नेंट बेटी की चिंता में कुछ देर यूं ही बैठी रही. परिस्थिति वाकई विकट थी. समधनजी के हाथ में फ्रैक्चर होने से उनके साथ-साथ सबके लिए मुश्किलें बढ़ गईं. क्या-कैसे होगा इस चिंता से उन्हें बहू स्वरा ने उबारते हुए कहा, "मम्मीजी आप दीदी के पास अहमदाबाद चली जाइए. मैं यहां सब संभाल लूंगी."

नलिनी के हिचकने पर उसके ससुर भी बोले, "इतना सोचनेवाली कौन-सी बात है. नील तो है यहां... अब तो स्वरा भी है. तुम और उपेन्द्र तुरंत निकलो." "पर पापाजी, आप कैसे रहेंगे? आपकी देखभाल, परहेज़ी खाना..." "सब हो जाएगा, मेरे बहू-बेटे नहीं होंगे तो क्या, तुम्हारे बेटा-बहू तो हैं ना." "अरे पापाजी, नील को तो ऑफिस से फुर्सत नहीं है और इसे आए अभी महीनाभर ही हुआ है. इनके भरोसे कैसे..." नलिनी हिचकिचाई, तो 80 बरस के बूढ़े ससुरजी हंसते हुए बोले, "मैं कोई छोटा बच्चा हूं, जो अपनी देखभाल न कर पाऊं... और न स्वरा बच्ची है, जो घर न संभाल पाए.

तुम्हारी शादी हुई थी, तब तुमने २० बरस की उम्र में सब संभाल लिया था. और तुम्हारी सास तो 16 बरस की ही थी, जब ब्याहकर आई थी. अरे, स्वरा कैसे नहीं संभालेगी घर... क्यों स्वरा, संभालेगी न?" "हां जी, दादाजी..." क्या कहती स्वरा और क्या कहती नलिनी अपने ससुर को कि तब के और आज के ज़माने में बहुत फ़र्क़ है. नलिनी का सिर अपने ससुर के सामने श्रद्धा से झुक गया. विपरीत परिस्थितियों के चलते 'मैं ख़ुद को संभाल लूंगा.' कहकर उसका मनोबल बढ़ा रहे हैं, जबकि वह जानती है कि पापाजी को बाथरूम तक जाना भारी पड़ता है. पापाजी और घर की ज़िम्मेदारी स्वरा के भरोसे छोड़ने में उन्हें डर ही लग रहा था. आजकल की लड़कियां क्या जानें घर की सार-संभाल... पर पापाजी और परिस्थितियों के आगे वह विवश थी. यूं तो स्वरा एक महीने से घर में है, पर अधिकतर समय तो मायके-हनीमून और घूमने-फिरने में ही निकल गया. वह स्वयं बेटे की शादी के बाद बड़े प्रयास से घर की व्यवस्था पुरानी पटरी पर लौटा पाई थी.

अब यूं अचानक घर छोड़-छाड़कर अहमदाबाद के लिए निकलने को मन नहीं मान रहा था, पर मौक़े की नज़ाकत समझते हुए घर की व्यवस्था-पापाजी के परहेज़ों और दवाइयों के बारे में नील-स्वरा को समझाकर वह और उपेन्द्र तुरंत हवाई जहाज से अहमदाबाद के लिए निकल गए. नौवें महीने के आख़िरी हफ़्ते में कब डिलीवरी हो जाए, कुछ पता नहीं. मम्मी-पापा को देखकर नेहा का सारा तनाव छूमंतर हो गया. उनके पहुंचने के चार दिन बाद ही उसने पुत्री को जन्म दिया. कुछ दिनों बाद दामाद सलिल कनाडा चले गए. नलिनी ने घर की सारी व्यवस्था संभाल ली और उपेन्द्र ने बाहर की. नेहा और नन्हीं परी के बीच समय कैसे निकलता, कुछ पता ही नहीं चलता. भोपाल फोन करने पर पापाजी- 'यहां की चिंता मत करो सब ठीक है' कहकर तसल्ली दे देते. 40 दिन बाद नेहा ने नलिनी से कहा, "मम्मी, अगले हफ़्ते सलिल आ जाएंगे. मैं भी चलने-फिरने लगी हूं. आप चाहो, तो भोपाल चली जाओ." यह सुनकर नलिनी ने राहत की सांस ली. मन तो घर में अटका ही था, सो नेहा के कहने पर दो दिन और रुककर नलिनी ने वापसी का टिकट करवा लिया. साथ ही उपेन्द्र और नेहा को कह दिया कि उनके भोपाल पहुंचने की ख़बर पापाजी, नील-स्वरा को कतई न दें. सरप्राइज़ का मज़ा रहेगा. सरप्राइज़ की बात सुनकर नेहा ख़ुशी-ख़ुशी मान गई, पर उपेन्द्र पहुंचने की सूचना न देने से कुछ असहज थे. रास्ते में ट्रेन में उन्होंने इस बाबत नलिनी से बात की, तो वह बोली, "पहली बार स्वरा के भरोसे पापाजी और घर की ज़िम्मेदारी छोड़ी है. पापाजी-नील तो सीधे-सादे हैं, जब भी फोन किया 'सब ठीक है, चिंता मत करो' कहते रहे. अचानक पहुंचने पर स्वरा का असली मूल्यांकन हो पाएगा कि वो घर संभालने में कितनी सक्षम और घरवालों के प्रति कितनी संवेदनशील है. यह सुनकर उपेन्द्र अवाक रह गए. नलिनी के फोन न करने के पीछे छिपी मानसिकता का उन्हें ज़रा भी भान नहीं था. वो तो समझे बैठे थे कि नलिनी अचानक पहुंचकर उन्हें सुखद आश्चर्य में डुबोने का मंतव्य रखती है. बिना किसी को सूचित किए उपेन्द्र और नलिनी घर पहुंचे, तो ख़ुद सरप्राइज़ हो गए, जब घर में ताला लगा देखा. बाहर का गेट किराएदार ने खोला और बताया कि सब लोग सुबह से ही बाहर हैं. घर के बरामदे में उन्हें बैठाकर वह चाभी लेने चला गया.

आसपास नज़र दौड़ाते नलिनी-उपेन्द्र बेतरह चौंके, जब उन्होंने पापाजी के कमरे की बेंत की आरामकुर्सी और मेज़ बरामदे में रखी देखी. किराएदार से चाभी लेकर ताला खोला, तो सकते में आ गए. पापाजी के कमरे में परदे और पेंटिंग्स के अलावा कुछ नहीं था. दीवान-आलमारी सब बरामदे से लगे छोटे-से गेस्टरूम में आ चुके थे. कमरे का हुलिया देखकर नलिनी को बहुत ग़ुस्सा आया. कितने सुरुचिपूर्ण ढंग से पापाजी का कमरा सजाया गया था. सुंदर परदे, पेंटिंग्स, केन की कुर्सियां, जिसमें मखमल की गद्दी लगी हुई थी. अख़बार रखने के लिए तिपाई... एक छोटा टीवी... सारी सुविधा से संपन्न बुज़ुर्ग आज उसकी अनुपस्थिति में गेस्टरूम में पहुंच गए थे. "कल की आई लड़की की हिम्मत देखो उपेन्द्र, पापाजी का ये हाल किया, तो हमारा क्या हाल करेगी बुढ़ापे में." आवेश में बड़बड़ाती हुई नलिनी पूरे घर में घूम आई थी. बाकी घर का हुलिया ठीक-ठाक ही था... नील के ऊपर भी उसे बहुत क्रोध आया. उसी समय नलिनी से मिलने बगलवाली पड़ोसन आ गई.

नलिनी को देखकर वह बोली, "तुम्हें ऑटो से उतरते देखा तो चली आई. अच्छा हुआ तुम आ गई. तुम नहीं थी, तो तुम्हारे ससुर का तो बड़ा बुरा हाल था. एक-दो बार आई मिलने तभी जाना कि तुम्हारी नई-नवेली बहू ने उन्हें अपने कमरे से बेदख़ल कर दिया है. मैं तो अक्सर उन्हें बरामदे या लॉन में भटकते देखती थी. अब हम लोग तो उसे कुछ कह नहीं सकते, वैसे भी आजकल की लड़कियां किसकी सुनती हैं. कहीं पलटकर मुझे कुछ कह देती तो भई, मैं तो न सह पाती. बस, तुम्हारे ससुर को देखकर बुरा लगता था. तुम लोगों ने उन्हें इतने आदर से रखा, पर तुम्हारी बहू ने तो..." वह बोल ही रही थी कि पापाजी की रौबदार आवाज़ आई, "बेटाजी, आप मेरे लिए इतना परेशान थीं, यह जानकर बड़ा अच्छा लगा, पर अपनी परेशानी मुझसे साझा कर लेतीं, तो ज़्यादा अच्छा होता." यह सुनकर पड़ोसन हकबका गई और नलिनी सिर पर आंचल रखकर ससुरजी के पांव छूने लगी. "आप कहां गए थे पापा? और अकेले कहां से आ रहे हैं?" "अकेला नहीं हूं स्वरा है बाहर. कोई जाननेवाला मिल गया है, उससे बात करने लगी है. पर ये बताओ, तुम लोग आनेवाले हो, ये किसी को बताया क्यों नहीं?" पापाजी ने पूछा तो उपेन्द्र बगलें झांकते हुए बोले, "नलिनी आप लोगों को सरप्राइज़ देना चाहती थी." उपेन्द्र की बात सुनकर पापाजी कुर्सी से अपनी छड़ी टिकाते बोले, "सरप्राइज़ तो हम अच्छे से हो गए, पर जान जाते तुम लोग आनेवाले हो, तो डॉक्टर का अपॉइंटमेंट न लेते. घर पर ही मिलते." "सब ठीक तो है पापा...?" उपेन्द्र ने चिंता से पूछा, तो वह बोले, "सब ठीक है भई, डायबिटीज़ कंट्रोल में है." "पापाजी आप यहां कैसे आ गए? मतलब, इस छोटे से गेस्टरूम में." नलिनी के पूछने पर वह बोले, "अरे, अभी इन्होंने तो बताया कि तुम्हारी बहू ने मुझे यहां भेज दिया और हां बेटाजी..." अब पापाजी पड़ोसन से मुख़ातिब थे, "तुम जो अभी मेरी बहू के कान भर रही थी कि मुझे मेरे कमरे से बेदख़ल कर दिया गया, तो सोचो, ऐसी हालत में तो मैं यहां दुखी-ग़मगीन-सा दिखता... और बेटे-बहू की नाक में दम न कर देता कि जल्दी आओ..." "सॉरी अंकलजी, मैंने जो महसूस किया, सो कह दिया नलिनी से." "दक़ीक़त यही है, हम जो महसूस करते हैं, वो सही पात्र से नहीं कहते. तुमने जो महसूस किया, उसकी चर्चा मुझसे कर लेती तो ठीक रहता. अब देखो, जैसे मैं अपने बेटे-बहू से नहीं कह पाया कि मेरे बड़े से कमरे में मुझे अकेलापन लगता है. नलिनी-उपेन्द्र ने इस घर का सबसे अच्छा कमरा मुझे दिया. इतने प्यार से सजाया-संवारा, पर सच कहूं तो कमरे से बरामदे और लॉन के बीच की दूरी के चलते आलसवश टहलना छूट गया." "अरे, तो ये बात पहले क्यों नहीं कही पापाजी?" नलिनी के कहने पर पापाजी भावुक होकर बोले, "संकोचवश न कह पाया.

कैसे कहता बेटी, जिस कमरे के परदे के सेलेक्शन के लिए तुम दस दुकानें घूमी हो, जिसके डेकोर के लिए तुम घंटों नेट के सामने बैठी हो, उस कमरे के लिए कैसे कह देता कि मुझे यहां नहीं रहना है. तू तो मेरी प्यारी बहू है, पर तेरी बहू तो मेरी मां बन गई. वह तो सीधे ही बोली, 'दादाजी, आप दिनभर कमरे में क्यों बैठे रहते हैं. आलस छोड़िए, बैठे-बैठे घुटने और ख़राब हो जाएंगे.' उसने मेरे कमरे से कुर्सी-मेज़ निकलवाकर बरामदे में डलवा दिया. मैंने कहा कि लेटने के लिए कमरे तक जाना भारी पड़ता है, तो यह सुनकर तुम्हारी बहू बोली, 'दादाजी जब तक सर्दी है, तब तक के लिए गेस्टरूम में शिफ्ट हो जाएं.' मुझे भी सही लगा. आराम करने की तलब होने पर बरामदे और लॉन से गेस्टरूम आना सुविधाजनक था. गेस्टरूम से लॉन-बरामदा सब दिखता है. जब मन करता है बरामदे में टहल लेता हूं... जब इच्छा हो, लॉन में पेड़-पौधे, फूल-पत्तियां देख लेता हूं... किराएदार के बच्चे खेलते हैं, तो उनकी आवाज़ मन में ऊर्जा भर देती है. किराएदार के बच्चे नीचे खेलने आते हैं, तो दो बातें उनसे भी कर लेता हूं... छोटावाला तो रोज़ नियम से शाम छह बजे लूडो ले आता है. बुरा न मानना बेटी, ये कमरा छोटा ज़रूर है, पर इसमें पूर्णता का एहसास है. चलने-फिरने में गिरने का डर नहीं रहता है.

आसपास खिड़की-दरवाज़े, मेज़-कुर्सी का सहारा है. छड़ी की ज़रूरत नहीं." "अरे वाह! मम्मीजी आ गईं..." सहसा स्वरा का प्रफुल्लित स्वर गूंजा. पैर छूते हुए वह चहकी, "अरे, बताया नहीं कि आप आ रहे हैं. पता होता तो आज हम हॉस्पिटल न जाते." नलिनी चुप रही, तो पापाजी बोले, "तुम्हारी मम्मी तुम्हें सरप्राइज़ देना चाहती थीं." स्वरा चहकते हुए बोली, "आज सरप्राइज़ का दिन है क्या...? मम्मीजी पता है दादाजी की सारी रिपोर्ट्स नॉर्मल आई हैं." "देख लो, मेरी सैर रंग लाई." पापाजी के कहने पर स्वरा बोली, "मम्मीजी, बड़े जोड़-तोड़ किए दादाजी को टहलाने के लिए... रोज़ हम कहते टहलने को, तो दादाजी आज-कल कहकर टाल देते और अपने कमरे में बंद रजाई ओढ़े ठिठुरते रहते थे. बस, एक दिन इलाज निकाला पापाजी की रजाई और दीवान कमरे से हटाकर यहां डाल दी. अब प्यासे को कुएं के पास तो जाना ही था. इस कमरे के पास बरामदा होने से इनका अड्डा यहीं जमने लगा है. बरामदे और लॉन की पूरी धूप वसूलते हैं." स्वरा हंस रही थी, पापाजी मुस्करा रहे थे, पर नलिनी मौन थी. उसे गंभीर देखकर स्वरा की हंसी थम गई.

वह कान पकड़ते हुए बोली, "सॉरी मम्मी, नील ने पहले ही कहा था कि मेरी हरकत पर मुझे ख़ूब डांट पड़नेवाली है. सोचा था जब आप आएंगी, तब तक जनवरी की कड़ाके की सर्दी निकल जाएगी. आपके आने से पहले सारी व्यवस्था पहले जैसी कर दूंगी. पर आप तो बिना बताए आ गईं और मेरी ख़ुराफ़ात पकड़ी गई." यह सुनकर नलिनी गंभीरता से बोली, "बताकर आती, तो मूल्यांकन कैसे करती." "किस बात का?" स्वरा ने अचरज से पूछा, तो नलिनी बोली, "सिक्के के दूसरे पहलू का मूल्यांकन... सिक्के का एक पहलू सही तस्वीर नहीं दिखाता है ये आज जान लिया. अपने जीवन में मैंने कई बुज़ुर्गों को उपेक्षित जीवन जीते देखा है. जब घर बनवाया, तभी सोच लिया था कि पापाजी को सबसे बड़ा, सुंदर और आरामदायक कमरा देंगे, पर इस चक्कर में हमने पापाजी को कमरे से ही बांध दिया. साथ ही अकेलेपन से भी. इसका तोड़ निकालना पड़ेगा. सर्दी तक तो यहां ठीक है, पर गर्मियों में पुराने कमरे में रहेंगे पापाजी. पापाजी के पुराने कमरे में लाइब्रेरी शिफ्ट करके एक छोटा-सा सोफा और क्वीन साइज़ बेड लगा देंगे.

आने-जानेवाले पापाजी के कमरे में बैठेंगे, ताकि वहां रौनक़ भी रहे और बड़ा कमरा छोटा भी लगे और पापाजी का दिल भी लगा रहे." "अरे वाह! मम्मीजी, ये तो और भी बढ़िया आइडिया है. वैसे दादाजी दिन में यहां और रात को वहां सो सकते हैं." "ये लो जी, एक और आइडिया." उपेन्द्र हंसकर बोले, तो पापाजी बनावटी दुख के साथ कहने लगे, "इसका मतलब है कि मुझे दोनों कमरों की देखभाल करनी होगी." स्वरा हंसकर बोली, "और नहीं तो क्या. इसी बहाने आपका एक कमरे से दूसरे तक चलना-फिरना तो होगा. कम से कम ये तो नहीं कहेंगे, हाय मेरा घुटना जाम हो गया." अपनी नकल करती स्वरा को देख पापाजी मुस्कुराकर बोले, "नलिनी, तेरी बहू बहुत शरारती है." यह सुनकर नलिनी तपाक से बोली, "मेरी बहू नहीं पापाजी, आपकी मां..." सब हंसने लगे.

इस बीच किराएदार के बच्चों की गेंद बरामदे में आ गई, जो पापाजी दो कदम चलने से कतराते थे, वह बच्चों की गेंद उठाने के लिए लॉन की ओर बढ़ रहे थे. नलिनी-उपेन्द्र के लिए यह दृश्य सुखद था. "आंटीजी, आप चाय पियेंगी?" स्वरा ने पड़ोसन से पूछा, तो वह 'घर में काम बहुत है' कहते हुए उठ गई. शायद उन्हें भी सिक्के के दूसरे पहलू का भान हो गया था. जाती हुई पड़ोसन को नलिनी ने नहीं रोका, उसका ध्यान तो पापाजी की ओर था... जो खिलखिलाते चेहरे के साथ गेंद बच्चों की ओर उछाल रहे थे.

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

'दिल्ली का बजट जनता का बजट होगा', सीएम रेखा गुप्ता ने बताया सरकार की प्राथमिकता; सोमवार से शुरू होगा सत्र

विकसित दिल्ली बजट में दिल्लीवासियों के सुझावों को प्राथमिकता दी जाएगी। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा कि यह बजट वास्तव में जनता का बजट होगा। बजट में महिलाओं गरीबों छात्रों युवाओं और श्रमिकों आदि के जीवन स्तर को सुधारने का प्रयास होगा। बजट में बेहतर शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा बेहतर बुनियादी ढांचे प्रदूषण नियंत्रण और जलनिकासी जैसे मुद्दों के समाधान का प्रयास दिखेगा।

नई दिल्ली। दिल्ली की भाजपा सरकार द्वारा लाए जा रहे विकसित दिल्ली बजट में जनता के सुझावों को प्राथमिकता होगी। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने कहा कि यह बजट वास्तव में जनता का बजट होगा। बजट में महिलाओं, गरीबों, छात्रों, युवाओं और श्रमिकों आदि के जीवन स्तर को सुधारने का प्रयास होगा। बजट में बेहतर शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा, बेहतर बुनियादी ढांचे, प्रदूषण नियंत्रण और जलनिकासी जैसे मुद्दों के समाधान का प्रयास दिखेगा।

उन्होंने कहा कि बजट को लेकर करीब 10 हजार लोगों ने अपने सुझाव दिए हैं। इसमें से ईमेल के जरिए 3,303 और वॉट्सऐप के जरिए 6,982 सुझाव मिले हैं। कहा कि दिल्ली विधानसभा का बजट सत्र सोमवार को खीर समारोह के साथ शुरू होगा।

बजट के लिए समाज के विभिन्न वर्गों से लिए सुझाव

इस बारे में मुख्यमंत्री गुप्ता ने अपनी कैबिनेट के दो मंत्रियों आशीष सूद और मनजिंदर सिंह सिरसा के साथ शनिवार को सचिवालय में प्रेसवार्ता कर इसकी जानकारी दी। गुप्ता ने कहा कि दिल्ली सरकार ने बजट तैयार करने के लिए पेशेवरों सहित समाज के विभिन्न वर्गों से सुझाव लिए हैं। उन्होंने कहा कि बजट में जनता की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने पर ध्यान दिया जाएगा और इसमें रोजगार सृजन के प्रविधान होंगे।

बजट विकसित दिल्ली के सपने को करेगा पूरा: रेखा गुप्ता

उन्होंने कहा कि दिल्ली की भाजपा सरकार यह सुनिश्चित करेगी कि बजट प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 'विकसित दिल्ली' के सपने को पूरा करें। 'विकसित दिल्ली बजट' के लिए महिलाओं, शिक्षाविदों, व्यापारियों, औद्योगिक संगठनों, किसानों, विधायकों, सांसदों, युवाओं, डॉक्टर, सीए, नगर निगम पार्षद एवं कर्मचारी, झुग्गी निवासियों और इन्फ्लुएंसर्स आदि के साथ संवाद किया गया।

इस बार विधानसभा का बजट सत्र 24 मार्च से 28 मार्च तक चलेगा और जरूरत पड़ी तो सत्र आगे भी बढ़ाया जा सकेगा और बजट 25 मार्च को पेश किया जाएगा।मुख्यमंत्री ने बताया कि जनता दिल्ली को एक विश्वस्तरीय राजधानी बनाने के लिए पूरी तरह से सरकार के साथ है।

दिल्ली का कोई वर्ग अछूता न रहे: रेखा गुप्ता

बजट पर मिले सुझावों का जिक्र करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि इन सुझावों में महिलाओं का आर्थिक विकास , यमुना की सफाई , शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण, जलभराव, प्रदूषण नियंत्रण और रोजगार आदि विषय प्रमुख रहे। उन्होंने कहा कि 'विकसित दिल्ली बजट' पर जनसंवाद का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि दिल्ली का कोई भी वर्ग सरकार की योजनाओ से अछूता न रहे। सरकार ने तकनीकी और संवाद के माध्यम से जनता से जुड़ने का प्रयास किया है।

जनता से सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली: रेखा गुप्ता

सीएम गुप्ता ने मिले सुझावों के लिए दिल्लीवासियों का धन्यवाद करते हुए कहा कि यह साबित करता है कि यह बजट वास्तव में जनता का बजट होगा। उन्होंने कहा कि सरकार ने ईमेल, वाट्सएप और संवाद के माध्यम से जनता से जुड़ने का प्रयास किया है और हमें इस प्रक्रिया में जनता की सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली है।

विकसित दिल्ली बजट में दिल्लीवासियों से प्राप्त हुए सुझावों को प्राथमिकता दी जाएगी और इसका प्रारूप दिल्लीवासियों की जरूरतों और आकांक्षाओं को ध्यान में रखकर तैयार किया जा रहा है। इस बजट में दिल्ली के आम नागरिक को प्राथमिकता दी जाएगी।

क्या अप्रैल से बैंकों में 5 दिन ही होगा काम? पीआईबी ने बताया पूरा सच

हाल ही में एक मीडिया रिपोर्ट में दावा किया गया था कि अप्रैल से बैंकों में 5 दिन ही काम होगा। वहीं दो दिन बैंकों की छुट्टी रहेगी। अभी देश के सभी बैंक में दूसरे शनिवार और चौथे शनिवार को छुट्टी रहती है। वहीं सभी प्राइवेट और सरकारी बैंकों रविवार को भी बंद रहते हैं। इस मीडिया रिपोर्ट को लेकर सरकार ने बड़ा खुलासा किया है।

नई दिल्ली। आज भी कई ऐसे काम है, जो बैंक में जाकर ही हो सकते हैं। मौजूदा समय में, सभी प्राइवेट और सरकारी बैंक महीने के दूसरे और चौथे शनिवार बंद रहते हैं। वहीं रविवार को भी बैंकों में छुट्टी रहती है। एक मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक अब कहा जा रहा है कि अब सभी बैंक सिर्फ 5 दिन ही काम करेंगे। जिसका मतलब हुआ कि देश के सभी प्राइवेट और सरकारी बैंकों में हर शनिवार और रविवार छुट्टी रहेगी। अभी प्राइवेट और सरकारी बैंक महीने के दो ही शनिवार बंद रहते हैं। ये भी कहा जा रहा था कि ये नियम एक अप्रैल से लागू होने वाला है। अब सरकार ने इसे लेकर बड़ा खुलासा किया है।

सरकार ने किया खुलासा

इस मीडिया रिपोर्ट को लेकर सरकार ने बड़ा खुलासा कर दिया है। पीआईबी यानी प्रेस सूचना ब्यूरो (Press Information Bureau) ने इस रिपोर्ट को खारिज कर दिया है। सरल शब्दों में कहा जाए पीआईबी ने इस रिपोर्ट को गलत बताया है। रिपोर्ट में ये दावा किया गया था कि 1 अप्रैल से देशभर में सभी प्राइवेट और सरकारी बैंक 5 दिन तक ही खुले रहेंगे। वहीं हर शनिवार और रविवार बैंकों में छुट्टी रहेगी। वहीं ये भी कहा गया, ये नियम आरबीआई के तहत लागू होगा।

पीआईबी ने इस पूरे दावे को गलत बताया है।

क्या कहता है RBI का नियम ?

देश की केंद्रीय बैंक, रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (Reserve Bank of India) द्वारा देश के सभी प्राइवेट और सरकारी बैंकों को नियंत्रित किया जाता है। आरबीआई के नियम के मुताबिक अभी देश के सभी प्राइवेट और सरकारी बैंक दूसरे और चौथे शनिवार को बंद रहते हैं। वहीं पहले, तीसरे और पांचवें शनिवार बैंक खुले रहते हैं। इसके साथ ही महीने के हर रविवार बैंकों में छुट्टी रहती है।

मार्च में कब-कब रहेंगे बैंक बंद

इस महीने बैंक 14 दिनों तक बंद रहने वाले हैं। इनमें शनिवार और रविवार के दिनों को भी शामिल किया गया हैं। 22 मार्च यानी कल बिहार दिवस के मौके पर सभी प्राइवेट और सरकारी बैंक बंद रहेंगे। वहीं 27 मार्च (शब-ए-कद्र) और 28 मार्च (जुम्मा-तुल-विद्रा) के दिन जम्मू-कश्मीर के सभी बैंक बंद रहने वाले हैं। इसके अलावा 31 मार्च के दिन ईद-उल-फितर के अवसर पर देश के कई राज्यों में बैंक बंद रहने वाले हैं। हालांकि हिमाचल प्रदेश और मिजोरम के सभी बैंक खुले रहेंगे।

किसी भी इमरजेंसी के लिए कैसे बनाएं फंड, कितनी होनी चाहिए रकम; देखें डिटेल्स

परिवहन विशेष न्यूज

भविष्य में कभी भी इमरजेंसी आ सकती है। इमरजेंसी के लिए हमेशा हमारे पास कुछ सेविंग रहनी ही चाहिए। ताकि हमें पैसों की कोई दिक्कत ना हो। ये इमरजेंसी शादी गंभीर बीमारी और बच्चे की उच्च शिक्षा इत्यादि हो सकता है। आइए जानते हैं कि इमरजेंसी के लिए कैसे फंड तैयार कर सकते हैं और कितनी रकम होना जरूरी है।

नई दिल्ली। कोई भी इमरजेंसी बताकर नहीं आती। हमें भविष्य में किसी भी तरह की इमरजेंसी का सामना करना पड़ सकता है। ऐसे में हमें इमरजेंसी जैसी स्थिति के लिए पूरी तरह से तैयार होना पड़ेगा।

इमरजेंसी में पैसों की कमी ना हो इसके लिए हमें एक मोटा फंड तैयार करना होगा।

कैसे तैयार करें इमरजेंसी फंड तैयार ?

इमरजेंसी फंड (Emergency Fund) बनाने के लिए आपका सेविंग करना बेहद जरूरी है। अगर आप इमरजेंसी फंड तैयार करना चाहते हैं, तो नीचे बताए गए तरीको को जरूर अपनाएं।

सबसे पहले आपको हर महीने मिलने वाली इनकम और खर्च का एक बजट तैयार करना होगा।

इसके जरिए पता लगाया जा सकता है कि आप कितना पैसा बचा पाएंगे।

इसी बचत से आपको एक फंड इमरजेंसी के लिए भी रखना होगा।

आप इन पैसों को कहीं निवेश भी कर सकते हैं। हालांकि इस बात का ध्यान दें कि निवेश प्लेटफॉर्म ऐसा हो, जहां से आप बिना किसी परेशानी के पैसा निकाल सकें।

कितनी रकम होना है जरूरी ?

इमरजेंसी के लिए तय कई रकम आपकी सैलरी पर निर्भर करती है। इसके साथ ही इस बात पर भी कि सैलरी से कितना पैसा बचता है। ऐसा कहा जाता है कि व्यक्ति को 3 से 6 महीने के खर्च के बराबर इमरजेंसी फंड रखना चाहिए।

उदाहरण के लिए अगर आप हर महीने 30 हजार रुपये खर्च करते हैं, तो आपको कम से कम 90 हजार रुपये इमरजेंसी के लिए रखने चाहिए। ऐसे ही अगर सैलरी 50 हजार रुपये है और 20 हजार रुपये खर्च हो जाते हैं। तो कम से कम इमरजेंसी के लिए 60 हजार रुपये जरूर रखें।

सरल शब्दों में कहें तो आपको एक महीने के खर्चे को 3 या 6 से गुणा करना होगा।

इमरजेंसी फंड= एक महीने में किया गया खर्च x 3 या एक महीने का खर्च x 6

इमरजेंसी फंड क्यों है जरूरी ?

भविष्य कभी भी हमें किसी भी तरह की इमरजेंसी का सामना करना पड़ सकता है। ऐसे समय के लिए हमेशा तैयार रहना जरूरी है। इमरजेंसी फंड हमें भविष्य में होने वाली किसी भी आर्थिक समस्या से निपटने के लिए सक्षम बनाता है।

आप छोटी रकम से भी इमरजेंसी फंड तैयार कर सकते हैं। ये फंड आपकी सैलरी पर निर्भर करता है। लेकिन हमेशा ही अपनी सैलरी का कुछ हिस्सा इमरजेंसी के समय के लिए जरूर रखें।

क्या है पीएम सूर्या घर मुफ्त बिजली योजना ? मुफ्त बिजली के साथ कमाई का भी मिलेगा मौका

पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना की शुरुआत साल 2024 में की गई थी। इस योजना के तहत हाल ही में लगभग 27 हजार लोगों को ट्रेन किया गया है। ये सभी लोग डीजीटी (Directorate General of Training) द्वारा ट्रेन किए गए हैं। इस योजना के तहत लोगों को फ्री बिजली दी जाती है। इसमें आपको कमाई का मौका मिलता है।

नई दिल्ली। 1 फरवरी २०२4 को वित मंत्री निर्मला सीतारमण ने पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना की घोषणा की थी। इस योजना के तहत सरकार का उद्देश्य 1 करोड़ घरों को हर महीने ३०० यूनिट तक मुफ्त बिजली प्रदान करना है। इस योजना के तहत घरों में सोलर पैनल्स इंस्टॉल किए जाते हैं। वहीं इस योजना के तहत सरकार लोगों को कमाने का मौका भी देती है। आप इन सोलर पैनल्स को सरकार द्वारा ट्रेन्ड व्यक्तियों से लगा सकते हैं। अगर आप भी ज्यादा बिजली के खर्चे से परेशान है, तो इस योजना का लाभ उठा सकते हैं।

१7 हजार लोगों को किया ट्रेन : इस योजना की ऑफिशियल वेबसाइट जारी एक नोटिस के जरिए ये बताया गया है कि हाल ही में सरकार ने १6,898 लोगों को सोलर पैनल्स इंस्टॉल करने की ट्रेनिंग दी गई है। ये ट्रेनिंग एमएसडीई (Ministry of skill development and Entrepreneurship) के तहत दी गई है।

इस ट्रेनिंग का उद्देश्य ज्यादा से ज्यादा घरों तक पीएम सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना के तहत बिजली देना है। आपके घरों में इन्हीं ट्रेन्ड व्यक्तियों के द्वारा सौलर पैनल इंस्टॉल किए जाएंगे। वहीं सोलर पैनल खरीदने के लिए सरकार द्वारा सब्सिडी दी जाती है।

कैसे कमाएं 15 हजार रुपये ? : प्रधानमंत्री सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना के तहत लोगों को कमाने का मौका भी दिया जा रहा है। आप सोलर पैनल सिस्टम के तहत बिजली पैदा कर उसे बिजली वितरण कंपनियों को बेचकर पैसे बना सकते हैं।

उदाहरण के लिए अगर आप २० किलोवाट का सोलर पैनल सिस्टम लगाते हैं, तो 100 यूनिट तक बिजली पैदा हो सकती है। जिसे आप 5 रुपये प्रति यूनिट के हिसाब से बेच सकते हैं। जिससे घर बैठे-बैठे आपकी आसानी से 15 हजार रुपये की कमाई हो जाएगी।

क्या है योजना के लिए पात्रता ?

अगर आप इस स्कीम में अप्लाई करना चाहते हैं, तो आपको नीचे बताई गई पात्रता को पूरा करना होगा।

योजना में अप्लाई करने के लिए भारत का मूलनिवासी होना जरूरी है।

आवेदनकर्ता की उम्र 18 साल से अधिक होना अनिवार्य है।

इस योजना के तहत गरीब वर्ग और मध्यम वर्ग के लोगों को प्राथमिकता मिलेगी।

आवेदनकर्ता का बैंक खाता, आधार कार्ड से जुड़ा हो।

आधार कार्ड में मोबाइल नंबर और एड्रेस को कितनी बार किया जा सकता है अपेडट, क्या कहता है नियम

आधार कार्ड आज एक जरूरी डॉक्यूमेंट बन गया है। किसी भी काम के लिए आधार कार्ड की आवश्यकता होती है। क्योंकि आधार कार्ड आपकी पहचान से जुड़ा होता है। आज हम जानेंगे कि आधार कार्ड में मोबाइल नंबर नाम और एड्रेस को कितनी बार अपडेट किया जा सकता है। इसके साथ ही किन चीजों को आप एक बार भी अपेडट नहीं कर सकते हैं।

नई दिल्ली। आधार कार्ड आज भारत के हर एक नागरिक की पहचान है। किसी भी काम को करने के लिए आधार कार्ड की जरूरत होती ही है। चाहे कोई बैंक से जुड़ा काम करवाना हो, स्कूल एडमिशन से जुड़ा कोई काम हो या सरकारी काम हो। इन सभी में ही आधार कार्ड की जरूरत पड़ती है।

आधार कार्ड में आपकी कई निजी जानकारी शामिल होती है। कई बार हमसे गलत जानकारियां भी दर्ज हो जाती है। वहीं कई बार जानकारी पुरानी भी हो जाती है। ऐसे में यूआईडीएआई (unique Identification Authority of India) आपको अपडेट के कुछ मौके देता है।

यूआईडीएआई से मिली जानकारी के मुताबिक आधार कार्ड में दर्ज कई जानकारियों को बदला जा सकता है। हालांकि कुछ जानकारी कभी भी नहीं बदला जा सकता है।

इन चीजों को किया जा सकता है अपडेट

एड्रेस- यूआईडीएआई ने आधार कार्ड में एड्रेस अपडेट को लेकर कोई लिमिट नहीं रखी है। जिसका मतलब हुआ कि आप जितनी बार भी चाहे, आधार कार्ड में एड्रेस को बदल सकते हैं। कई लोग बड़े शहरी इलाकों में किराए में रहते हैं, ऐसे में उन्हें एड्रेस को लेकर दिक्कत आ सकती है। हालांकि भारत का कोई भी नागरिक आधार कार्ड में कितनी भी बार बदलाव कर सकता है।

मोबाइल नंबर- आधार कार्ड में मोबाइल नंबर दर्ज करना काफी जरूरी है। नहीं तो आपको भविष्य में कई दिक्कत आ सकती है। एड्रेस के अलावा आप जितनी बार भी चाहे मोबाइल नंबर को अपडेट कर सकते हैं। यूआईडीएआई ने मोबाइल नंबर अपडेट को लेकर कोई भी लिमिट नहीं रखी है। ये ध्यान रखें कि आपके आधार कार्ड से अपडेट मोबाइल नंबर ही जुड़ा हो। ताकि आपको किसी भी दिक्कत का सामना ना करना पड़े।

नाम- यूआईडीएआई से मिली जानकारी के मुताबिक आप आधार कार्ड में दर्ज नाम को दो बार ही बदल सकते हैं।

जन्मतिथि- आधार कार्ड में जन्मतिथि यानी डेट ऑफ बर्थ को भी दो बार बदला जा सकता है। इसलिए अगर आपने आधार कार्ड में गलत या अधूरी डेट ऑफ बर्थ दर्ज की है। तो इसे आसानी से बदला जा सकता है। लेकिन दो बार ही इसे बदल सकते हैं।

जेंडर- आधार कार्ड में दर्ज जेंडर को ध्यान से भरें। क्योंकि इसे आप एक बार दर्ज कर, फिर कभी नहीं अपडेट कर पाएंगे।

यूआईडीएआई द्वारा हर व्यक्ति को 12 डिजिट का एक यूनिक नंबर दिया जाता है। ये नंबर आपके आधार कार्ड में दर्ज होता है। इसके साथ ही आज आप ई-आधार कार्ड का लाभ भी उठा सकते हैं।

एस्पिरेशनल भारत ने महिला सरपंचों पर किताब जारी की, राजभर बोले- पंचायतें लड़कियों की शिक्षा पर दें जोर

19 मार्च को उत्तर प्रदेश में एस्पिरेशनल भारत कोलैबोरेटिव (पिरामल फाउंडेशन)और पंचायती राज विभाग ने महिला शिक्षा (women empowerment and education) पर एक कार्यक्रम आयोजित किया था। इस आयोजन के तहत 28 महिला सरपंचों पर एक किताब रिलीज की है। इस कार्यक्रम में राज्य के पंचायती राज मंत्री ओम प्रकाश राजभर भी शामिल हुए।

नई दिल्ली। उत्तर प्रदेश के पंचायती राज विभाग और एस्पिरेशनल भारत कोलैबोरेटिव (पिरामल फाउंडेशन) द्वारा महिला शिक्षा पर एक कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम में राज्य के पंचायती राज मंत्री भी शामिल हुए। कार्यक्रम के दौरान वे महिला शिक्षा पर जोर देते हुए दिखाई दिए।

कार्यक्रम के दौरान कॉफी टेबल बुक नामक एक किताब भी रिलीज की गई। इस बुक का टाइटल विकसित पंचायत-विकसित भारत रखा गया है। इस बुक के अंतर्गत उत्तर प्रदेश की 28 सरपंच महिलाओं की कहानियां बताई गई है।

इस किताब में बहराइच की थारू जनजाति की एक महिला सरपंच की यात्रा को भी दर्शाया गया है।

पंचायती राज मंत्री ने क्या-क्या कहा ?

इस कार्यक्रम के दौरान उन्होंने भारत के भविष्य को आकार देने में शिक्षा की भूमिका को रेखांकित किया।

राजभर ने कहा, 'यदि हम पंचायतें शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए मिलकर काम करेंगे, तो भारत 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में बड़ा कदम उठाएगा। हर बच्चा— चाहे वे बेटा हो या बेटी— को शिक्षा का अधिकार है, और खासकर लड़कियों की शिक्षा को अनदेखा नहीं किया जा सकता।ह

इसके साथ ही मंत्री ने राज्य की सात पंचायतों से आई महिला सरपंचों को सम्मानित किया।

इसके अलावा उन्होंने लड़कियों की शिक्षा में हो रही असमानता पर चिंता जताते हुए कहा कि जब एक बेटी शिक्षित होती है, तो वह दो परिवारों को सशक्त बनाती है अपने मायके और ससुराल को। इसलिए बेटियों को स्कूल भेजने के लिए प्रोत्साहित करना बेहद जरूरी है।'

एस्पिरेशनल भारत की सीईओ ने क्या बताया ?

एस्पिरेशनल भारत कोलैबोरेटिव, पिरामल फाउंडेशन के सीईओ श्री मनमोहन सिंह ने कहा कि महिला सरपंचों ने पारंपरिक रूढ़ियों को तोड़कर एक नई मिसाल कायम की है।

उन्होंने आगे कहा कि खासकर ग्रामीण इलाकों में सदियों से मर्दों का दबदबा रहा है, लेकिन इस प्रथा को इन औरतों ने अपने साहस और दृढ़ता से इसे बदल दिया है। यह किताब 'विकसित पंचायत – विकसित भारत ऐसी ही महिला नेताओं को समर्पित है।

महिला सरपंचों ने की भावनाएँ व्यक्त

इस कार्यक्रम में शामिल कई महिला सरपंचों ने भी अपनी भावनाएं व्यक्त की। उत्तर प्रदेश के जाजे देवपुर में रहने वाली सरपंच मुन्नी देवी ने कहा कि कार्यक्रम में शामिल होकर पहली बार वाराणसी से बाहर आना उनके लिए एक खास अनुभव साबित हुआ है।

बहराइच के फकीरीपुरी ग्राम पंचायत की सरपंच और थारू जनजाति की माधुरी देवी ने कहा कि सामाजिक स्वीकृति पाने के लिए उन्हें पुरुषों जैसे वस्त्र पहनने पड़े थे।

उन्होंने आगे कहा कि महिलाएं अब लीडरशिप बढ़ रही है, लेकिन हमें अभी लंबा सफर तय करना है। मंत्री जी के साथ मंच पर आना न केवल मेरे और मेरी पंच बहनों के लिए प्रेरणा है, बल्कि हर उस लड़की के लिए भी, जो विकसित भारत में योगदान देने का सपना देखती है।'

कटक में नए हवाई अड्डे पर चर्चा कटक चौद्वार लोगो की उमीद जगी

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : कटक चौद्वार के चरबटिया में नागरिक हवाई अड्डे की मांग लंबे समय से की जा रही है। हालांकि, कटक से भाजपा सांसद भर्तृहरि महताब ने एक बार फिर नागरिक उड्डयन मंत्रालय के समक्ष यह मांग रखी है। चारबतिया हवाई पट्टी पर 4.9 किलोमीटर का रनवे है, जिसका संचालन एआरसी करता है।जो कि भुवनेश्वर स्थित बीजू पटनायक अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे (बीपीआईए) के रनवे की लंबाई से दोगुनी है। परिणामस्वरूप, यह बड़े विमानों को संभालने में पूरी तरह सक्षम है। रक्षा के क्षेत्र में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। यह बीजू पटनायक अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से सिर्फ 33 किलोमीटर दूर स्थित है। सांसद भर्तृहरि महताब ने फरवरी 2025 के अपने प्रस्ताव में चरबतिया में हवाई अड्डे की आवश्यकता की ओर ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने बताया कि नई राजधानी रिंग रोड, जो हाल ही में औद्योगिक विकास से गुजरी है और राजधानी के निकट है, का निर्माण कार्य शुरू हो गया है। उन्होंने कहा कि यहां अधिक माल संभालने में कोई समस्या नहीं है। दूसरी ओर, 1 अप्रैल से भुवनेश्वर से गोवा के लिए उड़ानें शुरू होंगी। आप आसानी से यात्रा कर सकते हैं। पर्यटन और व्यापार के क्षेत्र में भी नये अवसर पैदा होंगे। मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने इसके लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को धन्यवाद दिया है।

पलास के फुल भी बहुत ही सुंदर और आकर्षक होते हैं

पलास एक सुंदर और आकर्षक पेड़ है, जो अपने खूबसूरत फूलों और पत्तियों के लिए जाना जाता है। पलास के फुल भी बहुत ही सुंदर और आकर्षक होते हैं। ये फूल गहरे लाल या गुलाबी रंग के होते हैं और इनमें पांच पंखुड़ियाँ होती हैं। पलास के फूलों की खुशबू बहुत ही मोहक होती है और ये फूल पेड़ पर मार्च से मई तक खिलते हैं।

पलास के पत्ते बड़े और चौड़े होते हैं, जो हरे रंग के होते हैं। ये पत्ते पेड़ की शाखाओं पर लगे होते हैं और इनमें एक विशेष प्रकार की सुगंध होती है।

पलास का तना मजबूत और सीधा होता है, जो 10 से 15 मीटर तक ऊंचा हो सकता है। तने का रंग भूरा या काला होता है और इसमें कई शाखाएँ निकलती हैं। पलास के फल छोटे और गोल होते हैं, जो जून से अगस्त तक पकते हैं। फल का रंग हरा या पीला होता है और इसमें कई बीज होते हैं।

पलास का महत्व न केवल इसकी सुंदरता के लिए है, बल्कि इसके औषधीय गुणों के लिए भी है। पलास के फूलों और पत्तियों का उपयोग कई बीमारियों के इलाज में किया जाता है।

पलास एक पवित्र और सुंदर पेड़ है, जो भारतीय संस्कृति में बहुत महत्व रखता है।

पलास का पेड़ हिंदू धर्म में बहुत पवित्र माना जाता है। यह पेड़ भगवान विष्णु और भगवान कृष्ण के साथ जुड़ा हुआ है। पलास के पेड़ की पूजा करने से व्यक्ति को आध्यात्मिक शक्ति और शांति मिलती है।

पलास के पेड़ के विभिन्न भागों में औषधीय गुण होते हैं। इसके फूलों का उपयोग कई बीमारियों के इलाज में किया जाता है, जैसे कि सर्दी, खांसी और बुखार। इसके अलावा, पलास के पत्तियों का उपयोग त्वचा की समस्याओं के इलाज में किया जाता है।

पलास का पेड़ पर्यावरण के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यह पेड़ वायु प्रदूषण को कम करने में मदद करता है और जलवायु परिवर्तन को नियंत्रित करने में भी मदद करता है। इसके अलावा, पलास के पेड़ की जड़ें मिट्टी को स्थिर करने में मदद करती हैं और भूमि क्षरण को रोकने में भी मदद करती हैं।

पलास का पेड़ भारतीय संस्कृति में बहुत महत्वपूर्ण है। यह पेड़ कई त्योहारों और समारोहों में उपयोग किया जाता है, जैसे कि होली और दिवाली। इसके अलावा, पलास के पेड़ की पूजा करने से व्यक्ति को आध्यात्मिक शक्ति और शांति मिलती है।

डॉ. मुश्ताक अहमद

23 मार्च : शहीदी दिवस पर विशेष

भगतसिंह था सबका दुलारा ...!

जब था चारों ओर अंधियारा,
भगतसिंह था सबका दुलारा।
रखता था क्रांति की मशाल,
उसका दिल हैं बहुत विशाल।
सामने खड़ा संकट विकराल,
अंग्रेज थे अत्याचारी टकसाल।

जब था चारों ओर अंधियारा,
भगतसिंह था सबका दुलारा।
बाबा रणधीरसिंह खूब समझाएं,
ये ईश्वर पर प्रश्न चिन्ह लगाएं।
अस्तित्व पर यकीन कैसे करें,
भगत अहंकार दाग क्यों झरें।

जब था चारों ओर अंधियारा,
भगतसिंह था सबका दुलारा।
अस्तित्व नकार आगे जा रहा,
आजादी का ख्वाब न पा रहा।
कैसे करू विश्वास धार बोथरी,
इंकलाब हैं अग्नि कालकोठरी।

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)
इन्दौर-452011 (मध्यप्रदेश)

एस पी लुनायत ने ब्राउन शुगर व्यवसायी हत्या के अपराधियों को भेजा जेल

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड

जमशेदपुर। सरायकेला के युवा पुलिस कप्तान मुकेश लुनायत ने पुनः धमाका किया है, नशे के कारोबारी अफसर अली हत्याकांड मे पर्दा उठाते हुए दो अपराधियों को गिरफ्तार किया है ।

सनद रहे कि आदित्यपुर मुस्लिम वस्ती विगत कुछ वर्षों से ब्राउन शुगर कारोबार का गढ़ के रूप में विकसित हुआ है ।जहां वर्चस्व एवं प्रतिस्पर्धा की लड़ाई ने इसे झारखंड का चर्चित जगह बना दिया है , लघु उद्योग के पश्चात । आज सरायकेला खरसावां जिला मुख्यालय स्थित अपने कार्यालय में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस का आयोजन कर एस पी ने विस्तार से जानकारी दी ।

गम्हरिया थाना अंतर्गत सितारामपुर डैम के किनारे 24 मार्च को एक व्यक्ति की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी,जिसकी पहचान अफसर अली पिता स्व0 शौकत अली पता आदित्य आदित्यपुर के रूप में हुईं थी ।मृतक की पुत्री के द्वारा दिये गये लिखित आवेदन के आधार पर गम्हरिया थाना कांड सं0-30/2025, दिनांक- 15.03.2025, धारा-103(1)/61(2)/238(A)/3(5)B. N.S-2023 एवं 27 आर्म्स एक्ट दर्ज कर अनुसंधान प्रारंभ किया गया था ।एस पी मुकेश लुनायत ने अपराधियों की गिरफ्तारी हेतु अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी, सरायकेला के नेतृत्व में एक एस आई टी टीम का गठन किया गया था । गठित टीम द्वारा जिन अपराधी धराये उनमें 1. अब्दुल करीम उर्फ करीम हुसैन, उम्र- करीब 25 वर्ष, 2. मो0 फकरे आलम उर्फ राजु, उम्र- करीब 34 वर्ष,

पूछताछ के क्रम मे गिरफ्तार अपराधकर्मियों के निशानदेही पर काण्ड में प्रयुक्त एक लोडेड पिस्टल, जिंदा गोली एवं मृतक का मोबाइल फोन को बरामद किया गया है । उधर काण्ड में संलिप्त अन्य अपराधकर्मी की गिरफ्तारी हेतु छापेमारी की जा रही है ।

जो सामान बरामद हुए उसमें

घटना मे प्रयुक्त लोडेड पिस्टल- 01 (एक) मैगजीन सहित , 7.65 MM का जिंदा गोली- 02 (दो) , 7.65 MM का खोखा - 02 (दो) , प्राथमिकी अभियुक्त अबदुल करीम के पास से मृतक का एक मोबाइल फोन बरामद हुए ।

पुलिस ने बताया कि अब्दुल करीम उर्फ करीम हुसैन, उम्र- करीब 25 वर्ष, पे0- मुजाहिर हुसैन, सा0 – आदित्यपुर मुस्लिम बस्ती एच रोड़, थाना- आदित्यपुर, जिला- सरायकेला-खरसावां का रहने वाला । मो0 फकरे आलम उर्फ राजु, उम्र- करीब 34 वर्ष, पे0- मो0 सौकत अली, सा0- बालीगुमा मस्जिद के पास, थाना-सरायकेला, जिला- सरायकेला-खरसावां निवासी हैं ।

गिरफ्तार अपराधकर्मी अब्दुल करीम उर्फ करीम हुसैन का अपराधिक इतिहासः- (01) आदित्यपुर थाना कांड सं0 – 205/2023, दिनांक – 02.07.2023, धारा – 302/34/109/120बी/201 भा0द0वि0 एवं धारा – 25(1-b)a/26/35 आर्म्स एक्ट 1959.(02) आदित्यपुर थाना कांड सं0 – 119/2024, दिनांक – 18.04.2024, धारा – 341/323/307/34/504/506 भा0द0वि0 एवं धारा – 27 आर्म्स एक्ट 1959

गिरफ्तार अपराधकर्मी मो0 फकरे आलम उर्फ राजु का अपराधिक इतिहासः- (01) सरायकेला थाना कांड सं0 – 135/2023, दिनांक – 29.10.2023, धारा – 380/511/34 भा0द0वि0 विभिन्न थानों में दर्ज है ।

नवीन ने किया परिसीमन का विरोध

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: बीजद अध्यक्ष नवीन पटनायक ने परिसीमन या सीमा पुनर्निर्धारण के लिए केंद्र सरकार के दृष्टिकोण का विरोध किया है। निवान ने जनसंख्या के आधार पर परिसीमन का विरोध करते हुए एक वीडियो संदेश जारी किया है। नवीन ने कहा कि यह ओडिशा जैसे राज्य के साथ अन्याय है, जिसने जनसंख्या नियंत्रण में अग्रणी भूमिका निभाई है।हालाँकि, अब केंद्र सरकार ने जनसंख्या के आधार पर संसदीय निर्वाचन क्षेत्रों की सीमाओं को पुनः निर्धारित करने का प्रस्ताव दिया है। जिसका वर्तमान में विभिन्न राज्यों, विशेषकर गैर-भाजपा शासित राज्यों द्वारा विरोध किया जा रहा है। इस बीच, तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन ने चेन्नई में एक बैठक बुलाई है। जिसमें विभिन्न गैर-भाजपा शासित राज्यों के मुख्यमंत्रियों और कांग्रेस समेत अन्य दलों के नेताओं ने भाग लिया है। इस बैठक में कांग्रेस अध्यक्ष के साथ हमारे राज्य के दो बीजद नेता भी भाग ले रहे हैं। जहां नवीन ने एक वीडियो संदेश जारी कर इस परिसीमन का विरोध किया है।

नवीन ने कहा कि जनसंख्या नियंत्रण देश के विकास के लिए महत्वपूर्ण एजेंडा है। हालाँकि, सीमाओं के निर्धारण के लिए जनसंख्या एकमात्र आधार नहीं होनी चाहिए। जनसंख्या के आधार पर सीटों का निर्धारण ओडिशा, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश जैसे राज्यों के साथ अन्याय होगा, जिन्होंने अपनी जनसंख्या कम करने की दिशा में काम किया है। ओडिशा ने जनसंख्या नियंत्रण में अग्रणी भूमिका निभाई है। यदि संसद और विधानसभा सीटों का परिसीमन कम हो जाता है, तो इससे ओडिशा के लोगों के हितों को नुकसान होगा। नवीन ने सुझाव दिया है कि केंद्र सरकार इस संबंध में सभी राजनीतिक दलों के साथ बैठक करे और विस्तृत चर्चा कर निर्णय ले।

जातिय दम्भ और कटुता बढ़ाने वाले गानों पर भी लगे रोक : रजत कल्सन

सहित उत्तर भारत में जातिय हिंसा को बढ़ावा देने में जाति विशेष के महिमामंडन वाले गाने भी जिम्मेदार : कल्सन
जातिय दम्भ, भेदभाव व नफरत फैलाने वाले गानों को युट्यूब व अन्य सोशल मीडिया पर रिपोर्ट करे जागरूक जनता : रजत कल्सन

चण्डीगढ़/हिसार/हांसी,

हाल में ही हरियाणा सरकार ने गुंडागर्दी व गन कल्चर को बढ़ावा देने वाले गानों पर बैन लगाने का काम किया है। इस पर बात करते हुए नेशनल एलायंस फ़ॉर दलित ह्यूमन राइट्स के संयोजक अधिवक्ता रजत कल्सन ने एक बयान जारी कर कहा कि हरियाणा सरकार का यह कदम स्वागत योग्य है उन्होंने हरियाणा सरकार से इसी संदर्भ में मांग की है कि हरियाणा राज्य में एक जाति विशेष का महिमामंडन करने तथा जातीय घमंड तथा नफरत पैदा करने वाले गाने पिछले काफी समय से प्रचलन में है जो अक्सर ग्रामीण क्षेत्रों में जातिय हिंसा का कारण बनते हैं तथा इन गानों से समाज में जाति का जहर भी फैल रहा है। इन गानों पर भी तुरंत बैन लगाया जाना चाहिए

कल्सन ने कहा कि यह एक विचारणीय मुद्दा है। जातीय दम्भ और कटुता फैलाने वाले गानों पर रोक लगाने की मांग सामाजिक सौहार्द बनाए रखने के लिए जरूरी है । उन्होंने कहा ऐसे गाने नफरत, हिंसा और आक्रामकता तथा दो समुदायों के बीच तनाव को बढ़ावा देते हैं, इसलिये उन पर कानूनी लगाम लगाना जरूरी है।

कल्सन ने कहा की हालांकि भारतीय संविधान का अनुच्छेद 19 हमें अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने की आजादी देता है लेकिन इस तरह की जातिय दम्भ भरे गाने केवल एक जाति विशेष को ऊंचा दिखाने तथा बाकि जातियों को नीचा दिखाने की प्रवृत्ति के हैं जो भारतीय संविधान की मूल भावना के विरुद्ध है।

कल्सन ने कहा कि भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में, जहां जाति एक संवेदनशील विषय है, ऐसे गानों पर रोक लगाने की मांग समझ में आती है। कानूनी तौर पर, भारतीय दंड संहिता की धारा 153ए और 295ए पहले से ही उन सामग्रियों पर प्रतिबंध लगाती हैं जो धार्मिक, जातिगत या सामुदायिक नफरत को बढ़ावा देती हैं। अगर कोई गाना इन सीमाओं को पार करता है, तो उस पर कानूनी कार्रवाई संभव है।

कल्सन ने कहा हरियाणा में जातीय नफरत के आधार पर हो रही हिंसा पिछले 15 सालों से चरम पर है तथा हरियाणा में मिर्चपुर कांड, भगाना कांड, भाटला कांड, डाबड़ा गैंगरेप केस कांड जैसे सैकड़ो कांड दलितों के साथ अंजाम दिए गए हैं तथा इस तरह के माहौल में जातीय नफरत और भेदभाव को बढ़ावा देने वाले गाने आग में घी डालने का काम कर सकते हैं।

कल्सन ने हरियाणा सरकार से मांग की है कि तुरंत प्रभाव से इस तरह के गीतों व गानों पर रोक लगाने के लिए हरियाणा सरकार विधानसभा में एक बिल लेकर आए तथा इन गानों पर रोक के लिए फोरी तौर पर एक अध्यादेश जारी करें। कल्सन ने कहा कि प्रदेश की आम जनता खास तौर पर एससी एसटी समाज के लोगों से अपील की जाती है कि वे वैमनस्य तथा भेदभाव को बढ़ावा देने वाले इन गानों को युटुब, फेसबुक, इंस्टाग्राम व अन्य सोशल मीडिया साइट्स पर इन गानों को जातीय हिंसा के तौर पर रिपोर्ट करें तथा इन पर बैन लगाने की सिफारिश करें।

शादी के बाद करियर: उड़ान या उलझन?

परिवारों को यह समझना होगा कि शादी का मतलब महिलाओं के करियर का अंत नहीं होता। पुरुषों को घर और बच्चों की जिम्मेदारी में बराबर भागीदारी निभानी चाहिए। कंपनियों को महिलाओं के लिए अधिक फ्लेक्सिबल जॉब ऑप्शंस देने चाहिए। करियर और शादी को विरोधी ध्रुवों की तरह देखने की बजाय उन्हें साथ ले चलने की जरूरत है। पुरुषों को भी घर और बच्चों की जिम्मेदारी में बराबर भागीदार बनना चाहिए। कंपनियों को फ्लेक्सिबल वर्किंग ऑप्शंस देने चाहिए, ताकि महिलाएँ आसानी से दोनों भूमिकाएँ निभा सकें।

सोचिए, एक लड़की ने अपने करियर के लिए दिन-रात मेहनत की, डिग्रियाँ लीं, अनुभव जुटाया और फिर... शादी हुई ! और शादी के बाद ? अक्सर वही होता है, जो पीढ़ियों से होता आया है—करियर या तो ठहर जाता है या धीरे-धीरे गुमनाम हो जाता है। हमारे समाज में शादी को महिलाओं के जीवन का ₹मील का पत्थर₹ माना जाता है। लेकिन सवाल यह है कि यह मील का पत्थर करियर की सड़क को आगे बढ़ाने का काम करता है या उस पर एक बड़ा ब्रेक लगा देता है ?

करियर या शादी: क्या वाकई कोई चुनाव होना चाहिए ?

हमारे समाज में शादी को महिलाओं के जीवन का ₹टर्निंग पॉइंट₹ माना जाता है। लेकिन सवाल यह है कि यह टर्निंग पॉइंट आगे बढ़ाने के लिए होता है या पीछे धकेलने के लिए ? कई बार परिवार, समाज और खुद महिलाओं की भी यह सोच बन जाती है कि शादी के बाद करियर प्राथमिकता नहीं रह जाता। कई बार महिलाओं को यह सोचने पर मजबूर कर दिया जाता है कि करियर और शादी साथ नहीं चल सकते। परिवार, समाज और कभी-कभी खुद महिलाएँ भी मान लेती हैं कि शादी के बाद करियर कम प्राथमिकता वाला हो जाता है। क्या यह सही है ? या यह सिर्फ एक सामाजिक धारणा है जिसे बदलने की जरूरत है ?

अब तुम्हें घर संभालना है!

कितनी बार हमने सुना है कि शादी के बाद महिलाएँ करियर छोड़कर ₹घर संभालने₹ में लग जाती हैं ? अगर शादी से पहले वे एक शानदार कॉर्पोरेट जॉब में थीं, तो शादी के बाद यह सवाल उठता है—₹अब ऑफिस और घर दोनों कैसे मैनेज करोगी ?₹ और इसका हल अक्सर यही निकलता है—₹करियर छोड़ दो !₹ शादी के बाद परिवार और समाज अक्सर महिलाओं से यह अपेक्षा करता है कि वे करियर की बजाय घरेलू जिम्मेदारियों को प्राथमिकता दें। यह सोच क्यों है ? क्या पुरुषों से भी यही अपेक्षा की जाती है ?

सपनों की 'सेक्रिफाइस सेल': शादी स्पेशल डिस्काउंट!

महिलाओं के सपने और करियर किसी 'सेल' में रखे सामान की तरह डिस्काउंट पर चले जाते हैं—₹तुम्हारा पैशन बाद में, पहले परिवार !₹ ₹पति की जॉब ज्यादा जरूरी है, तुम्हारी तो बस टाइमपास थी !₹ ₹घर पर रहोगी तो बच्चों को बेहतर परवरिश मिलेगी !₹

मॉमी ट्रैक: करियर का ब्रेक या परमानेंट स्टॉप ?

मातृत्व आते ही महिलाओं के करियर को ₹मॉमी ट्रैक₹ पर डाल दिया जाता है। यानी, प्रोमोशन की रेस से बाहर, साइड रोल में डाल दिया जाता है। वर्कप्लेस पर भी उन्हें कम महत्व दिया जाता है, क्योंकि माना जाता है कि अब वे ₹फुल टाइम करियर₹ के लिए उतनी प्रतिबद्ध नहीं रहेंगी। मातृत्व के बाद कई महिलाओं को नौकरी छोड़ने के लिए मजबूर किया जाता है, जबकि पुरुषों के करियर पर इसका असर नहीं पड़ता। क्या यह लैंगिक असमानता का एक रूप नहीं है ? क्या कंपनियाँ अधिक लचीली नीतियाँ अपनाकर महिलाओं को सपोर्ट कर सकती हैं ?

-प्रियंका सौरभ, रिसर्च स्कॉलर इन पॉलिटिकल साइंस, हरियाणा

क्या शादी के बाद पुरुषों से पूछा जाता है—"अब करियर का क्या करोगे ?"

नहीं ना ? यही सवाल अगर महिलाओं से पूछा जाता है, तो यह खुद ही बता देता है कि समस्या कहाँ है। शादी और करियर को एक साथ संतुलित करने वाली महिलाओं के उदाहरण भी मौजूद हैं। क्या यह संभव नहीं कि शादी करियर के लिए नया सहयोग और समर्थन लेकर आए ? कई कपल्स मिलकर एक-दूसरे के करियर को आगे बढ़ाने का काम करते हैं। क्या यह एक नए नजरिए की जरूरत नहीं है ?

ग्रामीण महिलाओं का करियर: चुनौतियाँ और अवसर

ग्रामीण भारत में शादी के बाद महिलाओं के करियर की स्थिति और भी चुनौतीपूर्ण हो जाती है। पारंपरिक सोच, शिक्षा की कमी और अवसरों की अनुपलब्धता के कारण कई महिलाएँ शादी के बाद आर्थिक रूप से स्वतंत्र नहीं रह पातीं। हालाँकि, सेल्फ हेल्प ग्रुप (SHG), ग्रामीण उद्यमिता और सरकारी योजनाओं के माध्यम से अब बदलाव आ रहा है। उदाहरण के लिए: सखी मंडल और स्वयं सहायता समूह के माध्यम से महिलाएँ छोटे व्यवसाय चला रही हैं। प्रधानमंत्री मुद्रा योजना से कई महिलाओं ने अपने स्वयं के व्यवसाय शुरू किए। डिजिटल इंडिया पहल के कारण अब महिलाएँ ऑनलाइन बिजनेस कर रही हैं। डेयरी, सिलाई, कढ़ाई, बागवानी और कृषि आधारित व्यवसायों में महिलाएँ आगे बढ़ रही हैं।

महिलाओं के करियर पर शादी का प्रभाव

रिपोर्ट के अनुसार, भारत में सिर्फ 20% महिलाएँ कार्यबल में बनी रहती हैं, जबकि स्नातक स्तर पर उनकी भागीदारी पुरुषों के बराबर होती है। शादी के बाद लगभग 47% भारतीय महिलाएँ अपना करियर छोड़ देती हैं। शादीशुदा महिलाओं की कमाई 15-20% तक कम हो जाती है। 85% भारतीय महिलाओं का मानना है कि शादी और बच्चों के कारण उन्हें करियर में बाधाएँ झेलनी पड़ती हैं। भारत में 30 वर्ष से ऊपर की महिलाओं की कार्यबल भागीदारी सिर्फ 18% रह जाती है, जबकि पुरुषों के लिए यह संख्या 78% है।

प्रेरणादायक केस स्टडीज़

इंद्रा नूयी शादीशुदा होने के बावजूद अपने करियर को बनाए रखने में सफल रहीं। उन्होंने अपनी किताब ₹My Life in Full₹ में बताया है कि कैसे उन्होंने अपने परिवार और करियर को संतुलित किया, और कैसे कंपनियों को महिलाओं के लिए सहायक कार्यस्थल बनाने की ज़रूरत है। किरन मजूमदार शॉ (Biocon की संस्थापक) ने शादी और समाज की अपेक्षाओं के बावजूद उन्होंने अपनी बायोटेक कंपनी खड़ी की। उनके अनुसार, परिवार से समर्थन मिलने पर शादी के बाद भी महिलाएँ सफलतापूर्वक अपने करियर को आगे बढ़ा सकती हैं। टेनिस स्टार सेरेना विलियम्स ने मातृत्व के बाद भी खेल में वापसी की और कई खिताब जीते। उन्होंने इस मिथक को तोड़ा कि माँ बनने के बाद करियर को छोड़ना ही एकमात्र विकल्प है।

तो क्या हल है ?

परिवारों को यह समझना होगा कि शादी का मतलब महिलाओं के करियर का अंत नहीं होता। पुरुषों को घर और बच्चों की जिम्मेदारी में बराबर भागीदारी निभानी चाहिए। कंपनियों को महिलाओं के लिए अधिक फ्लेक्सिबल जॉब ऑप्शंस देने चाहिए। करियर और शादी को विरोधी ध्रुवों की तरह देखने की बजाय उन्हें साथ ले चलने की जरूरत है। पुरुषों को भी घर और बच्चों की जिम्मेदारी में बराबर भागीदार बनना चाहिए। कंपनियों को फ्लेक्सिबल वर्किंग ऑप्शंस देने चाहिए, ताकि महिलाएँ आसानी से दोनों भूमिकाएँ निभा सकें।

शादी एक नया चैप्टर हो सकती है, ₹दी एंड₹ नहीं!

शादी का मतलब किसी भी महिला के करियर का ₹दी एंड₹ नहीं होना चाहिए। बल्कि यह एक ऐसा पड़ाव होना चाहिए जहाँ से वह अपनी निजी और प्रोफेशनल ज़िंदगी को संतुलित तरीके से आगे बढ़ा सके। अगली बार जब कोई कहे—"शादी के बाद करियर का क्या ?₹ तो जवाब होना चाहिए—"जो पहले था, वही रहेगा—बस और बेहतर !"

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023